CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मगही भाषा व्याकरण

४५·४४३
९८९ म

डा. चन्देश्वर साह

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मगही भाषा व्याकरण

लेखक

डा. चन्देश्वर साह

प्रकाशक

मगही भाषा–साहित्य प्रतिष्ठान

कोटेश्वर, काठमाडौं, नेपाल

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सर्वाधिकार : लेखकाधिन

प्रकासक : मगही भाषा-साहित्य प्रतिष्ठान
कोटेश्वर, काठमाडौं, नेपाल ।

संयोजक : भरत प्रसाद महतो
अध्यक्ष
नेपाल पिछडावर्ग (OBC) महासंघ

सम्मति : डा. राम प्रसाद सिंह
पूर्व अध्यक्ष
मगही अकादमी विहार, पटना

प्रथम संस्करण : २०६५ वि.सं.

प्रति : ५०००

कभर डिजाइन : यूनि ग्राफिक्स
अनामनगर, फोनः ०१ ६८१२१५२

कम्प्युटर : जनक तिमिल्सिना

मुद्रक : यूनिटेक प्रिन्टर्स
काठमाडौं, फोनः ०१-२३८०८१२

मूल्य : रु. ५००/-

ISBN : 978-9937-2-0964-9

काठमाडौं, नेपाल

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भूमिका

मगही भाषा एगो अइसन भाषा हे जेकरा से विभिन्न भाषा के निर्माण भेल हे बाकि सरकारी काम में एह भाषा के प्रयोग न भेला से एकर मौखिक रूप जेतना विकसित हे ओतना लिखित रूप के विकास न हो सकल हे। अचरज के बात तो ई हे कि एह भाषा के लिखित रूप के अभाव से लोग जान भी न सकइत हे कि ऊ मगही भाषा बोल रहल हे। केउ एकरा देहाती कह रहल हे, केऊ ठेठी कह रहल हे। उहे देहाती आउ ठेठी कह के मगही भाषा बोलेवला लोग के उनकर बोली के पहिचान करावे खातिर आउ उनकर भाषा में शुद्धता लावे खातिर ई प्रयास कयल गेल हे।

एह प्रयास के पहिला डेग में मगही भाषा-साहित्य प्रतिष्ठान के गठन भरत प्रसाद महतो के संरक्षकत्व आउ डा. चन्देश्वर शाह के अध्यक्षता में भेल हल। उहे प्रतिष्ठान के क्रियाकलाप अन्तरगत के ई एगो प्रयास हे।

–लेखक

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

समर्पण

जे अपन भाषा के नाम न जनइत हे, केऊ देहाती कहइत हे, केऊ ठेठी कहइत हे, उहे मगही भाषा बोलेवला आम नागरिक के ई पुस्तक समर्पण करइत ही ।

– लेखक

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विषय सूची

		पृष्ठ
१.	भाषा	१
२.	वर्ण	३
३	सव्द	६
४.	संज्ञा	९
५.	सर्वनाम	१४
६.	विसेषण	२०
७.	क्रियापद	२५
८.	अव्यय	२८
९.	लिंग	३१
१०.	वचन	३४
११.	आदरार्थी	३६
१२.	सव्द रचना	३८
१३.	उपसर्ग	४०
१४.	प्रत्यय	४८
१५.	समास	५२
१६.	द्वित्व	५८
१७.	सन्धि	६०
१८.	विराम चिन्ह	६३
१९.	धातु आउ क्रिया	६८

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

२०. काल ७५

२१. क्रिया के भाव ७९

२२. कारक ८३

२३. प्रेरणार्थक क्रिया ८८

२४. करण आउ अकरण ८९

२५. वाच्य ९१

२६. पदसंगति ९७

२७. वाक्य १००

२८. कथन १०५

२९. विसेष सब्द १०८

३०. विविध अर्थयुक्त सब्द ११८

३१. छन्द १२७

३२. मुहावरा १२९

३३. कहउतिया १३४

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भाषा

हमनी अपन मन के भाव वोली के माध्यम से दोसरा के कहइत ही आउ वोली के माध्यम से दोसरा के कहल वात सुनके ओकर मन के विचार वुझइत ही, उहे भाषा कहल जा हे । ओइसे एकर अलावा भी स्पर्श कऽ के, इसारा कके, झन्डा देखाके, वत्ती देखाके चाहे सिटी वजाके, खोखी कके इया अइसने आउरो तरीका से भी अपन मन के बात दोसरा तकले पहुँचावल जा सक हे वाँकि एकरा सव के भाषा न कहल जा सक हे । काहेसेकि एकर सवके कउनो निश्चित परम्परा के विकास न भेल हे । इहे कारण से लोक के वोली के ही विचार आउ भावना के अभिव्यक्ति के सर्वसम्मत साधन मानल जा हे । भाषा के प्रयोग के समय में जेतना भी आवाज लोक के मुँह से निकलइत हे ऊ सव प्रतीक के रुप मे रहइत हे । किताव कहला से वास्तव में किताव मुँह से न निकलइत हे वलुक किताव के उच्चारण से निकलेओला आवाज किताव के प्रतीक हे । उहे से भाषा वाक् प्रतीक कहल जा हे । दोसरा वात इहो हे कि कउनो वस्तु आउ ओकर नाम में कउनो भी तरह के तार्किक इया वैज्ञानिक सम्वन्ध भी न रह हे । लोक अपना से अग्रज लोग से जउन चीज के जइसन नाम सुनइत हे इया सिखइत हे ओकरा उहे वस्तु समझ लइत हे । ऐह वात पर कउनो तरह के शंका करेके मतलव न रखइत हे । साथे भाषा परम्परा से एक पुस्ता से दोसरा पुस्ता में घुसकइत आ रहल हे । एके समय में भाषा के निर्माण न हो सकइत हे । उहे से भाषा परम्परागत वस्तु मानल जाइत हे ।

भाषा के प्रयोग मे निकलेओला ध्वनी, ध्वनी के समूह से वनेओला सव्द आऊ सव्दन के संयोजन से वनेओला वाक्य के संरचना के खास व्यवस्था रहइत हे, इहे व्यवस्था के ज्ञान देवेओला शास्त्र व्याकरण कहल जाइत हे ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

संसार में अनेकन भाषा प्रचलन में हे । सब भाषा के ध्वनी, सब्द आउ वाक्य संयोजन के तरीका में एकरुपता न रहइत हे । जइसे:-

मगही	हम (कर्ता)	भात (कर्म)	खइली (क्रियापद)
अंग्रेजी	I (कर्ता)	ate (क्रियापद)	rice (कर्म)

इहे कारण से सब भाषा के अपन अलग व्याकरण होइत हे आउ जउन भाषा के विषय में ज्ञान आवश्यक होइत हे तउन भाषा के व्याकरण से ही असल ज्ञान मिल सकइत हें । काहेसेकि व्याकरण से भाषा के शुद्ध रुप से वोले आउ लेखे के ज्ञान मिलइत हे ।

अभ्यास

१. भाषा केकरा कहल जाइत हे ?

२. अपना मन के बात कउन कउन माध्यम से प्रकट कयल जा सकइत हे ?

३. भाषा के कउन कारण से वाक् प्रतीक कहल जाइत हे ?

४. भाषा के परम्परागत वस्तु कउन कारण से मानल जाइत हे ?

५. व्याकरण केकरा कहल जाइत हे ?

६. कउन कारण से सव भाषा के व्याकरण अलग अलग होइत हे ?

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वर्ण

साधारण वोली में कउनो भी किसिम के आवाज ध्वनि कहल जाइत हे बाकि व्याकरण अन्तरगत ओइसने आवाज के ध्वनी (Phone) कहल जाइत हे जेकरा लोक कण्ठ, तारु, ठोढ आदि उच्चारण अंग से भाषा प्रयोग ला उच्चारण करइत हे। अइसने ध्वनि के बोध करावेओला भाषा के सवसे छोटका एकाई वर्ण (Phoneme) कहल जाइत हे। वर्ण के आउर खण्ड न हो सकइत हे। एकरा अक्षर भी कहल जाइत हे।

भाषा के ध्वनि दूगो तरीका से दोसरा के सोझा प्रस्तुत कयल जाइत हे:-

(१) लिखित रुप (२) मौखिक रुप

वर्ण के क्रमवद्ध समूह के वर्णमाला कहल जाइत हे। मगही वर्णमाला भी दोसरा आर्यभाषा जइसेही संस्कृत वर्णमाला पर आधारित हे। मगही वर्णमाला के सरुप अइसन हे:-

अ	आ	इ	ई	उ	ऊ		
ए	ऐ	ओ	औ	अं	अः		
क	ख	ग	घ	ङ			
च	छ	ज	झ	ञ			
ट	ठ	ड	ढ	ण			
त	थ	द	ध	न			
प	फ	व	भ	म			
य	र	ल	व	श	ष	स	ह
		क्ष	त्र	ज्ञ			

वर्णमाला में रहल कुछ वर्ण के उच्चारण करत वेर सांस के प्रवाह में कउनो तरह के अवरोध न होइत हे वाँकि कुछ वर्ण के. उच्चारण में

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सांस के प्रवाह मे वाधा उत्पन्न होइत हे । इहे आधार से वर्ण के दू रुप होइत हे:-

(क) स्वर (ख) व्यंजन

(क) स्वर (Vowel)

जउन वर्ण के उच्चारण में दोसरा वर्ण के सहायता के जरुरत न परइत हे उहे स्वर वर्ण कहल जाइत हे । जइसे:-

अ आ इ ई उ ऊ ए ऐ ओ
औ अं अः

ऐह में अ, आ, इ, उ, ए, ओ शुद्ध स्वर आउ ई, ऐ, औ संयुक्त स्वर हे ओइसेही अं, अः (अनुस्वार आउ विसर्ग) मात्रा जइसन हे एकर अलग से प्रयोग न हो सकइत हे उहे कारण से एकरा स्वर चाहे व्यंजन के साथ ही प्रयोग होइत हे ।

(ख) व्यंजन (Consonant)

जउन वर्ण के उच्चारण में स्वर वर्ण के सहयोग लेहल जाइत हे उहे व्यंजन कहल जाइत हे । वर्णमाला के सभी वर्ण में से स्वर वर्ण के छोडके आउर सभी व्यंजन वर्ण हे ।

व्यंजन वर्ण के अक्षर के विभिन्न वर्ग में बाँटल गेल हे:-

क वर्ग	-	क	ख	ग	घ	ङ
च वर्ग	-	च	छ	ज	झ	ञ
ट वर्ग	-	ट	ठ	ड	ढ	ण
त वर्ग	-	त	थ	द	ध	न
प वर्ग	-	प	फ	व	भ	म
अंतस्थ	-	य	र	ल	व	
उष्म	-	श	ष	स	ह	
संयुक्त	-	क्ष	त्र	ज्ञ		

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वर्ण के उच्चारण स्थान

वर्ण के उच्चारण कण्ठ, तारु, मुर्धा, दांत, ठोढ, नाक से होइत हे। इहे आधार से वर्ण के विभिन्न नाम देल गेल हे।

	उच्चारण स्थान	वर्ण
कंठव्य	कण्ठ	अ आ क ख ग घ ह
अ:		
तालव्य	तारु	इ ई च छ ज झ य
श		
मूर्धन्य	मूर्धा	ट ठ ड ढ ष
दन्त्य	दांत	त थ द ध र ल स
ओठ्य	ठोढ	उ ऊ प फ व भ
नासिक	दांत, ठोढ, आउ नाक	ङ ञ ण न म अं
कण्ठ तालव्य	कण्ठ आउ तारु	ए ऐ
कण्ठ ओठ्य	कण्ठ आउ ठोढ	ओ औ
दन्तव्य	दांत आउ ठोढ	व

अभ्यास

१. व्याकरण में ध्वनि से की तात्पर्य हे ?

२. वर्ण केकरा कहल जाइत हे ?

३. स्वर आउ व्यंजन वर्ण मे की अन्तर हे ?

४ मगही भाषा के वर्ण के संख्या केतना हे ?

५. संयुक्त व्यंजन कौन कौन हे ?

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सब्द

स्वतन्त्र रुप में प्रयोग होवेओला भाषा के न्यूनतम अर्थपूर्ण एकाई के सव्द (Word) कहल जाइत हे ।

सौदागर घर अतइ ।

वाक्य में प्रयोग भेल चाहे प्रंयोग हो सकेओला सव्द के पद भी कहल जाइत हे । पद परिचय ला सव्द के भेद-उपभेद, लिङ्ग, वचन, कारक आदि के परिचय भी आवश्यक होइत हे ।

भाषा में सव्द के संख्या निश्चित न रहइत हे । हरेक भाषा में आवश्यकता अनुसार नयाँ नयाँ सव्द के आगमन हमेसा होइत रहइत हे । भाषा में प्रयोग में आवेओला सवहे सव्द मिलके भाषा के सव्द भण्डार बनइत हे । इहे भण्डार के संग्रह सव्द-कोष कहल जाइत हे ।

भाषा में सव्द के प्रयोग विभिन्न तरह से होइत हे । ओइसेही एकर उत्पत्ति आउ स्रोत में भी अन्तर होइत हे । इहे कारण से विभिन्न आधार से सव्द के वर्गीकरण कयल जाइत हे ।

श्रोत के आधार से सब्द चार प्रकार के होइत हे –

१. तत्समः जउन सव्द संस्कृत भाषा से अपन मूल रुप में ही आयल हे, ओकरा तत्सम सव्द कहल जाइत हे । जइसेः- माता, पिता, नदी, वालक आदि ।

२. तद्भवः जउन सव्द संस्कृत भाषा से कुछ रुपान्तर होके प्रयोग में आयल हे ओकरा तद्भव कहल जाइत हे । जइसे खेत (क्षेत्र), परव (पर्व), रतन (रत्न), महत (महत्व) आदि ।

३. देसजः जउन सव्द अपना भाषा के मौलिक सव्द हे ओकरा देसज सव्द कहल जाइत हे । जइसे– लंगनी, छिपा, सिराउर, कहउतिया आदि ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

४. विदेसज: विदेसी भाषा से लेल गेल सव्द विदेसज कहल जाइत हे। जइसे:- अदालत, रेल, सलाम, नम्वर आदि।

बनौट के आधारसे सब्द तीन तरह के होइत हे:

१. रुढ: जउन सव्द के खण्ड कैला से ओकर कउनो खण्ड सार्थक न रहइत हे ओकरा रुढ सव्द कहल जाइत हे। जइसे: खेत सव्द के 'खे' आउ 'त' करके खण्डित कैला से दुनो खण्ड निरर्थक हो जाइत हे, इहे से एकनी "रुढ" सव्द हे।

२. यौगिक: जउन सव्द के खण्डित कैला से ओकर खण्ड भी सार्थक होइत हे ओकरा यौगिक सव्द कहल जाइत हे। जइसे:- लोकगीत। एह सव्द के 'लोक' आउ 'गीत' दू खण्डमे खण्डित कैला से दुनो खण्ड सार्थक ही रहैत हे। इहे से "लोकगीत" यौगिक सव्द हे।

३. योगरुढ: जउन सव्दके खण्डित कैला से ओकर खण्ड सार्थक रहैत हे वाकि ओइ सव्द के विसेष अर्थ होइत हे ओकरा योगरुढ सव्द कहल जाइत हे। जइसे:- पीताम्वर। एकर 'पीत' आउ 'अम्वर' दुनो खण्ड सार्थक हे बाँकि एकर विसेष अर्थ विष्णु होइत हे। इहे से 'पीताम्वर' योगरुढ सव्द हे।

सव्द के वर्गीकरण के मुख्य आधार वाक्य में रहल ओकर काम हे। काम के आधार से सव्द पाँच तरह के होइत हे।

(१) संज्ञा - नाम वतावेओला सव्द
(२) सर्वनाम - संज्ञा के वदला आवेओला सव्द
(३) विसेषण - विसेषता वतावेओला सव्द
(४) क्रिया - गतिविधि जनावेओला सव्द
(५) अव्यय - रुप परिवर्तन न होवेओला सव्द

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ऐह में संज्ञा, सर्वनाम, विसेषण आउ क्रियापद के रुप में वाक्य अनुसार हेरफेर भइला से इयाने विकार उत्पन्न भइला से एकैनी के विकारी (Declinable) सब्द कहल जाइत हे वाँकि अव्यय सब्द के रुपमे परिवर्तन इयाने विकार न भइला से एकैनी के अविकारी (Indeclinable) सब्द कहल जाइत हे।

अभ्यास

१. सब्द केकरा कहल जाइत हे ?

२. श्रोत के आधार से सब्द केतना तरह के होइत हे ? उदाहरण देके बतावऽ ।

३. बनौट के आधार से सब्द केतना तरह के होइत ह ? उदाहरण देके व्याख्या करऽ ।

४. काम के भूमिका के आधारसे सब्द केतना तरह के होइत हे ? नाम बतावऽ ।

५. विकारी आउ अविकारी सब्द में कउन अन्तर हे ?

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

संज्ञा

कउनो व्यक्ति, वस्तु, स्थान, अवस्था, समूह आदि के नाम के वोध करावेओला सव्द संज्ञा (Noun) कहल जाइत हे। जइसे: राम, कलम, गया, दुस्मनी, सभा आदि।

संज्ञा के व्यक्तिवाचक, जातिवाचक, समूहवाचक, द्रव्यवाचक आउ भाववाचक मिला के पाँच भेद होइत हे।

(क) व्यक्तिवाचक संज्ञा (Proper Noun)

कउनो खास व्यक्ति जगह, नदी, पहाड, दिन, महिना, परव आदि वस्तु के वोध करावेओला संज्ञा व्यक्तिवाचक कहल जाइत हे। जइसे:

(१)	व्यक्ति वोध करावेओला	-	राम, श्याम, जनक, सीता, बुद्ध
(२)	स्थान वोध करावेओला	-	जनकपुर, विराटनगर, झापा, राजविराज
(३)	वस्तु बोध करावेओला	-	कलम, वाकस, रामायण, जानकी मन्दिर
(४)	परव बोध करावेओला	-	देवाली, दशै, छठ
(५)	नदी-तलाव वोध करावेओला	-	गंगा, यमुना, कमला, चारनाथ, गंगासागर
(६)	पहाड वोध करावेओला	-	हिमालय, विन्ध्याचल, चुरिया

(ख) जातिवाचक संज्ञा (Common Noun)

जउन सव्द से कउनो जाति के वोध होइत हे, ऊ जातिवाचक संज्ञा कहल जाइत हे। जइसे: आदमी, देस, महादेस, गाँव, सहर, किताव, घर, नदी, पहाड, सागर आदि।

जातिवाचक संज्ञा के भितर अनेकन व्यक्तिवाचक संज्ञा रहइत हे, जइसे–

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

	जातिवाचक संज्ञा	व्यक्तिवाचक संज्ञा
(१)	आदमी	राम, श्याम, सीता, गीता आदि ।
(२)	देस	नेपाल, भारत, पाकिस्तान, चीन, रुस आदि
(३)	महादेस	एशिया, युरोप, अफ्रीका आदि ।
(४)	गाँव	जीतपुर, महिनाथपुर, देवपुरा, रुपैठा आदि ।
(५)	सहर	जनकपुर, राजविराज, विराटनगर आदि ।
(६)	नदी	मेची, कोशी, कर्णाली, नाइल आदि ।
(७)	पहाड़	हिमालय, चुरिया, विन्ध्याचल आदि ।
(८)	महासागर	हिन्द महासागर, प्रशान्त महासागर आदि ।

(ग) समूहवाचक संज्ञा (Collective Noun)

व्यक्ति चाहे वस्तु के समूह के बोध करावेओला संज्ञा समूहवाचक कहल जाइत हे, जइसेः-

(१) दूगो के समूह - जोडा, जोर, युगल आदि ।

(२) आदमी चाहे प्राणी के समूह - गण, संघ, फौज आदि ।

(३) सामान, चिरई चाहे कीरा के समूह - घौरछा, खोंता, झुण्ड आदि ।

(४) निर्जीव वस्तु के समूह - ढेरी, झावा, टाल आदि ।

(घ) द्रव्यवाचक संज्ञा (Material Noun)

नाप तौल करेओला के द्रव्यवाचक संज्ञा कहल जाइत हे, जइसेः

(१) ठोस पदार्थः सोना, चाँदी, लोहा, पित्तर आदि ।

(२) तरल पदार्थः दूध, घीउ, मटिया तेल, पेट्रोल आदि ।

(३) खाद्य पदार्थः धान, चाउर, नून, मैदा आदि ।

(४) गैस पदार्थः हावा, धुँवा, अक्सीजन, हाइड्रोजन आद्दि ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(ङ) भाववाचक संज्ञा (Abstract Noun)

देखल चाहे स्पर्श न कैल जा सकेओला भाव, गुण, अवस्था, काम आदि के बोध करावेओला संज्ञा भाववाचक कहल जाइत हे, जइसे:

जातिवाचक संज्ञा से – मानवता, राष्ट्रियता आदि ।

गुणबोधक विसेषण से – वीरता, सुन्दरता, बुढारी, वचपन आदि ।

धातुसे – पढाई, लिखाई, चलाई आदि ।

वर्गीकरणके अन्य आधार

(क) भौतिक अस्तित्व के आधार

भौतिक अस्तित्व के आधार से संज्ञा के दू भाग में बाँटल जा सकइत हे –

मूर्त संज्ञा आउ अमूर्त संज्ञा ।

(१) मूर्त संज्ञा: जेकरा देखल चाहे स्पर्श कैल जा सकइत हे, ओकरा मूर्त संज्ञा कहल जाइत हे । जइसे: घर, चन्द्रमा, पहाड, नदी आदि ।

(२) अमूर्त संज्ञा: जेकरा देखल चाहे स्पर्श न कैल जा सकइत हे, ओकरा अमूर्त संज्ञा कहल जाइत हे । जइसे: ममता, घृणा, मानवता आदि ।

(ख) गन्ती के आधार

गन्ती के आधार से संज्ञा दू भाग में बाँटल जाइत हे । गणनीय आउ अगणनीय ।

१. गणनीय संज्ञा: गन्ती हो सकेओला संज्ञा गणनीय संज्ञा कहल जाइत हे । जइसे: आदमी, कलम, कपी, घर, गाँव, सहर, खिड़की आदि ।

२. अगणनीय संज्ञा: गन्ती न हो सकेओला संज्ञा अगणनीय संज्ञा कहल जाइत हे । जइसे: पानी, मटिया तेल, मैदा आदि ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(ग) जीवन के आधार

जीवन के आधार से संज्ञा दू भाग में बाँटल जाइत हे। सजीव आउ निर्जीव संज्ञा।

१. सजीव संज्ञा: जीवन रहल संज्ञा के सजीव संज्ञा कहल जाइत हे। जइसे: मोहन, पशु, चिरइ आदि।

२. निर्जीव संज्ञा: जीवन न रहल संज्ञा के निर्जीव संज्ञा कहल जाइत हे। जइसे: घर, खिड़की, पृथ्वी, तारा, पहाड आदि।

(घ) मानवीय आधार

मानव आउ अन्य प्राणी चाहे वस्तु के बोध करावे के आधार से संज्ञा दू भाग में बाँटल जाइत हे –

मानवीय आउ अमानवीय इया मानवेत्तर संज्ञा।

१. मानवीय संज्ञा: मानव के बोध करावेओला संज्ञा मानवीय संज्ञा कहल जाइत हे। जइसे: श्याम, सीता, मामा, काका, किसान, विद्यार्थी आदि।

२. अमानवीय इया मानवेत्तर संज्ञा: मानव छोड़के अन्य प्राणी या बस्तु के बोध करावेओला संज्ञा अमानवीय इया मानवेत्तर संज्ञा कहल जाइत हे। जइसे: परवा, गाई, मुरगा, बकरी, भैंसी, आदि।

नोट: मगही भाषा में एकेगो संज्ञा के तीन रुप मिलइत हे।

(१) ह्रस्व (२) दीर्घ (३) अनावश्यक इया अतिरिक्त।

जइसे: ह्रस्व – घोरा,

दीर्घ – घोरवा

अनावश्यक इया अतिरिक्त – घोरौवा

ह्रस्व के भी निर्बल आउ सवल दू रुप होइत हे।

निर्बल – घोर

सवल - घोरा

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अभ्यास

१. संज्ञा केकरा कहल जाइत हे ?

२. संज्ञा के वर्गीकरण के केतना आधार हे ?

३. व्यक्तिवाचक संज्ञा आउ जातिवाचक संज्ञा के भेद बतावऽ ।

४. समूहवाचक संज्ञा केकरा कहल जाइत हे ?

५. द्रव्यवाचक संज्ञा केकरा कहल जाइत हे ?

६. भाववाचक संज्ञा केकरा कहल जाइत हे ?

७. सजीव आउ निर्जीव संज्ञा में कउन अन्तर हे ?

८. मानवीय आउ अमानवीय संज्ञा के भेद बतावऽ ।

९. मूर्त आउ अमूर्त संज्ञा के अन्तर बतावऽ ।

१०. नीचा देल गेल संज्ञा में से व्यक्तिवाचक, जातिवाचक, समूहवाचक, द्रव्यवाचक आऊ भाववाचक अलग कर ।

लड़की, चीनी, रुपैया, नेपाल, देस, चिरई, हरिण, भैंसी, कलम, विराटनगर, सभा, ढेरी, मैदा, सुन्दरता, दुःख, चाउर ।

११. नीचा के वाक्य से संज्ञा विछ के ओकर भेद बतावऽ ।

मनोहर घर के काम कइला के वाद स्कुल गेल ।

जानकी गहना पेन्ह के मेला गेल ।

महिला भी लिख पढके समाज में अगुआ वन सकइत हे ।

रमेश अपन गल्ती छिपावे ला अनेक वहाना बनैलक ।

मटिया तेल के भाव आकास चढल जाइत हे ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सर्वनाम

संज्ञा, संज्ञा पदसमूह तथा वाक्य के बदला में प्रयोग होवेओला सब्द के सर्वनाम (Pronoun) कहल जाइत हे । हम, हमनी, तुं, तों, तोहनी, ई, ऊ, इन्हकनी, उन्हकनी आदि सर्वनाम हे । सर्वनाम के प्रयोग निम्न तरीका से होइत हे ।

(क) संज्ञा के बदला –

राम स्कुल जाइत हे ।

ऊ पाँच कक्षा में पढइत हे ।

पहिला वाक्य में रहल राम के बदला दोसरा वाक्य में ऊ (सर्वनाम) के प्रयोग भेल हे ।

(ख) संज्ञा पदसमूह के बदला

राम निमन किताब किनलक हे ।

ऊ वहुत उपयोगी हे ।

पहिला वाक्य में रहल निमन किताब पदसमूह के बदला में दोसरा वाक्य में ऊ सर्वनाम के प्रयोग भेल हे ।

(ग) वाक्य के बदला

राम प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण भेल हे ।

ई सुखद समाचार हे ।

पहिला वाक्य के बदला दोसरा वाक्य में 'ई' सर्वनाम के प्रयोग भेल हे ।

सर्वनाम छओ तरह के होइत हे:-

(१) पुरुषवाचक सर्वनाम

(२) प्रश्नवाचक सर्वनाम

(३) सम्बन्धवाचक सर्वनाम

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(४) निश्चयवाचक सर्वनाम

(५) अनिश्चयवाचक सर्वनाम

(६) निजवाचक सर्वनाम

१) पुरुषवाचक सर्वनाम (Personal Pronoun)

व्यक्ति के नाम के बदला में प्रयोग होवेओला सर्वनाम के पुरुषवाचक सर्वनाम कहल जाइत हे। हमनी, तूं, तों, ई, ऊ आदि पुरुषवाचक सर्वनाम हे।

पुरुषवाचक सर्वनाम तीन तरह के होइत हे –

(क) उत्तम पुरुष (प्रथम पुरुष)

(ख) मध्यम पुरुष (द्वितीय पुरुष)

(ग) अन्य पुरुष (तृतीय पुरुष)

क) उत्तम पुरुष सर्वनाम:

वक्ता के नाम के बदला प्रयोग होवेओला सर्वनाम के उत्तमपुरुष सर्वनाम कहल जाइत हे। वक्ता अकेले भेला पर अपन नाम के बदला 'हम' आउ अधिक भेलापर 'हमनी', 'हमरनी', कहइत ह। इहे से हम, हमनी, हमरनी, उत्तमपुरुष सर्वनाम हे।

उत्तमपुरुष सर्वनाम के रुप

	एकवचन	बहुवचन
कर्ता	हम	हमनी, हमरनी
कर्म-सम्प्रदान	मोरा, मोरा के, हमरा, हमरा लेल	हमनी / हमरनी { के / लेल
करण		
अपादान	मोरा, हमरा से	हमनी, हमरनी से
सम्बन्ध	मोर, मोरा, हम्मर, हमरा, हमार, हमरे	हमनी, हमरनी के, केर, केरा
अधिकरण	मोरा, हमरा में	हमनी, हमरनी में

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ख) मध्यमपुरुष सर्वनामः-

श्रोता के नाम के बदला प्रयोग होवेओला सर्वनाम के मध्यमपुरुष सर्वनाम कहल जाइत हे । बात करेओला जेकरा से बात करइत हे ओकरा तुं, तों, तोहनी, तोहरनी, कहइत हे । इहे से तूं, तों, तोहनी, तोहरनी मध्यमपुरुष सर्वनाम हे ।

मध्यमपुरुष सर्वनाम के रुप

	एकवचन	बहुवचन
कर्ता	तूं, तों	तोहनी, तोहरनी
कर्म-सम्प्रदान	तोरा / तोंहरा { के / लेल	तोहनी / तोहरनी { के / लेल
करण		
अपादान	तोरा, तोहरा से	तोहनी, तोहरनी से
सम्बन्ध	तोर, तोरा, तोहर, तोहार, तोहरे, तोहरा	तोहनी / तोहरनी { के, केर / केरा
अधिकरण	तोरा, तोहरा में	तोहनी, तोहरनी में

ग) अन्यपुरुष सर्वनामः

वोलेओला व्यक्ति सुनेओलासे जेकरा विषयमें वात करइत हे ओकर ा बोध करावेओला सर्वनाम के अन्यपुरुष सर्वनाम कहल जाइत हे । जइसे: ई, ऊ, इन्हकनी, उन्हकनी ।

अन्यपुरुष सर्वनाम दू तरह के होइत हे । निकटवर्ती उल्लेख सूचक आऊ दूरवर्ती उल्लेखसूचक सर्वनाम ।

निकटवर्ती उल्लेखसूचक सर्वनाम

	एकवचन	बहुवचन
कर्ता	ई	ई, इन्हकनी
कर्म-सम्प्रदान	एकनि / एकरा { के / लेल	इन्ह / इन्हकरा { के / लेल

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दूरवर्ती उल्लेखसूचक सर्वनाम

	एकवचन	बहुवचन
कर्ता	ऊ	ऊ, उन्हकनी
कर्म-सम्प्रदान	ओह { के ओकरा { लेल	उन्ह { के उन्हकरा { लेल

(२) प्रश्नवाचक सर्वनाम (Interrogative Pronoun)

जउन सर्वनाम कउनो व्यक्ति, वस्तु आदि के विषय में प्रश्न व्यक्त करइत हे, से प्रश्नवाचक सर्वनाम कहल जाइत हे। जइसे: के, कऊन आदि।

प्रश्नवाचक सर्वनाम के रुप

	एकवचन	बहुवचन
कर्ता	के,को, कऊन, कौन	के, किन्हकनी
कर्म- सम्प्रदान	केह { के केकरा { लेल	किन्ह { के किन्हकरा { लेल

३) सम्बन्धवाचक सर्वनाम (Relative Pronoun)

एक उपवाक्य के सम्बन्ध दोसरा उपवाक्य से जोडे ला आयल सर्वनाम के सम्वन्धवाचक सर्वनाम कहल जाइत हे। जे, से, जऊन, तऊन, जौन, तौन, आदि सम्वन्धवाचक सर्वनाम हे।

जे मेहनत करइत हे से उन्नति करइत हे।

एह वाक्य में 'जे' सम्वन्धवाचक आउ 'से' सह– सम्वन्धवाचक सर्वनाम हे।

सम्बन्धवाचक सर्वनामके रुप[1]

	एकवचन	बहुवचन
कर्ता	जे, जऊन, जौन	जे, जिन्हकरी
कर्म- सम्प्रदान	जेह { के जेकरा { लेल	जिन्ह { के जिन्हकरा { लेल

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सम्वन्ध	जेह के जेकर जेकरा (स्त्रीलिङ्ग-जेकरी)	

सह- सम्बन्धवाचक सर्वनाम के रुप

	एकवचन	बहुवचन
कर्ता	से, तउन, तौन	से, तिन्हकनी
कर्म-सम्प्रदान	तेह / तेकरा { के / लेल	तिन्ह / तिन्हकरा { के / लेल
सम्बन्ध	तेह के, तेकर तेकरा (स्त्रीलिङ्ग- तेकरी)	

४) निश्चयवाचक सर्वनामः

जे सर्वनाम कउनो निश्चित व्यक्ति इया वस्तु के निर्दिष्ट करइत हे से निश्चयवाचक सर्वनाम कहल जाइत हे ।

ई सर्वनाम निकट-निर्देशक आऊ दूरनिर्देशक दू तरह के होइत हे । जइसेः

ई हम्मर भाई हे ।

ऊ हम्मर घर हे ।

ऊपर के वाक्य में 'ई' निकट-निर्देशक आऊ 'ऊ' दूर-निर्देशक निश्चयवाचक सर्वनाम हे ।

५) अनिश्चयवाचक सर्वनामः

जे सर्वनाम कउनो अनिश्चित व्यक्ति इया वस्तुके निर्दिष्ट करइत हे से अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहल जाइत हे । जइसेः कोई अबइत हे । एह वाक्य में 'कोई' अनिश्चित व्यक्ति के वोध करबइत हे । इहे से 'कोई' अनिश्चय वाचक सर्वनाम है ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अनिश्चयवाचक सर्वनामके रुप

कर्ता	केहू, केऊ, कोई, कउनो, कौनो	का, की, कौंची
कर्म-सम्प्रदान	केकरो, कौनो { के, लेल	काहे, कौंची { के, लेल
अव्यय रुप	कुछु, कुच्छो, कुच्छओ	

६. निजवाचक सर्वनामः

संज्ञा इया सर्वनाम के वाद स्वयं के बोध करावेओला सर्वनाम निजवाचक सर्वनाम कहल जाइत हे। एकर तीनो पुरुष में प्रयोग होइत हे। अपन, अपने, स्वयं, खुद, खुदे, आदि निजवाचक सर्वनाम हे। जइसेः

राम अपन किताब अपने से फेंक देलक।
हम अपने जा के देखब।
तूँ स्वयं अपने चिठी लिख।
ऊ अपने आयल हथ।
हम स्वयं देखले रही।
तूँ स्वयं उपस्थित हल।
ऊ स्वयं खयले हलइ।
हम खुद जा के देखली।
तूँ खुद जा के बात बुझ।
ऊ खुद पढ़ले हलइ।

अभ्यास

१. सर्वनाम केकरा कहल जाइत हे ? उदाहरण सहित लिख।
२. सर्वनाम केतना प्रकार के होइत हे ?
३. पुरुषवाचक सर्वनाम के उदाहरण सहित व्याख्या करऽ।
४. सम्बन्धवाचक सर्वनाम के प्रयोग कऽ के पाँच गो वाक्य वनावऽ।
५. निजवाचक सर्वनाम सहित के दसगो वाक्य वनावऽ।
६. प्रश्नवाचक सर्वनाम के उदाहरण सहित व्याख्या करऽ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विसेषण

संज्ञा के गुण, दोष, संख्या आदि विसेषता बोध करावेओला सब्द के विसेषण (Adjective) कहल जाइत हे। नाम से कौन, केतना, कइसन आदि प्रश्न के जवाव में विसेषण अवइत हे।

जइसे:

वगैचा में लाल फूल फुलाइल हे।
वड़की चिरई बैठल हे।
निमन नटुवा मेला में आयल हे।
छोटका भाई स्कूल गेल हे।

उपर के वाक्य में लाल, वड़की, निमन, छोटका सब्द से क्रमसः फूल चिरई, नटुवा, भाई सब्द के विसेषता के बोध होइत हे, इहे से एकैनी विसेषण हे। संज्ञा, सर्वनाम, विसेषण, क्रिया आउ अव्यय सब तरह के सब्द से विसेषण वनइत हे।

विसेष्य: विसेषण जौन सव्दके विसेषता बोध करबइत हे ऊ सब्द विसेष्य कहल जाइत हे।

मेहनती आदमी उन्नति करइत हे।
किताव से असल ज्ञान मिलइत हे।

उपर के वाक्य में 'आदमी', 'ज्ञान' विसेष्य हे।

विसेषण के भेद:

विसेषण चार प्रकार के होइत हे।

क) गुणबोधक विसेषण (Qualitative Adjective)

संज्ञा के गुण, दोष आदि विसेषता बतावेओला सब्द के गुणवोधक विसेषण कहल जाइत हे। जइसे:

(क) रंग – करिया, गोर, लाल, पियर
(ख) स्वाद – तीत, मिठ, खट्टा

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(ग) स्वभाव	–	दुष्ट, सज्जन, गफारी, वदमास
(घ) स्वरुप	–	खरखर, मेही, मोलायम
(ङ) आदत	–	असल, खराव, मेहनती, आसकती
(च) अवस्था	–	गरीव, धनी, मझिला, छोटका
(छ) आकार	–	गोल, चौकोर, मोट, पातर
(ज) समय	–	प्राचीन, आधुनिक, चैती, वार्षिक
(झ) स्थान	–	छपरिया, भोजपुरिया
(ञ) वस्तु	–	कितावी, घरेलु, जंगली
(ट) जाति	–	बिहारी, बंगाली

(ख) संख्याबोधक विसेषण (Numeral Adjective)

संज्ञा के निश्चित इया अनिश्चित संख्या, क्रम आउ आवृति बोध करावेओला विसेषण के संख्या वोधक विसेषण कहल जाइत हे ।

जइसे:

(क) निश्चित संख्या	–	एक, दस, सय, पचास, पच्चीस
(ख) अनिश्चित संख्या	–	सयकडो, हजारो, लाखो
(ग) आवृत्ति	–	दोव्वर, तेव्वर, दुगुन्ना, तिनगुन्ना
(घ) क्रम	–	दोसरा, तेसरा, चौथा
(ङ) प्रत्येक वाचक	–	एखुनटा, हरेक

(ग) परिमाणबोधक विसेषण (Quantitative Adjective)

संख्या के बोध न हो के कउनो वस्तु के एतना ओतना परिमाण इया मात्रा वुझावेओला विसेषण के परिमाणवोधक विसेषण कहल जाइत हे । जइसे: एतना (एत्तेक) चाउर, ओतना (ओत्तेक) घिउ, जेतना (जेत्तेक) धन, थोर बहुत पैसा, कनीमनी समान आदि ।

(घ) सार्वनामिक विसेषण (Pronominal Adjective)

विसेषण के काम करेओला सर्वनाम के सार्वनामिक विसेषण कहल जाइत हे । सार्वनामिक विसेषण अनेक तरह के होइत हे ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(१) दर्शक सार्वनामिक विसेषण

संज्ञा से पहिले आके विसेषण के काम करेओला निकटवर्ती आउ दूरवर्ती उल्लेखसूचक सर्वनाम दर्शक सार्वनामिक विसेषण वनइत हे। जइसेः

ई किताव उपयोगी हे।
ऊ आदमी खराव हे।

उपर के वाक्य में 'किताव' आउ 'आदमी' जइसन विसेष्य के पहिले प्रयोग भेला से 'ई', 'ऊ' सार्वनामिक विसेषण भेल हे। बाकि 'ई उपयोगी हे', 'ऊ खराव हे' कहला से 'ई', 'ऊ' सर्वनाम हे, विसेषण न हे।

(२) सम्बन्धवाचक सार्वनामिक विसेषणः

संज्ञा के अगाडि आके विसेषण के काम करेओला सम्वन्धवाचक सर्वनामे सम्वन्धवाचक सार्वनामिक विसेषण बनइत हे। जइसेः

हमर घर आगे हे।
ओकर खेत परती हे।

उपर प्रयोग भेल 'हमर' 'ओकर' सम्वन्धवाचक सर्वनाम 'घर' आउ 'खेत' के अगाडि आके ओकर विसेषता वोध करावे से सार्वनामिक विसेषण वनल हे।

(३) प्रश्नवाचक सार्वनामिक विसेषणः

विसेष्य के अगाडि आके विसेषण के काम करेओला प्रश्नवाचक सर्वनामे प्रश्नवाचक सार्वनामिक विसेषण वनइत हे। जइसेः

केतना चाउर पठइलक हे?
कइसन आदमी आयल हल?
कौन खेत परती हे?
का बात सोच के गेल हथी?

उपर के वाक्य में 'केतना' 'कइसन', 'कौन', 'का' सार्वनामिक विसेषण हे काहेसेकि ई सब क्रमसः 'चाउर', 'आदमी', 'खेत' आउ 'बात' के विसेषता वता रहल हे।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(४) प्रकारबोधक सार्वनामिक विसेषण:

विसेषण के काम करेओला प्रकारबोधक सर्वनाम के प्रकारबोधक सार्वनामिक विसेषण कहल जाइत हे । अइसन, ओइसन, जइसन, तइसन आदि प्रकारबोधक सर्वनाम एह श्रेणी में परइत हे ।

अइसन कलम लेले अइह ।
ओइसन कलम भेट न रहल हे ।
सीता के जइसन कनतरकी हम खोजैत ही ।
तइसन चीज अब न अबैत हे ।

विसेषण के अन्य प्रकार

विसेषण के निम्नलिखित प्रकार भी होइत हे ।

क) उद्देश्य विसेषण (Attributive Adjective)

विसेष्य से अगाडि प्रयोग होवेओला विसेषण के उद्देश्य विसेषण कहल जाइत हे । जइसे:

१. मोट आदमी कम चलइत हे ।
२. मेहनती आदमी सुखी रहइत हे ।

ख) विधेय विसेषण (Predicative Adjective)

विसेष्य से पछाडी प्रयोग होवेवाला विसेषण के विधेय विसेषण कहल जाइत हे । जइसे:

१. राम मेहनती हे ।
२. सीता सज्जन हे ।

ग) भेदक विसेषण

षष्ठी विभक्ति चिन्ह (केर, केरा, केरी आदि) लागल विसेषण के काम करेओला सब्द के भेदक विसेषण कहल जाइत हे ।

ऊ हमर भाई हे ।
महेश के दोकान हम देखले ही ।
ओकर बात कह ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

घ) कृदन्त विसेषण

धातु में प्रत्यय जोडके बनल विसेषण के कृदन्त विसेषण कहल जाइत हे । जइसे:

वहल पानी न घुमइत हे ।

लिखत वात न मेटाइत हे ।

अभ्यास

१. उदाहरण सहित विसेषण के परिभाषा लिख ।

२. विसेषण आउ विसेष्य के अन्तर लिख ।

३. विसेषणके प्रकार उदाहरण सहित लिख ।

४. भेदक विसेषण आउ कृदन्त विसेषण के परिचय लिख ।

५. निम्नलिखित सब्द कौन प्रकार के विसेषण हे ?

लाल, तेसरा, पचास, हम्मर, कौन, एतना, ओतना, अइसन, कइसन ।

६. निम्न लिखित वाक्य में विसेषण आउ विसेष्य पत्ता लगाव ।

(क) राम के घर जनकपुर हे ।

(ख) पियेओला पानी लोटा मे हे ।

(ग) पचासो आदमी सडक पर जम्मा हे ।

(घ) कौन शिक्षक बजार गेलन ?

(ङ) ई किताव निमन हे ।

(च) पौष्टिक भोजन देह ला आवश्यक हे ।

(छ) नया जगह में बास कठिन होइत हे ।

(ज) विद्वान आदमी वनेला पढे परइत हे ।

(झ) कइसन कम्प्युटर से नीमन काम होइत हे ?

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

क्रियापद

कर्ता के काम, घटना, अवस्था इया स्थिति के जउन सव्द से वोध होइत हे, ऊ क्रियापद कहवइत हे ।

(क) सीता मिठाई खयली । (काम)

(ख) राम सडक पर गिरलई । (घटना)

(ग) रमण कमजोर हे । (अवस्था)

उपर के वाक्य में 'खयली' 'गिरलई' 'हे' से काम, घटना आउ अवस्था के वोध होइत हे, इहे से ई क्रियापद हे ।

मगही भाषा में क्रियापद सामान्य रुप से वाक्य इया उपवाक्य के अंत में अवइत हे । जइसे: गोपी कहलक जे राम आइ न अतइ । ई वाक्य दूगो उपवाक्य से बनल हे । (१) गोपी कहलक, आउ (२) राम आइ न अतइ । उपवाक्य (१) में कहलक आउ उपवाक्य (२) में अतई क्रियापद वाक्य के अन्त में आयल हे ।

सब्द वर्ग में क्रियापद सबसे अधिक रुप परिवर्तन होवेओला वर्ग हे । वाक्य के काल, लिङ, वचन, पुरुष, करण-अकरण, वाच्य, प्रेरणार्थक आदि सवहे बात क्रियापद से ही स्पष्ट होइत हे । एह प्रकार से व्याकरणात्मक सम्पूर्ण अंग के वर्णन आउ वाक्य के अर्थ अभिव्यक्त करेके कारण से क्रियापद वाक्य के केन्द्रीय तत्व मानल जाइत हे ।

क्रियापदके निर्माण

क्रियापद बनावे ला धातु में प्रत्यय जोड़ल जाइत हे। धांतु के स्वतंत्र प्रयोग न होइत हे लेकिन क्रियापद बन गेला पर वाक्य में प्रयोग होइत हे । जइसे:

लिख् + इत = लिखइत ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

लिख्	+	लक	=	लिखलक ।
लिख्	+	अव	=	लिखब ।

अइसने तरीका से 'लिख' धातु से अनेकन क्रियापद बन सकइत हे। उपर के क्रियापद के देखला से स्पष्ट होइत हे कि क्रियापद के मूल मे धातु रहइत हे आउ क्रियापद धातु के ही अर्थ ले के वाक्य में रहइत हे।

धातु में प्रत्यय जेड़ला से अन्य सब्द भी बनइत हे। जइसे:

पढ्	+	अक्कर	=	पढक्कर (विसेषण)
लिख्	+	अत	=	लिखत (संज्ञा)

क्रियापद आउ कृदन्त क्रिया में अन्तर

वाक्य के समापन करेके क्षमता के आधार से क्रिया दू तरह के होइत हे। समापक आउ असमापक।

समापक क्रिया वाक्य के समापन करइत हे आउ विधेय के काम करइत हे, उहे से ई क्रियापद वर्ग में परइत हे। कृदन्त इया असमापक क्रिया संज्ञा, विसेषण तथा अव्यय (क्रियाविसेषण) के काम करइत हे आउ अन्य सब्दवर्ग में परइत हे।

असमापक (कृदन्त) क्रिया	**सब्द वर्ग**
खाके	अव्यय (क्रिया विसेषण)
खयलासे	"
खाइते	"
खाधुर	संज्ञा
खउवा	विसेषण

इहे कारण से क्रियापद कहला से समापक क्रिया के ही बोध होइत हे जउन सब्द वर्ग में क्रियापद वर्ग के काम करइत हे।

क्रियापद के प्रकार आउ धातु के विस्तृत चर्चा धातु आउ क्रिया पाठ में देल गेल हे।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अभ्यास

१. क्रियापद से की तात्पर्य हे ?
२. क्रियापद वाक्य के केन्द्रिय तत्व कहल जा हे । काहे ?
३. क्रियापद के रचना कइसे होइत हे ?
४. समापक आउ असमापक क्रिया के अन्तर बताव ।
५. नीचे के वाक्य से क्रियापद के सब्दन बिछ के निकाल ।

हमर लिखल साहित्य समय आउ सीमा में बँधल हे
वाकि हमर मौखिक साहित्य एतना विसाल आउ
ताकतवर हे कि जेकरा समझे-बुझे ला विदेसी विद्वान
माथा पच्ची करइत रहलन हे तइयो ओकनी के ऊपरीये जानकारी
मिलल हे ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अव्यय

रुप परिवर्तन न होवेओला सब्द के अव्यय (Indeclinable) कहल जाइत हे । वाक्य में प्रयोग भेला पर लिङ, वचन, पुरुष, कारक आदि के आधार से अव्यय के रुप में परिवर्तन न होइत हे । इहे से एकरा अविकारी भी कहल जाइत हे ।

अव्यय के चार भेद होइत हेः-

(१) क्रियाविसेषणः

क्रियाविसेषण ऊ अव्यय हे जे क्रिया, विसेषण, चाहे क्रियाविसेषण के अर्थ में विसेषता देखबइत हे । जइसेः

(क) हरि अपन काम <u>निमन से</u> करइत हे । क्रिया (करइत हे) के विसेषता

(ख) ऊ <u>बहुत</u> निमन आदमी हे । विसेषण (निमन) के विसेषता

(ग) सोहन <u>बडी</u> ऊपरले पहुँचल । क्रिया विसेषण (ऊपरले) के विसेषता

उपर के वाक्य में "निमन से" 'बहुत' 'वडी' सब्द से क्रमसः क्रियापद, विसेषण, आउ क्रियाविसेषण के विसेषता के बोध भेल हे, उहे से एकैनी क्रियाविसेषण हे ।

क्रियाविसेषण सामान्य रुपमे क्रिया से काहे, कइसे, कहाँ, कख़नी, कत्ते आदि प्रश्न के उत्तर में अबइत हे ।

क्रियाविसेषण समयवाचक, स्थानवाचक, परिमाणवाचक, रीतिवाचक, आऊ कारण वाचक मिला के पाँच तरह के होइत हे ।

(क) समयवाचकः काल्ह, आज, भिनसरे

(ख) स्थानवाचकः एत, ओत

(ग) परिमाणवाचकः एतना, ओतना

(घ) रीतिवाचकः चुपचाप, निमनसे

(ङ) कारणवाचकः खइला से, बढला से

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(२) संयोजक:

दूगो चाहे दूगो से अधिक वाक्य, वाक्यांस इया पद के जोड़ेओला अव्यय संयोजक कहल जाइत हे। जइसे:

राम आउ मोहन पटना गेल।

ऊ नोकरी गेल बाँकि घुर के चल आयल।

संयोजक के वाक्य में भेल प्रयोग अनुसार दू भाग में बाँटल जा सकइत हे।

(क) सापेक्ष (ख) निरपेक्ष।

(क) सापेक्ष संयोजक (Sub-ordinator)

मुख्य उपवाक्य आउ अधीन उपवाक्य के जोड़के मिश्र वाक्य बनावेओला संयोजक के सापेक्ष संयोजक कहल जाइत हे। जइसे:

जे आदमी सज्जन हे ऊ सबके निमन लगइत हे।

जे चोर हे ओकरे बोली जोर हे।

(ख) निरपेक्ष संयोजक (Co-ordinator)

स्वतन्त्र उपवाक्य के जोड़के संयुक्त वाक्य बनावेओला संयोजक के निरपेक्ष संयोजक कहल जाइत हे।

(१) राम आम चाहे समतोला खइलक।

(२) मोहन हँसलक लेकिन गीता न हँसल।

(३) बिस्मयादिबोधक (Interjection)

विभिन्न अवस्था में आदमी के मन में उठेओला संवेग (अचरज, खुसी, दुख, प्रसंसा आदि) के व्यक्त करे खातिर प्रयोग भेल अव्यय सब्द के विस्मयादिवोधक कहल जाइत हे।

बिस्मयादिबोधक सब्द प्राय: वाक्य के सुरु में विस्मयादिबोधक चिन्ह (!) के साथ प्रयोग होइत हे। जइसे:

आश्चर्यवाचक –, (क) बाप रे ! कइसन विसाल घर हे।

(ख) ओहो ! केतना सुन्दर चित्र हे।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तिरस्कारवाचक – (क) धत ! अइसने काम करेके चाही ।
(ख) ओह ! केतना धकलइत हे ।

प्रसंसावाचक – (क) वाह ! अइसन होवेके चाही ।
(ख) साबास ! निमन काम में आगे बढेके चाही ।

विस्मृतिवाचक – (क) जा ! किताब बिसर गेली ।
(ख) अँ ! हँ त ।

शोकवाचक – (क) बेचारा ! भारी दुख पर गेलइ ।
(ख) दैव रे ! मर गेली ।

सम्बोधनवाचक – हे भगवान ! हमरा कउनो तरहे उबार ।
हे भाई ! जल्दी अइहे ।

उपहासवाचक – हँ हँ ! ठीक भेलइ ।
हँ ! आब स्वाद पएलक ।

(४) सम्बन्धबोधक: दूगो संज्ञापद के बीच समान, न्यून, विसेष आदि सम्बन्ध के बोध करावेओला अव्यय के सम्बन्धबोधक अव्यय कहल जाइत हे । जइसे:
किताब विना विद्यार्थी के पढाई न हो सकइत हे ।

अभ्यास

(१) अव्यय के परिभाषा बताव ।
(२) अव्यय केतना तरह के होइत हे ?
(३) निम्नांकित अव्यय के वाक्य मे प्रयोग कर ।
वाह-वाह, धत्, हे राम, एतना, चुपचाप, बाँकि, लेकिन, बेचारा ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

लिंग

स्त्री वा पुरुष जाति अलगियावेओला व्याकरण के चिन्ह के लिंग कहल जाइत हे । मगही भाषा में स्त्री जाति के बोध करावेओला स्त्रीलिंग आउ पुरुष जाति के बोध करावेओला पुलिंग मिला के लिंग दू तरह के होइत हे । जइसे:

क) प्राणीवाचक – मर्द-मेहरारु, साँढ-गाई, बोकरा-वकरी
भेडा-भेडी, घोरा-घोरी, गदहा-गदही
ऊँट-ऊँटनी, वानर-वनरनी, बाघ-बघनी ।

ख) सम्बन्धवाचक - माय-बाप, वेटा-वेटी, दुल्हा-दुल्ही, वेटा-पुतोह, भाई-वहिन, काका-काकी ।

ग) पदवाचक - राजा-रानी, मालिक-मलिकाइन, चेला-चेली ।

घ) जातिवाचक - धोबी-धोविन, मुसहर-मुसहरनी, चमार-चमइन ।

संज्ञा के पुलिंग से स्त्रीलिंग मे परिवर्तन करेला प्रायः स्त्रीसूचक प्रत्यय लगइत हे । कइसन संज्ञा में कइसन स्त्रीसूचक प्रत्यय लगइत हे तेकर संक्षिप्त व्यख्या प्रस्तुत हे ।

१. आकारान्त पुलिंग संज्ञा में 'आ' के जगह पर 'ई' के प्रयोग होइत हे । जइसे:

पुलिंग	**स्त्रीलिंग**
काका	काकी
मामा	मामी
पिल्ला	पिल्ली
दादा	दादी
वेटा	वेटी
चाचा	चाची
पिउसा	पिउसी
घोरा	घोरी
आजा	आजी

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बाछा	बाछी
बुढा	बुढी
मुर्गा	मुर्गी
भतीजा	भतीजी
कुर्ता	कुर्ती
ओढना	ओढनी
छुरा	छुरी

२. अकारान्त जीतवाचक संज्ञा में 'अ' के जगह पर 'इन' के प्रयोग होइत हे ।

बाघ	बाघिन
साँप	साँपिन
नाग	नागिन
खबास	खवासिन
अमात	अमातिन
सियार	सियारिन
सम्धी	सम्धिन
डोम	डोमिन

३. प्रायः उपाधि आउ जातिबोधक संज्ञा में आइनि इया आइन के प्रयोग होइत हे । जइसेः

पंडित	पंडिताइन
गुरु	गुरुआइन
चौधरी	चौधराइन
मोदी	मोदीआइन
धानुक	धनुकाइन

४. कुछ जाती, व्यवसाय आउ पशुवाचक नाम में 'नी' के प्रयोग होइत हे । जइसेः

नोकर	नोकरनी
मास्टर	मास्टरनी
मोर	मोरनी
चोर	चोरनी

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मुसहर	मुसहरनी
कुजडा	कुजडनी
सिंह	सिंहनी
हाथी	हथनी

५. 'मान' इया 'वान' प्रत्यय रहल पुलिंग सब्द में क्रमशः 'मती' इया 'वती' के प्रयोग होइत हे । जइसे:

श्रीमान	श्रीमती
पुत्रवान	पुत्रवती
रुपवान	रुपवती
धनवान	धनवती
बलवान	बलवती

पुलिंग से स्त्रीलिंग बनावे के ई कुछु मुख्य नियम हे। एकरा अतिरिक्त कुछु पुलिंग सब्द के स्त्रीलिंग अनियमित ढंग से भी बनइत हे । जइसे:

राजा	रानी
पति	पत्नी
बाप	माय
खसी	पाठी
भाई	बहिन

अभ्यास

१. मगही भाषा में लिंग केतना प्रकार के होइत हे ? उदाहरण देके बताब ।

२. निम्न लिखित सब्दके विपरीत लिंग लिख ।

श्रीमती, बनिया, मोदिआइन, कुजडा, धनवान, भाई, बेटी, अभागल, कुमार, डाक्टर

३. 'नी', 'आइन', 'ई' प्रत्यय लगा के पाँच पाँच गो पुलिंग सब्दसे स्त्रीलिंग बनाब ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वचन

संख्या के बोध करावेओला व्याकरण के संकेत वचन कहल जाइत हे। वचन दू प्रकार के होइत हे: (१) एकवचन (२) बहुवचन।

१. एकवचन: एकवचन से संज्ञा आउ सर्वनाम के एक संख्या के बोध होइत हे। जइसे: आदमी, घर, बच्चा।

२. बहुवचन: बहुवचन से संज्ञा आउ सर्वनाम के एक से अधिक संख्या के बोध होइत हे। जइसे: कर्मचारी सब, घरन, गुरुलोग।

(क) मगही भाषा में अन्त के दीर्घस्वर के ह्रस्व बना के आउ 'न' संयुक्त कके बहुवचन के रुप वनावल जाइत हे। जइसे:

घोरा	–	घोरन
घर	–	घरन
वात	–	वातन
नारी	–	नारिन
लडकवा	–	लडकवन

(ख) मानव जाति के संज्ञा चाहे सर्वनाम के बहुवचन आदरार्थी अर्थ में प्रयोग करे ला 'लोग' संयुक्त कके बहुवचन वनावल जाइत हे। जइसे:

राजा	–	राजालोग
छात्र	–	छात्रालोग
लेखक	–	लेखकलोग
विद्वान	–	विद्वानलोग
स्त्री	–	स्त्रीलोग

(ग) सामान्य अर्थ में वहुवचन वनावे ला 'सब' भी संयुक्त कैल जाइत हे। जइसे:

कर्मचारी	–	कर्मचारीसब
सिपाही	–	सिपाहीसब

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(घ) एकरा अतिरिक्त गण, दल, समूह, समुदाय आदि संयुक्त कऽ के भी वहुवचन बनावल जाइत हे । जइसे:

मंत्री	–	मंत्रीगण
छात्र	–	छात्रदल
विद्यार्थी	–	विद्यार्थीसमूह
योगी	–	योगीसमुदाय

सर्वनाम के वहुवचन बनावे ला सामान्य रुप में 'नी' 'रनी' आउ 'न्हकनी' संयुक्त कैल जाइत हे । जइसे:

हम	–	हमनी, हमरनी
तूँ	–	तोहनी
तों	–	तोहरनी
ई	–	इन्हकनी
ऊ	–	उन्हकनी
जउन	–	जिन्हकनी
तउन	–	तिन्हकनी
कउन	–	किन्हकनी

अभ्यास

१. वचन से कउन चीज के बोध होइत हे ? बताव ।

२. एकवचन से बहुवचन बनावे के कउन कउन तरीका हे ? बताव ।

३. निम्नलिखित सब्द के बहुवचन बनाव ।

चिठी, माला, छात्रा, शिक्षक, तूँ

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आदरार्थी

संज्ञा, सर्वनाम आउ क्रियापद से संकेत होवेओला व्यक्ति के समाजिक इज्जत आउ प्रतिष्ठा व्यक्त करेओला सब्द आउ पदसंगति के आदरार्थी (Honorific) कहल जाइत हे। समाज के मर्यादा अनुसार ही वाक्य में आदर के व्यवहार कयल जाइत हे। मगही भाषा में भी विभिन्न दर्जा के व्यक्ति के आदर के क्रम हे। इहे क्रम के हिसाब से आदरार्थी सब्द के चार भाग लगावल जा सकइत हे।

(१) निम्न आदरार्थी:

अपना से निम्न श्रेणी के व्यक्ति से बात करत समय में जउन सब्द के प्रयोग होइत हे, ऊ भाषा के हिसाब से सबसे नीचला श्रेणी के सब्द हे। इहेसे एकरा निम्न आदरार्थी कहल जाइत हे। जइसे:

तूँ घास कटबे।
तूँ स्कुल जाही।
तूँ खेत जाइत हे।
ऊ मारिस है।
ऊ स्कूल गइस है।

(२) सामान्य आदरार्थी

अपना से बरावर श्रेणी के लोग खातिर चाहे अपना से निम्न श्रेणी के रहला पर भी सदभाव व्यक्त करेला बरावर के श्रेणी जइसन के आदर ार्थी सब्द के प्रयोग होइत हे, एकरा सामान्य आदरार्थी कहल जाइत हे।

तों स्कूल जयवही।
ऊ भात खतइ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

३. उच्च आदरार्थी

अपना से उच्च श्रेणी के लोग प्रति सम्मान देखावे ला प्रयोग होवेओला सब्द उच्च आदरार्थी कहल जाइत हे ।

ऊ जयतथी ।
साहुकार अइलन ।
ऊ बनिज करे गेलन ।
सोहन नाओ पर चढलन ।

४. बिसिष्ट आदरार्थी

विसिष्ट व्यक्ति के विसिष्ट आदर देखावे ला प्रयोग कयल जायओला सब्द विसिष्ट आदरार्थी कहल जाइत हे ।

हरि बाबू आयल हलन ।
हे हजुर, हमरो साथे लेले चल ।
हे सरकार, तूँ किध्धीर जैब ?

अभ्यास

१. आदरार्थी केतना तरह के होइत हे ? उदाहरण सहित बताव ।

२. नीचा लिखल वाक्य के कोष्ठ में देल संकेत अनुसार के आदर परिवर्तन कर ।

राम खयलक । (उच्च आदर)

ऊ बनिज करे गेलन । (निम्न आदर)

चारो मिल के छौपा-छौपी खेललक । (उच्च आदर)

ऊ फिनु घुर के गेलन । (निम्न आदर)

राम लच्छ रुपया में कन्तरका खरीदलन । (विसिष्ट आदर)

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सब्द रचना

भाषा में नया सब्द बनावे के काम सब्द रचना (Word Formation) हे । एह काम के सब्द निर्माण आउ सब्द के व्युत्पादन भी कहल जाइत हे ।

सब्द रचना के प्रक्रिया में भाषा के नियम अनुसार आधार तत्व से आधेय तत्व के जोड्ल जाइत हे । सामान्य रुप से धातु आउ सब्द आधार तत्व के काम करैत हे आउ उपसर्ग, प्रत्यय आधेय तत्व के काम करइत हे । एकरा अतिरिक्त समास आउ द्वित्व पद्धति भी प्रयोग कयल जाइत हे ।

भाषा में प्रयोग में रहल सब्दन पर ध्यान देला से स्पष्ट होइत हे कि कुछ अइसन सब्द के प्रयोग होइत हे जेकर निर्माण कयल गेल हे आउ कुछ मूल सब्द हे जेकर निर्माण स्वतः भाषिक परम्परा में भेल हे । एह हिसाब से सब्द दू तरह के होइत हे – मूल आउ व्युत्पन्न ।

(क) मूल सब्द

मूल सब्द के स्वतःनिर्मित इया अव्युत्पन्न सब्द भी कहल जाइत हे । अइसन सब्दके टुकडा न होइत हे । उपसर्ग, प्रत्यय के योग न रहल आउ समास तथा द्वित्व पद्धति के प्रयोग न रहल अइसन सब्द के रुढ सब्द भी कहल जाइत हे, जइसेः घर, हाथ, पानी, लाल आदि ।

(ख) व्युत्पन्न सब्दः

निर्माण कयल गेल सब्द के व्युत्पन्न सब्द कहल जाइत हे । उपसर्ग, प्रत्यय, समास, द्वित्व आदि प्रक्रिया से बनल अइसन सब्द के टुकडा हो सकइत हे । जइसेः

संहार	=	सम्	+	हार
वेदाना	=	वे	+	दाना

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सब्द रचना के पद्धति

सब्द निर्माण करेला मुख्य चार पद्धति के प्रयोग होइत हे ।

(१) उपसर्ग (२) प्रत्यय

(३) समास (४) द्वित्व

एकर विस्तृत चर्चा अलग अलग पाठ में भेल हे । एकरा साथे कुछ सब्द संक्षेपीकरण आउ अनुकरण के पद्धति से भी निर्माण हो के भाषा में प्रचलित हे, ओकर वर्णन विसेष सब्द शीर्षक मे देल गेल हे ।

अभ्यास

१. सब्द रचना से की तात्पर्य हे ?

२. मूल आउ व्युत्पन्न सब्द के भिन्नता देखाव ।

३. सब्द रचना के पद्धति कौन कौन हे ।

४. नीचा के वाक्य से मूल आउ व्युत्पन्न सब्द अलगियाव ।

(क) भोला सज्जन हे ।

(ख) दूगो घोड़सवार देखाई पड़लइ ।

(ग) बनिमा समझलक कि अब जान गेल ।

(घ) ओकरा एगो दोसर सहर में जाय के हलइ ।

(ङ) हम्मर जाने सुक्खल जा हे ।

(च) रसता खतरनाक हे ।

(छ) हमनी राजा के सिपाही ही ।

(ज) घोडसबरन ओहे जगह के नाम बतैलकइ ।

(झ) सोहन झुक के सलाम कैलकइ ।

(ञ) चोरबा के जी में डर घुस्सल़ हल ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उपसर्ग

जब अपन स्वतन्त्र अर्थ न रहल सब्द के अंस कउनो मूल सब्द के शुरु में जुट के नयाँ सब्द के निर्माण करइत हे आउ सब्दके अर्थ में अन्तर अनइत हे, तब अइसन सब्द के अंस उपसर्ग कहबइत हे । जइसे: निडर, सजीव, बिदेह ।

इहाँ मूल सब्द 'डर', 'जीव', 'देह', में क्रमश: 'नि', 'स', 'वि' उपसर्ग जुट के नयाँ सब्द बनल हे ।

मगही भाषा संस्कृत भाषा से प्रभावित रहला से एह भाषा में संस्कृत उपसर्ग भी पर्याप्त मात्रा में प्रचलित हे ।

उपसर्ग से सब्द निर्माण के कुछ उदाहरण

उपसर्ग 'अ' से बनल सब्द

उपसर्ग		सब्द		व्यत्पन्न सब्द
अ	+	काल	=	अकाल
अ	+	चुक	=	अचुक
अ	+	चेत	=	अचेत
अ	+	समान	=	असमान
अ	+	बेर	=	अबेर
अ	+	ज्ञान	=	अज्ञान
अ	+	योग्य	=	अयोग्य
अ	+	हित	=	अहित

उपसर्ग 'अति' से बनल सब्द

अति	+	रिक्त	=	अतिरिक्त
अति	+	रथी	=	अतिरथी
अति	+	क्रमण	=	अतिक्रमण
अति	+	इत	=	अतीत
अति	+	उक्ति	=	अत्युक्ति
अति	+	सार	=	अतिसार
अति	+	सय	=	अतिसय

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अति	+	अन्त	=	अत्यन्त
अति	+	आचार	=	अत्याचार
अति	+	आधुनिक	=	अत्याधुनिक

उपसर्ग 'अधि' से बनल सब्द

अधि	+	कार	=	अधिकार
अधि	+	अक्ष	=	अध्यक्ष
अधि	+	वेसन	=	अधिवेसन
अधि	+	आय	=	अध्याय
अधि	+	नायक	=	अधिनायक
अधि	+	अयन	=	अध्ययन
अधि	+	आत्म	=	अध्यात्म
अधि	+	राज्य	=	अधिराज्य

उपसर्ग 'अन' से बनल सब्द

अन	+	अर्थ	=	अनर्थ
अन	+	आदर	=	अनादर
अन	+	आस्था	=	अनास्था
अन	+	मेल	=	अनमेल
अन	+	पढ	=	अनपढ
अन	+	मोल	=	अनमोल
अन	+	जान	=	अनजान
अन	+	गिन्ती	=	अनगिन्ती

८५५.८५२
रता १५१म

उपसर्ग 'अनु' से बनल सब्द

अनु	+	भव	=	अनुभव
अनु	+	चर	=	अनुचर
अनु	+	वाद	=	अन्वाद
अनु	+	रुप	=	अनुरुप
अनु	+	मान	=	अनुमान
अनु	+	शासन	=	अनुशासन
अनु	+	करण	=	अनुकरण
अनु	+	छेद	=	अनुच्छेद

दर्ता नं 22030
काठमाण्डौ, नेपाल

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उपसर्ग 'अप' से बनल सब्द

अप	+	यस	=	अपयस
अप	+	व्यय	=	अपव्यय
अप	+	अंग	=	अपांग
अप	+	सब्द	=	अपसब्द
अप	+	मान	=	अपमान
अप	+	हरण	=	अपहरण
अप	+	वाद	=	अपवाद
अप	+	सकुन	=	अपसकुन

उपसर्ग ...अभि से बनल सब्द

अभि	+	योग	=	अभियोग
अभि	+	ज्ञान	=	अभिज्ञान
अभि	+	आस	=	अभ्यास
अभि	+	भावक	=	अभिभावक
अभि	+	साप	=	अभिसाप
अभि	+	रुचि	=	अभिरुचि
अभि	+	नय	=	अभिनय
अभि	+	प्राय	=	अभिप्राय

उपसर्ग 'अव' से बनल सब्द

अव	+	नति	=	अवनति
अव	+	गुण	=	अवगुण
अव	+	मुल्यन	=	अवमुल्यन
अव	+	धारणा	=	अवधारणा
अव	+	रोध	=	अवरोध
अव	+	गत	=	अवगत

उपसर्ग 'आ' से बनल सब्द

आ	+	मरण	=	आमरण
आ	+	गमन	=	आगमन

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आ	+	लोक	=	आलोक
आ	+	जन्म	=	आजन्म
आ	+	रक्ष	=	आरक्ष
आ	+	कृति	=	आकृति

उपसर्ग 'उत्' से बनल सब्द

उत्	+	गार	=	उदगार
उत्	+	चारण	=	उच्चारण
उत्	+	तेजक	=	उत्तेजक
उत्	+	पति	=	उत्पति
उत्	+	प्रेरणा	=	उत्प्रेरणा
उत्	+	कर्ष	=	उत्कर्ष

उपसर्ग 'उप' से बनल सब्द

उप	+	कार	=	उपकार
उप	+	देस	=	उपदेस
उप	+	अध्यक्ष	=	उपाध्यक्ष
उप	+	कुलपति	=	उपकुलपति
उप	+	हार	=	उपहार
उप	+	नाम	=	उपनाम

उपसर्ग 'कु' से बनल सब्द

कु	+	कर्म	=	कुकर्म
क	+	बुद्धि	=	कुबुद्धि
कु	+	चेष्टा	=	कुचेष्टा
कु	+	ख्यात	=	कुख्यात
कु	+	दृष्टि	=	कुदृष्टि
कु	+	रीति	=	कुरीति
कु	+	मार्ग	=	कुमार्ग
कु	+	लत	=	कुलत

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उपसर्ग 'गैर' से बनल सब्द

गैर	+	सरकारी	=	गैरसरकारी
गैर	+	संबैधानिक	=	गैरसंवैधानिक
गैर	+	कानुनी	=	गैरकानुनी
गैर	+	साहित्यिक	=	गैरसाहित्यिक

उपसर्ग 'दुर' से बनल सब्द

दुर	+	आत्मा	=	दुरात्मा
दुर	+	घटना	=	दुर्घटना
दुर	+	गन्ध	=	दुर्गन्ध
दुर	+	दसा	=	दुर्दसा
दुर	+	आसय	=	दुरासय
दुर	+	जन	=	दुर्जन
दुर	+	गुण	=	दुर्गुण
दुर	+	गम	=	दुर्गम

उपसर्ग 'दुस्' से बनल सब्द

दुस्	+	चरित्र	=	दुष्चरित्र
दुस्	+	स्वप्न	=	दुस्स्वप्न
दुस्	+	साहस	=	दुस्साहस
दुस्	+	कर्म	=	दुष्कर्म

उपसर्ग 'न' से बनल सब्द

न	+	आस्तिक	=	नास्तिक
न	+	हर	=	नहर
न	+	गण्य	=	नगण्य
न	+	जायज	=	नजायज

उपसर्ग 'ना' से बनल सब्द

ना	+	मर्द	=	नामर्द
ना	+	लायक	=	नालायक

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ना	+	बालक	=	नाबालक
ना	+	जवाव	=	नाजवाव

उपसर्ग 'नि' से बनल सब्द

नि	+	वास	=	निवास
नि	+	गम	=	निगम
नि	+	आय	=	न्याय
नि	+	बन्ध	=	निबन्ध
नि	+	रोग	=	निरोग
नि	+	योग	=	नियोग

उपसर्ग 'निर' से बनल सब्द

निर	+	जन	=	निर्जन
निर	+	जल	=	निर्जल
निर	+	अन्तर	=	निरन्तर
निर	+	विकल्प	=	निर्विकल्प

उपसर्ग 'परा' से बनल सब्द

परा	+	जय	=	पराजय
परा	+	अस्त	=	परास्त
परा	+	क्रम	=	पराक्रम
परा	+	वर्तन	=	परावर्तन

उपसर्ग 'प्र' से बनल सब्द

प्र	+	हार	=	प्रहार
प्र	+	अध्यापक	=	प्राध्यापक
प्र	+	आरम्भ	=	प्रारम्भ
प्र	+	सिद्ध	=	प्रसिद्ध

उपसर्ग 'प्रति' से बनल सब्द

प्रति	+	वाद	=	प्रतिवाद

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रति	+	क्रिया	=	प्रतिक्रिया
प्रति	+	निधि	=	प्रतिनिधी
प्रति	+	फल	=	प्रतिफल

उपसर्ग 'बद' से बनल सब्द

बद	+	नाम	=	बदनाम
बद	+	नियत	=	बदनियत

उपसर्ग 'बे' से बनल सब्द

बे	+	चैन	=	बेचैन
बे	+	ताल	=	बेताल
बे	+	काम	=	बेकाम
बे	+	सुर	=	बेसुर
बे	+	ढंग	=	बेढंग
बे	+	इमान	=	बेइमान

उपसर्ग 'वि' से बनल सब्द

वि	+	देस	=	विदेस
वि	+	ज्ञान	=	विज्ञान
वि	+	कृति	=	विकृति
वि	+	मान	=	विमान

उपसर्ग 'स' से बनल सब्द

स	+	चेत	=	सचेत
स	+	हर्ष	=	सहर्ष
स	+	हित	=	सहित
स	+	आदर	=	सादर

उपसर्ग 'सम्' से बनल सब्द

सम	+	योग	=	संयोग
सम	+	देस	=	संदेस

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सम	+	हार	=	संहार
सम	+	गठन	=	संगठन
सम	+	वाद	=	संवाद
सम	+	कल्प	=	संकल्प

उपसर्ग 'सह' से बनल सब्द

सह	+	योग	=	सहयोग
सह	+	यात्री	=	सहयात्री
सह	+	कर्मी	=	सहकर्मी
सह	+	सचिव	=	सहसचिव

उपसर्ग 'सु' से बनल सब्द

सु	+	योग	=	सुयोग
सु	+	बोध	=	सुबोध
सु	+	मार्ग	=	सुमार्ग
सु	+	पुत्र	=	सुपुत्र

उपसर्ग 'हर' से बनल सब्द

हर	+	दिन	=	हरदिन
हर	+	एक	=	हरेक
हर	+	सम्भव	=	हरसम्भव
हर	+	पल	=	हरपल

अभ्यास

१. उपसर्ग केकरा कहल जाइत हे ? उदाहरण सहित बताव ।

२. निम्नलिखित सब्द से उपसर्ग हटा के देखाव ।

अधिकरण, अधिराज, अत्यन्त, अवलोकन, अपहरण, उत्कर्ष, अभिभावक ।

३. निम्नलिखित उपसर्ग मिला के सब्द बनाव ।

स, अन, उत्, नि, वि, कु, स्व, सह ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रत्यय

अपन खास अर्थ न रहल आउ आधार तत्व के पछाडी जुट के नयाँ सब्द निर्माण करेओला भाषिक एकाई के प्रत्यय (Suffix) कहल जाइत हे।

प्रत्यय जोड़ल जाएओला आधार तत्व के हिसाब से सब्द निर्माण के प्रक्रिया दू प्रकार के होइत हे। कृदन्त आउ तद्धितान्त।

१. कृदन्त

धातु में जोड़ल जाएओला प्रत्यय के कृत प्रत्यय कहल जाइत हे। कृत प्रत्यय लगा के निर्माण भेल सब्द के कृदन्त सब्द कहल जाइत हे आउ अइसन प्रत्यय लगा के सब्द निर्माण करेके प्रक्रिया के कृत प्रक्रिया कहल जाइत हे।

धातु	+	**कृत प्रत्यय**	=	**कृदन्त सब्द**
पढ	+	आइ	=	पढाइ
लिख	+	आइ	=	लिखाइ

कृत प्रक्रिया से विभिन्न वर्ग के सब्द निर्माण हो सकइत हे बाँकि मुख्य रुप से कृदन्त सब्द दु प्रकार के होइत हे। कृदन्तीय संज्ञा आउ कृदन्तीय विसेषण।

(क) कृदन्तीय संज्ञाः धातु में प्रत्यय जोड़के बनल संज्ञा के कृदन्तीय संज्ञा कहल जाइत हे।

भाववाचक कृदन्तीय संज्ञा

धातु		**प्रत्यय**		**संज्ञा**
फेर	+	आ	=	फेरा
लड	+	आइ	=	लड़ाइ
उठ	+	आन	=	उठान
देख	+	नाइ	=	देखनाइ

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कर्तृवाचक कृदन्तीय संज्ञा:

खेल	+	आडी	=	खेलाडी
देख	+	निहार	=	देखनिहार
लड	+	आका	=	लडाका
पी	+	अक्कड	=	पिअक्कड

करणवाचक कृदन्तीय संज्ञा

रेत	+	ई	=	रेती
कस	+	औटी	=	कसौटी
कर	+	नी	=	करनी
झुल	+	आ	=	झुला

कर्मवाचक कृदन्तीय संज्ञा

ओढ	+	अना	=	ओढना
चढ	+	औना	=	चढौना
देख	+	नहुत	=	देखनहुत
पहिर	+	अन	=	पहिरन

(ख) कृदन्तीय विसेषण: धातु मे प्रत्यय जोड के बनल विसेषण के कृदन्तीय विसेषण कहल जाइत हे । जइसे:

कर्तृवाचक कृदन्तीय विसेषण

लड़	+	अक्का	=	लडक्का
चल	+	आक	=	चलाक
बुझ	+	अक्कड	=	बुझक्कड
लुट	+	हरा	=	लुटहरा

कर्मवाचक कृदन्तीय विसेषण

खरीद	+	उआ	=	खरीदुआ
चढ	+	औआ	=	चढौआ

भूतकालिक क्रियाद्योतक कृदन्त विसेषण

सुन	+	अल	=	सुनल
खस	+	अल	=	खसल
देख	+	अल	=	देखल
पढ	+	अल	=	पढल

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वर्तमानकालिक क्रियाद्योतक कृदन्त विसेषण

कह	+	इत	=	कहइत
सुन	+	इत	=	सुनइत
पढ	+	इत	=	पढइत
लिख	+	इत	=	लिखइत

भबिश्यतकालिक क्रियाद्योतक कृदन्त विसेषण

सुन	+	तइ	=	सुनतइ
पढ	+	तइ	=	पढतइ
देख	+	तइ	=	देखतइ
लिख	+	'तइ	=	लिखतइ

२. तद्धितान्त

संज्ञा सर्वनाम आउ विसेषण जइसन आधार सब्दके साथ प्रत्यय लगाके सब्द निर्माण करेके प्रक्रिया कें तद्धितप्रक्रिया कहल जाइत हे। आधार सब्द में जोड़ल जाएओला प्रत्यय के तद्धित प्रत्यय आउ नयाँ निर्माण होवे ओला सब्द के तद्धितान्त सब्द कहल जाइत हे। जइसे:

आधार सब्द		तद्धित प्रत्यय		तद्धितान्त सब्द
लोटा (संज्ञा)	+	इया	=	लोटिया
जे (सर्वनाम)	+	इसे	=	जइसे
उज्जर (विसेषण)	+	का	=	उजरका

तद्धितान्त प्रक्रिया से बनल सब्द मुख्य रुप से तीन तरह के होइत हे:

(१) संज्ञा (२) विसेषण (३) अव्यय।

आधार सब्द		प्रत्यय		तद्धितान्त सब्द
लोह	+	आर	=	लोहार
तेल	+	इ	=	तेली
सांप	+	एरा	=	संपेरा
मुँह	+	गर	=	मुँहगर
पिक	+	दानी	=	पिकदानी

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पर	+	आइ	=	पराइ
घर	+	आन	=	घरान
हर	+	वाह	=	हरवाह
चुडी	+	वला	=	चुडीवला
बुढ	+	आरी	=	बुढारी
चोर	+	ई	=	चोरी
सुन्दर	+	ता	=	सुन्दरता
चोडा	+	आइ	=	चौडाइ
मोट	+	आइ	=	मोटाइ
बुद्धि	+	आर	=	बुद्धियार
तेल	+	आह	=	तेलाह
राष्ट्र	+	इय	=	राष्ट्रिय
बीच	+	अला	=	विचला
पडोस	+	इया	=	पडोसिया
घर	+	ऐया	=	घरैया
लोक	+	इक	=	लौकिक
जुआ	+	आरी	=	जुआरी
धान	+	हर	=	धनहर
दक्षिन	+	आहा	=	दक्षिनाहा

अभ्यास

१. प्रत्यय केकरा कहल जाइत हे ?

२. तद्धित प्रक्रिया कइसे होइत हे ?

३. निम्नलिखित तद्धित प्रत्यय लगाके नया सब्द वनाव ।

वला, इय, ऐया, इक, आन, एरा, आर, आहा

४. निम्नलिखित सब्द से तद्धित प्रत्यय अलगियाव ।

चौडाइ, जुवाडी, सफाई, भरिया, होसियार, दुःखी, दैनिक, दयालु, क्रोधित, अन्तिम, मित्रता, बुद्धिमान, बलवान, वर्गीय, स्वर्गीय, जलमय ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

समास

दूगो वा दूगो से बेसी स्वतन्त्र सब्द मिलके एगो सब्द बनावे के प्रक्रिया के समास (Compounding) कहल जाइत हे । एह प्रक्रिया से बनल नयाँ सब्द सामासिक सब्द कहबइत हे आउ सामासिक सब्द के अर्थ स्पष्ट होवे के हिसाब से अलगावल गेल रुप के समास विग्रह कहल जाइत हे । जइसे:

पाँच रत्न के समूह	=	पंचरत्न
(समास विग्रह)		(सामासिक सब्द)

समास प्रक्रिया में सब्द के अर्थ के प्रधानता आउ ओकरा सबके जोडे के तरीका के आधार से समास छ प्रकार के हाइत हे ।

(१) तत्पुरुष	(२) द्विगु	(३) कर्मधारय
(४) अव्ययीभाव	(५) द्वन्द्व	(६) बहुव्रीहि ।

(१) तत्पुरुष: जब दूगो सब्दन के बीच समास करे बेर विभक्ति के लोप होवे के साथे पिछला सब्द के अर्थ प्रधान होइत हे, ऊ तत्पुरुष समास कहबइत हे । द्वितीया, तृतीया, चतुर्थी, पंचमी, षष्ठी आउ सप्तमी विभक्ति के लोप होवेओला चिन्ह के आधार से तत्पुरुष समास छ प्रकार के होइत हे ।

क) द्वितीया तत्पुरुष

काम के चोर	=	कामचोर
तामा के घैल	=	तमघैल
मन के मोहक	=	मनमोहक
हृदय के विदारक	=	हृदयविदारक

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ख) तृतीया तत्पुरुष

बुद्धि से हीन	=	बुद्धिहीन
बाढ से पीडित	=	बाढपीड़ित
आश्चर्य से चकित	=	आश्चर्यचकित
मति से हीन	=	मतिहीन

ग) चतुर्थी तत्पुरुष

देस के लेल भक्ति	=	देसभक्ति
पूजा के लेल सामग्री	=	पूजासामग्री
आराम के लेल कुर्सी	=	आरामकुर्सी
भन्सा के लेल घर	=	भन्साघर

घ) पंचमी तत्पुरुष

देस से निकाला	=	देसनिकाला
जन्म से रोगी	=	जन्मरोगी
पाप से मुक्त	=	पापमुक्त
पथ से भ्रष्ट	=	पथभ्रष्ट

ङ) षष्ठी तत्पुरुष

बचत के खाता	=	बचतखाता
मामा के घर	=	मामाघर
राष्ट्र के सेवक	=	राष्ट्रसेवक
राजा के दरवार	=	राजदरवार

च) सप्तमी तत्पुरुष

बन में भोज	=	बनभोज
नर में उत्तम	=	नरोत्तम
दान मे= वीर	=	दानवीर
प्रेम में मग्न	=	प्रेममग्न

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(२) द्विगु समास

जंउन समास में प्रथम सब्द संख्यावाचक आउ पिछला सब्द के अर्थ के प्रधानता रहइत हे, ऊ द्विगु समास कहवइत हे । जइसे:

चार वेद के समूह	=	चतुर्वेद
पाँच तत्व के समूह	=	पंचतत्व
छओ कोण के समूह	=	षटकोण
पाँच शील के समूह	=	पंचशील
तीन भुजा के समूह	=	त्रिभुज
सात ऋषि के समूह	=	सप्तर्षि

(३) कर्मधारय समास

विसेषण क्रे विसेषण के साथ, विसेषण के संज्ञा के साथ आउ संज्ञा के संज्ञा के साथ पिछला सब्द के प्रधानता होवे के हिसाब से होवेओला समास के प्रक्रिया कर्मधारय कहल जाइत हे । अइसन प्रक्रिया से वनल सामासिक सब्द में आगे के सब्द विसेषण के काम करइत हे । जइसे:

कमल समान नयन	=	कमलनयन

जोड़ल जायवला सब्दन के आधार से कर्मधारय समास पाँच प्रकार के होइत हे

(क) विसेषण आउ विसेषण के बीच

लाल पियर	=	लालपियर
शीत उष्ण	=	शीतोष्ण
वुढ पुरान	=	वुढपुरान

(ख) विसेषण आउ संज्ञा के बीच

महान कबि	=	महाकवि
लाल मोहर	=	लालमोहर

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(ग) संज्ञा आउ संज्ञा के बीच

अणु बम	=	अणुवम
गुरु देव	=	गुरुदेव
आन दिन	=	अनदिना
हिम गिरी	=	हिमगिरी

(घ) उपमा आउ उपमेय के बीच

प्राण सदृश प्रिय	=	प्राणप्रिय
सिंह सदृश नाद	=	सिंहनाद
चन्द्र सदृश विन्दु	=	चन्द्रविन्दु

(ङ) आरोप आउ आरोप्य के बीच

दुख रुपी समुद्र	=	दुखसमुद्र
जीवन रुपी दीप	=	जीवनदीप
चरण रुपी कमल	=	चरणकमल
भव रुपी सागर	=	भवसागर

(४) अव्ययीभाव समास

अव्यय के साथ अव्यय इया अन्य सब्द आउ अन्य सब्दन के बीच योग हो के अव्यय अर्थ निकलेओला सामासिक सब्द बने के प्रक्रिया अव्ययीभाव समास कहल जाइत हे । एह प्रक्रिया में पिछला सब्द के अर्थ प्रधान रहइत हे । जइसेः

हर घडी	=	हरघडी.
यथा शक्ति	=	यथाशक्ति

जोडेओला सब्दन के आधार से अव्ययीभाव समास चार प्रकार के होइत हे ।

(क) अव्यय आउ अव्यय के बीच के योग

जखनी तखनी	=	जखनीतखनी

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(ख) अव्यय आउ अन्य सब्द के बीच के योग

आज्ञा अनुसार	=	आज्ञानुसार
जन्म भर	=	जन्मभर
विधि पूर्वक	=	विधिपूर्वक

(ग) संज्ञा आउ संज्ञा के बीच के योग

साझ विहान	=	सांझविहान
रात दिन	=	रातदिन

(घ) विसेषण आउ विसेषण के बीच के योग

अइसन वइसन	=	अइसनवइसन
जइसन तइसन	=	जइसनतइसन
एक एक	=	एकाएक

(५) द्वन्द्व समास

दूगो चाहे दूगो से बेसी समान महत्व के सब्दन के बीच समास कयला पर दुनू सब्द के अर्थ प्रधान रहे के प्रक्रिया द्वन्द्व समास कहवइत हे। एह प्रक्रिया में सब्दन के बीच के संयोजक के लोप हो जाइत हे। अइसे जोडेओला सब्द कि तो ओइसने किसीम के, कि तो विपरीतार्थक होइत हे। जइसे:

माय आउ बाप	=	मायबाप
नुन आउ तेल	=	नुनतेल
अकास आउ पताल	=	अकासपताल
सुख आउ दुख	=	सुखदुख

(६) बहुब्रीहि समास

जउन सामासिक सब्द में कउनो पद के प्रधानता न रहइत हे बलुक अन्य पद प्रधान होइत हे आउ सामासिक पद विसेषण रहइत हे तेकरा बहुब्रीहि समास कहल जाइत हे। जइसे:

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मुल्य न हे जेकर = अमुल्य (दुर्लभ वस्तु)

दश गो आनन हे जेकरा = दसानन (रावण)

बहुब्रीहि समास चार प्रकार के होइत हे ।

(१) सम्वन्धार्थी बहुब्रीहि

पाँच महल रहल = पंचमहला

पीत हे अम्बर जेकर = पीताम्वर

(२) उपमार्थी बहुब्रीहि

चन्द्रमा जइसन मुख = चन्द्रमुखी

गोबर के गणेश जइसन = गोवरगणेश

(३) परिमाणार्थी बहुब्रीहि

दश गज चौडाइ रहल = दसगज्जा

तीन गो कोण रहल = त्रिकोण

(४) निषेधार्थी बहुब्रीहि

लाज न रहल = निर्लज

विकल्प न रहल = निर्विकल्प

अभ्यास

१) समास के तात्पर्य की हे ?

२) समास के भेद उदाहरण सहित बताव ।

३) निम्न लिखित सब्द कउन समास हे ?

प्रतिदिन, चरणकमल, दालभात, भाइबाप, गंगाजल, लम्वोदर ।

४) निम्नलिखित सामासिक सब्द के विग्रह कऽ के देखाव ।

देसविदेस, पंचतत्व, दसगज्जा, पीताम्बर, चन्द्रमुखी

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

द्वित्व

एकेगो सब्द के दोहरा के नयाँ सब्द बनावे के पद्धति द्वित्व (Reduplication) कहल जाइत हे । एह हिसाब से बनल नयाँ सब्द द्विरुक्त कहवइत हे । संज्ञा, सर्वनाम, विसेषण, क्रिया आउ अव्यय सब्द से द्विरुक्त सब्द बन सकइत हे । जइसे:

बन	+	बन	=	बनबन (संज्ञा)
केकर	+	केकर	=	केकरकेकर (सर्वनाम)
लाल	+	लाल	=	काललाल (विसेषण)
देख	+	देख	=	देखदेख (क्रिया)
कुच्छो	+	कुच्छो	=	कुच्छोकुच्छो (अव्यय)

द्वित्व के प्रकार

सब्द दोहरावे खनी कहीं पुरा सब्द दोहराइत हे, कहीं कुछ अंस दोहराइत हे आउ कहीं सब्द के ध्वनि में परिवर्तन भी होइत है । एह आधार से द्वित्व तीन प्रकार के होइत हे ।

(क) पूर्ण द्वित्व

पुरा सब्द जइसने के तइसने दोहरा के नयाँ संब्द बनेके प्रक्रिया पूर्ण द्वित्व कहल जाइत हे । जइसे:

बार	+	बार	=	बारबार
खेत	+	खेत	=	खेतखेत
सुन	+	सुन	=	सुनसुन
आगे	+	आगे	=	आगेआगे
संगे	+	संगे	=	संगेसंगे
जगह	+	जगह	=	जगहजगह
छोट	+	छोट	=	छोटछोट
वड़का	+	बड़का	=	बड़कावड़का

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(ख) आंसिक द्वित्व

द्वित्व होवेओला सब्द के कुछ अंस मात्र दोहरा के नयाँ सब्द बनेके प्रक्रिया आंसिक द्वित्व कहल जाइत हे। जइसे:

सल्लाह	+	सल्लाह	=	सरसल्लाह
गहना	+	गहना	=	गरगहना
झगडा	+	झगडा	=	झैझगडा

(ग) आपरिवर्तित द्वित्व

सब्द दोहरावे खनी सब्दके ध्वनि में परिवर्तन आउ कउनो ध्वनी लोप होके नयाँ सब्द बनेके प्रक्रिया आपरिवर्तित द्वित्व कहवइत हे। जइसे:

घर	+	घर	=	घरसर
काट	+	काट	=	काटकुट
कलम	+	कलम	=	कलमसलम
पैंचा	+	पैंचा	=	ऐंचापैचा
जोर	+	जोर	=	जोरजार
टुट	+	टुट	=	टुटफुट
पुछ	+	पुछ	=	पुछपाछ

अभ्यास

१. द्वित्व केकरा कहल जाइत हे ?

२. द्वित्व केतना प्रकार के होइत हे ?

३. १० गो द्वित्व सब्द लिखके वाक्य में प्रयोग करऽ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सन्धि

दूगो सब्द जोड़के एकेगो नयाँ सब्द के निर्माण सन्धि (Binding) कहल जाइत हे । सन्धि प्रक्रिया में पहिलेके सब्द के अन्तिम ध्वनि आउ पिछ्लका सब्द के सुरु के ध्वनि आपस में जोड़ल जाइत हे । एह प्रक्रिया में केतना ध्वनि के परिवर्तन भी हो जाइत हे । जइसे: सुख + अन्त = सुखान्त । एह सन्धि में पहिलेके 'सुख' के अन्तिम ध्वनि 'अ' आउ पिछ्लका सब्द 'अन्त' के सुरुके ध्वनि 'अ' मिलके 'आ' में परिवर्तित भेल हे ।

सन्धि तीन प्रकार के होइत हे । स्वर सन्धि, व्यंजन सन्धि आउ विसर्ग सन्धि ।

(१) स्वर सन्धि

जब अगिला सब्द के अन्तिम स्वर पिछ्ला सब्दके सुरु के स्वर से मिलइत हे, ओकरा स्वर सन्धि कहल जाइत हे जइसे:

विद्या	+	आलय	=	विद्यालय	(आ + आ = आ)
हिम	+	आलय	=	हिमालय	(अ + आ = आ)
विद्या	+	अर्थी	=	विद्यार्थी	(आ + अ = आ)
सुख	+	अन्त	=	सुखान्त	(अ + अ = आ)
रेखा	+	अन्त	=	रेखान्त	(आ + अ = आ)
कवि	+	इन्द्र	=	कवीन्द्र	(इ + इ = ई)
महा	+	इन्द्र	=	महेन्द्र	(आ + इ = ए)
चन्द्र	+	उदय	=	चन्द्रोदय	(अ + उ = ओ)
सदा	+	एव	=	सदैव	(आ + ए = ऐ)
जदि	+	अपि	=	जद्यपि	(इ + अ = य)
परम	+	औषधि	=	परमौषधि	(अ + औ = औ)
महा	+	औषधि	=	महौषधि	(आ + औ = औ)
सु	+	आगत	=	स्वागत	(उ + आ = वा)
सुर	+	इन्द्र	=	सुरेन्द्र	(अ + इ = ए)

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(२) व्यंजन सन्धि

अगिला सव्द के अन्तिम व्यंजन आउ पिछला सव्द के सुरु के स्वर इया व्यंजन के मेल व्यंजन सन्धि कहवइत हे। जइसे:

दिक्	+	अन्त	=	दिगन्त
उत्	+	लास	=	उल्लास
उत्	+	नति	=	उन्नति
उत्	+	चारण	=	उच्चारण
षट्	+	आनन	=	षडानन
जगत्	+	ईश	=	जगदीश
सत्	+	भाव	=	सद्भाव
दिक	+	भ्रम	=	दिग्भ्रम
सम्	+	तोष	=	सन्तोष
सम्	+	कल्प	=	संकल्प
सम्	+	सार	=	संसार
उत्	+	गम	=	उदगम
जगत्	+	नाथ	=	जगन्नाथ
सत्	+	आचार	=	सदाचार
दिक्	+	अम्बर	=	दिगम्बर

(३) विसर्ग सन्धि:

विसर्ग के साथ स्वर इया व्यंजन के मेल विसर्ग सन्धि कहवइत हे।

जइसे:

दु:	+	गति	=	दुर्गति
नि:	+	रोग	=	निरोग
नि:	+	चय	=	निश्चय
नि:	+	कर्ष	=	निष्कर्ष

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

निः	+	रस	=	निरस
यशः	+	धरा	=	यशोधरा
तपः	+	वन	=	तपोवन
वयः	+	बृद्ध	=	वयोबृद्ध
सरः	+	वर	=	सरोवर
मनः	+	रथ	=	मनोरथ
मनः	+	ज	=	मनोज
अधः	+	गति	=	अधोगति

अभ्यास

१. सन्धि के परिभाषा बताव ।

२. उदाहरण सहित सन्धि के भेद बताव ।

३. निम्नलिखित सब्द के सन्धि कर ।

जदि + अपि, महा + इन्द्र, चन्द्र + उदय, निः + चल, अधः + गति ।

४. निम्नलिखित सब्द के सन्धिविच्छेद कर ।

दिगन्त, उन्नति, जगदीश, निश्चल, जद्यपि, उच्चारण, महोदय ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विराम चिन्ह

मगही भाषा देवनागरी लिपि में लिखे के प्रचलन हे । एह लिपि में वर्ण के अलावा चिन्ह के भी प्रयोग होइत हे । ई चिन्ह सव विराम चिन्ह कहवइत हे । मगही भाषा के लिखाइ में प्रयोग में रहल विराम चिन्ह के प्रयोग ठीक ठीक जगह पर करे के परइत हे । एह चिन्ह सबके परिचय आउ प्रयोग निम्न प्रकार के हे ।

१. अल्प विराम (,)

वाक्य में अल्प समय के विश्राम खातिर अल्प विराम के प्रयोग होइत हे । एकर प्रयोग के स्थिति निम्न प्रकार हे ।

(क) वाक्य में एके तरह के सब्द वा वाक्यांस दूगो वा दूगो से वेसी रहलापर ।

नाम – गाइ, भैंसी, भेडा, बकरी, सब चरइत हे ।

विसेषण – ऊ सज्जन, इमान्दार आउ दयालु हे ।

क्रियापद – चिरई उड़इत हे, अकास में जाइत हे आउ रमण करइत हे ।

वाक्यांस – रौद उगला पर गर्मी लागेके, पसीना आवेके आउ आसकति लागेके समस्या हो जाइत हे ।

(ख) सम्बोधन के बाद – हे राम, सबके रक्षा कर ।

(ग) उद्धरण चिन्ह रहल उपवाक्य से पहिले – राम कहलकइ, “आइ हम न जा सकबइ” ।

२. अर्द्ध विराम (स)

अल्प बिराम से कुछ वेसी आउ पुर्ण विराम से कुछ कम समय के विश्राम खातिर अर्द्ध विराम के प्रयोग होइत हे । जइसे:

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अनेक वाक्य एके वाक्य में जोड्ला पर सुरु के प्रत्येक वाक्य के पश्चात

– पानी न परलइ **स** खेती न हो सकलई **स** घर में अन्न न है **स** अब केना लोग बँचतइ ।

३. पूर्ण विराम (।)

प्रत्येक वाक्य के अन्त में पूर्ण विराम के प्रयोग होइत हे ।

हरि पढतइ । ऊ पढे में तेज हइ ।

द्रष्टव्य : प्रश्नवाचक आउ विस्मयादिवोधक चिन्ह अयला पर पुर्ण विराम के प्रयोग न होइत हे ।

४. प्रश्नवाचक (?)

प्रत्येक प्रश्नवाचक वाक्य के अन्त में प्रश्नवाचक चिन्ह के प्रयोग होइत हे ।

तोहर नाम की है ?

तों की खएवें ?

५. विस्मयादिबोधक (৭)

हर्ष, विषाद, शोक, क्रोध आदि भावना के अभिव्यक्ति रहल पद के पश्चात विस्मयादिबोधक चिन्ह के प्रयोग होइत हे ।

अहा ৭ कते नीमन फुलवारी हे ।

कउनो भावपूर्ण सम्बोधन इया व्यक्ति विसेष के सम्बोधन कयला पर भी एह चिन्ह के प्रयोग होइत हे ।

हे राम ৭ तों ई कि देखइल ।

मोहन ৭ तुँ सबेरे पहुँच जइहे ।

(६) सापेक्ष विराम (:) (:–) (–)

कउनो सूची वा अर्थ स्पष्ट करे खातिर एकर प्रयोग होइत हे । जइसे:

काल के तीन भेद हे: वर्तमान, भूत आउ भविष्यत ।

नीच के प्रश्न सबके उत्तर वताब:

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(७) उद्धरण (" ") (' ')

केकरो कथन जइसने के तइसने राखे खातिर उद्धरण चिन्ह के प्रयोग होइत हे ।

राम कहलकइ, " सीता स्कुल न जतइ । "

पुस्तक के नाम, कविता, कथा आदि के शीर्षक, पुरस्कार के नाम आदि लिखे बेर एकठा उद्धरण चिन्ह (' ') के प्रयोग होइत हे ।

हम तुलसीदास के 'विनय–पत्रिका ' पढले ही ।

कउनो सब्द विसेष पर ध्यानाकर्षण खातिर भी एकठा उद्धरण चिन्ह के प्रयोग होइत हे । जइसेः

ऊ 'गाडी' के जगह पर 'गारी' लिखले रहे ।

(८) योजक (–)

दूगो सब्द के जोडे खातिर एकर प्रयोग होइत हे । जइसेः

मान – अपमान, धनी – गरीब, सुख – दुख ।

एक पंक्ति में कउनो सब्द न अँटला पर कागज के दहिना कात में भी एकर प्रयोग होइत हे ।

जइसेः

ओकर कहब हम तो सुनलिअइ बाकि
कुछ लोग न सुनलकइ । काहेसेकि ओ-
करा बोलइत बेर माइक बिगड़ गेल हलई ।

(९) कोष्ठ चिन्ह (( ))

(क) वाक्य में कउनो पद विसेष के अर्थ स्पष्ट करे खातिर एकर प्रयोग होइत हे । जइसेः

आकास मे तारामण्डल (तारा के समूह) देखार हो गेलइ ।

(ख) संवाद, मनोवाद, आदि में अभिनय के संकेत करे खातिर वा परिवेश बुझावे खातिर भी एकर प्रयोग होइत हे । जइसेः

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

राम - (घर सुनसान हे, दिया जरइत हे) ई सब की हो रहल हे ?

ग) क्रम संख्या बुझावे खातिर भी एकर प्रयोग होइत हे बाँकि क्रम संख्या बुझावे के समय में अंक के बाद विन्दु राखेके चलन भी हे । जइसे:

(१) १.

(२) २.

(३) ३. आदि ।

१०. लाधव (संक्षेप) (.)

कउनो सब्द के संक्षेप में लिखे खातिर लाधव (संक्षेप) चिन्ह के प्रयोग होइत हे । जइसे:

डा. (डाक्टर)

प्रा. (प्राध्यापक)

पं. (पंडित)

स्व. (स्वर्गीय)

११. दीर्घताबोधक (') (ऽ)

कउनो सब्द के उच्चारण में दीर्घता बोध करावे खातिर एकर प्रयोग होइत हे । जइसे:

भनसा भ'ऽ गेलइ ।

हम रुपैया द ' देलिअइ ।

१२. तिर्यक (/)

विकल्प देखावे खातिर एकर प्रयोग होइत हे । जइसे:

पृथ्वी के पर्यायवाची सब्द धरती/धरा/धरणी भूमि होइत हे ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

१३. ऐजन (,,)

उपर के पंक्ति के बात नीचका पंक्ति मे भी दोहरावे खातिर एकर प्रयोग होइत हे ।

जइसे:

क्र.सं.	विवरण	मुल्य
१)	साग	४।-
२)	प्याज	,,
३)	आलु	६।-

अभ्यास

१. विराम चिन्ह के प्रयोग काहे होइत हे ?
२. विभिन्न विराम चिन्ह के उदाहरण सहित परिचय लिख ।
३. एकठा आउ दोहरा उद्धरण चिन्ह के प्रयोग में भिन्नता बताव ।
४. क्रम संख्या बतावेला कौन कौन चिन्ह के प्रयोग होइत हे ?
५. अल्पविराम, अर्द्धविराम आउ पूर्ण विराम के प्रयोग में भिन्नता बताव ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

धातु आउ क्रिया

क्रिया पद के मूल रुप धातु (Root) कहवइत हे । धातु से कउनो काम, घटना इया अवस्था के बोध होइत हे । लेकिन एकर सीधा वाक्य में प्रयोग न होइत हे । धातु में प्रत्यय जोड़के क्रियापद आउ कृदन्त सब्द बनइत हे ।

क्रियापद में रहल धातु पता लगावे ला पहिले क्रिया के मूल रुप में बदले परइत हे । एकर बाद क्रियापदके मूल रुप से 'अब' प्रत्यय हटावे परइत हे । 'अब' प्रत्यय हटा देला पर धातु बाँकी रहइत हे ।

जाइत	–	जायब	–	जा
खाइल	–	खायब	–	खा
सुतल	–	सुतब	–	सुत्
लिखैत	–	लिखब	–	लिख्
पढइत	–	पढब	–	पढ्

बनावट के आधार से धातु के प्रकार

बनावट के आधार से धातु तीन प्रकार के होइत हे । सामान्य धातु, नामधतु आउ प्रेरणार्थक धातु । सामान्य धातु मूल धातु हे बाँकि नामधातु आउ प्रेरणार्थक धातु व्युत्पन्न धातु हे ।

(क) सामान्य धातु:

प्रत्यय न जोड़ के बनल धातु के मूल रुप सामान्य धातु कहबइत हे ।

जइसे: जा, आ, लिख्, देख्, पढ़, खा आदि ।

अइसने धातु में प्रत्यय जोड़ के क्रियापद बनावल जाइत हे ।

जा	+	इत	=	जाइत
लिख्	+	लन	=	लिखलन

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(ख) नाम धातुः

संज्ञा, विसेषण इया अव्यय सव्द में प्रत्यय लगाके बनल व्युत्पन्न धातु के नामधातु कहल जाइत हे। नाम धातु बनावे ला संज्ञा विसेषण इया अव्यय सव्दमें 'आयब' प्रत्यय लगावल जाइत हे। जइसे:

माटी	–	मटिआयब
लाज	–	लजायब
ठंढा	–	ठंढायब
गरम	–	गरमायब
मोट	–	मोटायब
पातर	–	पतरायब
वाहर	–	बहरायब
भितर	–	भितरायब
वरवर	–	बरबरायब

(ग) प्रेरणार्थक धातुः

सामान्य धातु में 'बायब' प्रत्यय लगा के बनल व्युत्पन्न धातु के प्रेरणार्थक कहल जाइत हे। अइसन धातु से वनल क्रियापद प्रेरणार्थक रुप में प्रयोग में अवइत हे। जइसे:

पढ	+	बायव	=	पढबायब
लिख	+	बायव	=	लिखबायव
उठ्	+	बायव	=	उठवायव
चिर्	+	बायव	=	चिरवायव

अन्त्य के आधार से धातु के प्रकार

धातु में रहल अन्तिम वर्ण के आधार से धातु दू प्रकार के होइत हे।

(१) व्यंजनान्त (२) स्वरान्त।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(१) व्यंजनान्त धातुः

व्यंजन वर्ण से अन्त्य भेल धातु के व्यंजनान्त कहल जाइत हे। अइसन धातु के अन्तिम वर्ण में हलन्त लगल रहइत हे। जइसे:

लिख्	देख्	क्राट्
पढ्	मार्	सुन्

(२) स्वर वर्ण से अन्त्य भेल धातु स्वरान्त कहबइत हे। अइसन धातु के अन्तिम वर्ण व्यंजन में मिलल रहइत हे। जइसे:

जा	ले
आ	दे

क्रिया के प्रकार

अर्थ के हिसाब से क्रिया दू तरह के होइत हे।

मुख्य आउ सहायक क्रिया।

(१) मुख्य क्रियाः वाक्य में प्रयोग भेल विभिन्न क्रिया में जउन क्रिया के मुख्य भूमिका रहइत हे, ऊ मुख्य क्रिया कहल जाइत हे। जइसे:

राम रात में अबेर तक पढते रहलइ।

एह वाक्य में मुख्य काम पढेके हे, उहे से 'पढते' मुख्य क्रिया हे।

(२) सहायक क्रियाः अर्थ स्पष्ट करेला मुख्य क्रिया के साथे आयल क्रिया सहायक क्रिया कहल जाइत हे। जइसे: बाघ बहुत जोर से गरजइत हल।

एह वाक्य में मुख्य क्रिया 'गरजइत' के अर्थ स्पष्ट करेला सहयोगी क्रिया के रुप में 'हल' आयल हे। इहे से 'हल' सहायक क्रिया हे।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सहायक क्रिया के रूप

बर्तमानकाल

उत्तम पुरुष	–	ही, हीं, हकी, हिकूं, हिए हिअइ, हिअउ, (स्त्री - हियौं)
मध्यम पुरुष	–	हँ, हें, हे, है, हहीं, हहुन, हहूँ, हहू, हहो, हहिन ह, हकिन, हकीं हखुन, (स्त्री – ही)
अन्य पुरुष	–	हउ, हो, हइ, हे, हं, ह, हस, हकई, हकउ, है, हों, हकै, हहिन हैं, हइन, हई, हहीं, हखिन, हथ, हथिन, हथी, हथुन, हथू, (स्त्री-हखिन, हखिनी, हथिन, हथिनी)

भूतकाल

उत्तम पुरुष	–	हलुं, हलीं, हली, हलिए
मध्यम पुरुष	–	हले, हलहिन हल, हलहुन, हलँ हले, हला, हलह, हलहू, हलहो, हलहूँ, हलहीं
अन्य पुरुष	–	हल, हलहिन, हलन, हलथिन, हलै, हलहीं हलखिन, हलथी

भविष्यत काल

उत्तम पुरुष	–	होब, होबइ, होबउ
मध्यम पुरुष	–	होबँ, होबें, होबा, होबे, होबही, (स्त्री-होबीं, होबी)
अन्य पुरुष	–	होई होत, होतइ, होतउ, (स्त्री-होती)

मुख्य क्रिया के भेद

वाक्य संरचना के हिसाब से कर्म के आधार पर मुख्य क्रिया के दू भेद हे।

(१) सकर्मक (२) अकर्मक।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(१) सकर्मक क्रियाः

जउन क्रिया के साथ कर्म रहैत हे इया जउन क्रिया के साथ कर्म रहे के सम्भावना रहैत हे, ऊ सकर्मक क्रिया कहल जाइत हे। सकर्मक क्रिया के करेवाला भी कर्ते होइत हे बाँकी क्रिया के फल कर्म पर पर इत हे। जइसेः मोहन चिठी 'लिखइत' हे। एह वाक्य में लिखइत क्रिया सकर्मक हे। काहेसेकि ओकरा साथे कर्म हे 'चिठी'। अइसेही 'श्याम खाइत हे' एह वाक्य मे 'खाइत' क्रिया के साथ कउनो खाद्य बस्तु के कर्म के रुप में रहे के सम्भावना हे इहे से 'खाइत' सकर्मक क्रिया हे।

(२) अकर्मक क्रियाः

जउन क्रिया के साथ कर्म के सम्भावना न रहइत हे, इयाने जउन क्रिया के फल कर्ता पर ही परइत हे, ऊ अकर्मक क्रिया कहल जाइत हे। जइसेः 'मोहन हँसइत हे ', एह वाक्य में हँसइत क्रिया अकर्मक हे काहेसे कि न तो 'हँसइत' क्रिया के साथ कर्म हे आउ न एकर सम्भवना हे।

बनौट के आधार से मुख्य क्रिंया के भेद

बनौट के आधार से क्रिया के दू भेद होइत हे।

(क) **अव्युत्पन्न क्रियाः** जउन क्रिया के संग व्युत्पादक प्रत्यय न रहइत हे ऊ क्रिया अव्युत्पन्न क्रिया कहल जाइत हे। एकर मतलब ई हे कि अव्युत्पन्न क्रिया में मूल धातु मात्र रहैत हे। ओकरा संग में कउनो सार्थक प्रत्यय न रहइत हे। जइसेः देख, खा, पढ, सुत् आदि।

(ख) **व्युत्पन्न क्रियाः** जउन क्रिया में व्युत्पन्न प्रत्यय लगल रहइत हे से व्युत्पन्न क्रिया कहबइत हे। इयाने व्युत्पन्न क्रिया के मूल धातु में प्रत्यय लगल रहइत हे। जइसेः

देख (मूलधातु) आव (प्रत्यय) . देखाब।

पढ् (मूलधातु) + आब (प्रत्यय) = पढाव।

व्युत्पन्न क्रिया चार प्रकार के होइत हेः

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(क) **प्रेरणार्थक क्रियाः** जउन क्रिया से एक व्यक्ति दोसरा के कर्म करेके प्रेरणा दइत हे से प्रेरणार्थक क्रिया कहल जाइत हे । जइसेः मालिक नोकर से काम करवा रहल हे ।

प्रेरणार्थक क्रिया के दू स्वरुप होइत हे।

मुख्य क्रिया	**प्रेरणर्थक-१**	**प्रेरणार्थक-२**
कर	कराव	करवाव्
देख	देखाव	देखबाव
काट	कटाव	कटवाव
पढ	पढाव	पढवाव

(ख) **कर्मवाच्य क्रियाः** कउनो सकर्मक क्रिया के कर्ता हटा देला से कर्म स्वयं कर्ता बन जाइत हे, अइसन जगह में सकर्मक क्रिया के धातु में आ प्रत्यय लगइत हे । जइसेः राम चिठी लिखइत हे । चिठी लिखाइत हे । अइसन व्युत्पन्न क्रिया कर्मवाच्य क्रिया कहवइत हे ।

(ग) **नाम धातु क्रियाः** कुछ क्रिया नाम में आएव प्रत्यय जोड के निर्माण कइल जाइत हे । जइसेः दुबर बनब .दुबराइब, आरि बनाएब. अरिआएव, जुतासे पीटब . जुतिआएब, दाम लगाएब. दमाएव आदि । अइसन व्युत्पन्न क्रिया नाम धातु क्रिया कहल जाइत हे ।

(घ) **ध्वन्यात्मक क्रियाः** ध्वनि समूह के अनुकरण से बनावल गेल क्रिया ध्वन्यात्मक क्रिया कहवइत हे । जइसेः चनचनाएव, गड़गड़ाएब, टनटनाएब आदि ।

(ङ) **विस्तारित क्रियाः** विस्तारित क्रिया तीन प्रकार से वनइत हे ।

अ) **मुख्य क्रिया + सहायक क्रियाः** अइसन जगह में मुख्य क्रिया कृदन्त के रुप मे रहइत हे आउ सहायक क्रिया पक्ष, काल, संगति ला रुपान्तरित होइत हे । जइसेः

मनीष किताव <u>पढ लेलकइ</u> ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आ) **संज्ञा + क्रियाः** कउनो जगह संज्ञा से मिल के भी क्रिया के विस्तार होइत हे । जइसेः भगवान के नाम स्मरण कयलक ।

इ) **विसेषण + क्रियाः** विसेषण से मिल के भी क्रिया के विस्तार होइत हे ।

जइसेः हरि अपन घर साफ कयलक ।

अभ्यास

१. क्रिया केकरा कहल जाइत हे ? व्याख्या कर ।

२. अर्थ के हिसाबसे क्रिया केतना प्रकार के होइत हे? उदाहरण सहित बताब ।

३. निम्न लिखित वाक्य से मुख्य क्रिया अलगिआब ।

(क) ऊ सदखन हँसते रहइत हे ।

(ख) ओकनी के खुब चले परल ।

(ग) रमेश निमन किताव किनलकई ।

(घ) हम ओकरा सहर घुमइली ।

(ङ) हम आजुए घर पहुँच जाएब ।

(च) मनीष रातमें अबेर के सुतल रहे ।

(छ) हम तोरा पत्र लिखइत रहबउ ।

४. व्युत्पत्ति के हिसाव से क्रिया केतना प्रकार के होइत हे ?

५. निम्नलिखित सब्द से प्रेरणार्थक क्रिया, कर्मवाच्य क्रिंया, नाम धातु क्रिया तथा विस्तारित क्रिया वनाब ।

काट, चिर, झुला, उठ, पढ, लिख, स्मरण, साँझ ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

काल

क्रियापद में वर्णन भेल काम वा अवस्थाके समय काल (Tense) कहल जाइत हे। अभिव्यक्ति के समय के आधार से काल के निर्धारण होइत हे । अभिव्यक्ति के समय में काम सुरु भेल, ओहसे पहिले हो गेल आउ तेकर बाद सुरु होवे के आधार से काल छुटिआवल जाइत हे । क्रियापद में धातुके पछाडी जोड्ल रहल प्रत्यय से काल के परिचय मिलइत हे । जइसेः

हम देखुँ (वर्तमान)

हम देखलुँ (भूत)

हम देखब (भविष्यत)

उपर के वाक्य के क्रियापद में धातु संग जोड़ल गेल प्रत्यय से क्रिया के समय के बोध होइत हे । पहिला वाक्य में काम तत्क्षण होइत अवस्था, दोसरा वाक्य में काम हो चुकल अवस्था आउ तेसरा वाक्य में काम भविष्य में होबे के बोध होइत हे ।

काल के भेद

काल तीन प्रकार के होइत हेः वर्तमानकाल, भूतकाल, आउ भविष्यतकाल ।

बर्तमान काल

क्रिया के जउन रुप से बीत रहल समय में कउनो काम होवे के बोध होइत हे, ऊ वर्तमान काल कहवइत हे । जइसेः

हम देखेही ।

हम देखैत ही ।

हम देखतुं है ।

अवस्था के हिसाब से बर्तमान काल के तीन भेद हे ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

१) सामान्य बर्तमान काल (Simple Present)

वर्तमान काल के ओइसन रुप, जेकरा से कउनो क्रिया के वर्तमान काल में होवे के सामान्य अवस्था के ज्ञान होइत हे ।

जइसे: हम देख ही । हमनी देख हीं ।

तों देख ह । ऊ देख हइ ।

उपर के वाक्य से क्रिया के बर्तमान काल में होवे के सूचना अवश्य मिलैत हे, बाँकि बर्तमान के कउनो अवस्था विसेष के ज्ञान न होइत हे ।

२) तात्कालिक वर्तमान काल (Present Continuous)

कउनो काम अभिव्यक्ति के समय में हो रहल जइसन तात्कालिक अवस्था के बोध करावेओला तात्कालिक वर्तमान कहल जाइत हे । एकरा अपुर्ण वर्तमान भी कहल जाइत हे । जइसे:

हम देखैत ही । हमनी देखैत ही ।

तों देखैत ह । ऊ देखैत हइ ।

उपर के वाक्य के क्रियापद से काम के तात्कालिक अवस्था के ज्ञान होइत हे ।

३) संदिग्ध वर्तमान काल

कउनो काम अभिव्यक्ति के समय में होवे के सम्भावना रहल अवस्था के ज्ञान करावेओला संदिग्ध वर्तमान कहवइत हे । जइसे: विद्यार्थी सब पढइत होतइ । ऊ देखइत होतइ ।

उपर के वाक्य के क्रियापद से वर्तमान में काम होवे के सम्भावना रहेके अवस्था के ज्ञान होइत हे ।

भूतकाल

क्रियापद के जउन रुप से बीतल समय के ज्ञान होइत हे । ऊ भूतकाल कहवइत हे । जइसे: ऊ गिरल ।

अवस्था के हिसाव से भूतकाल के छओ भेद हे ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(१) सामान्य भूतकाल (Simple Past)

कउनो काम पहिले वा बितल समय में होवे के सामान्य अवस्था बुझावेवला सामान्य भूत कहल जाइत हे । जइसे: हम देख हलुँ ।

(२) आसन्न भूतकाल

कउनो काम तत्काल समाप्त होवे के अवस्था आसन्न भूत कहबइत हे । जइसे: ऊ देखलक हे । हम खयली हे ।

(३) अपूर्ण भूतकाल (Past Continuous)

कउनो काम वितल समय में हो रहल रहे जइसन अपूर्ण अवस्था बतावेओला क्रियापद के पक्ष अपूर्ण भूत कहबइत हे । जइसे: हम देखैत हलुँ ।

(४) पूर्ण भूतकाल (Past Perfect)

कउनो काम वितल समय में पुरा भेल आउ तेकर असर भी वर्तमान न रहल अवस्था के बोध करावेओला क्रियापद के पक्ष पूर्ण भूत कहबइत हे । जइसे: हम देखलूँ हल ।

(५) संदिग्ध भुतकाल

कउनो काम वितल समय में होवे के आशंका बोध करावेवला अवस्था संदिग्ध भूत कहल जाइत हे । जइसे: राम देखले होतंइ ।

(६) हेतुहेतुमद भूतकाल

कउनो हेतु इया कारण रहला से काम भुतकाल में सम्पन्न होवे के अवस्था हेतुहेतुमद भूते कहबइत हे । जइसे: हम देखतुँ तो राम से वात करतुँ ।

भविष्यत काल

क्रियापद से कउनो काम भविष्य में होवे के अवस्था के बोध करविओला भविष्यत काल कहल जाइत हे । जइसे: राम देखतइ ।

भविष्यत काल के चार पक्ष होइत हे ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(क) सामान्य भविष्यत काल

क्रियापद से कउनो काम भविष्य में होवे के सामान्य अवस्था के बोध करावेओला सामान्य भविष्यत काल कहवइत हे । जइसे: राम पढतइ ।

(ख) अपूर्ण भविष्यत काल

जउन क्रियापद से भविष्य में काम होइत रहल अवस्था के बोध होइत हे, ओकरा अपूर्ण भविष्यत कहल जाइत हे । जइसे: अमरेस गवइत रहतइ ।

(ग) पूर्ण भविष्यत काल

जउन क्रियापद से भविष्य में काम सम्पन्न हो गेल रहल अवस्था के बोध होइत हे, ओकरा पूर्ण भविष्यत काल कहल जाइत हे । जइसे: सीता चिठी लिखले रहतइ ।

(घ) सम्भाव्य भविष्यत काल

जउन क्रियापद से भविष्य में काम होवे के सम्भावना प्रकट होइत हे, ओकरा सम्भाव्य भविष्यत काल कहल जाइत हे । जइसे: राम प्रथम श्रेणी में पास हो सकइत हे ।

अभ्यास

१. काल के परिभाषा लिख ।

२. काल के उदाहरण सहित भेद बताव ।

३. काल के भेद-उपभेद वताबेवला पाँच पाँच गो वाक्य बनाव ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

क्रिया के भाव

भाषा प्रयोग करेओला व्यक्ति के मनोभाव स्पष्ट करे ला बदलल जायओला क्रिया के रुप भाव इया अर्थ कहवइत हे । भाव के अभिव्यक्ति क्रियापद के भिन्नता से होइत हे । अइसन मनोभाव में सामान्य, आज्ञा, इच्छा, सम्भावना आउ संकेत परइत हे ।

हम पढैत ही ।	–	सामान्य भाव
तों पढ ।	–	आज्ञा भाव
तोरा पढ परउक ।	–	इच्छा भाव
तों पढवही ।	–	सम्भावना भाव
ऊ पढतई तो नीमन होतइ ।	–	संकेत भाव

एह हिसाब से क्रिया के भाव पाँच प्रकार के होइत हे ।

(१) सामान्य भाव

वक्ता के सामान्य मनोभाव अभिव्यक्त करेओला क्रियापद सामान्य भाव के रहइत हे । सामान्य भाव में निश्चित अर्थ होइत हे, जउन कउनो बात के जानकारी देत हे । जइसे:

क) हम पाठ पढइत ही ।

ख) ऊ चिठी लिखइत हल ।

ग) तों सिनेमा देखले ।

घ) महेश गीत गवइत हे ।

ङ) राम क्याम्पस जाइत हे ।

च) प्रमोद घर न गेलइ ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उपर के क्रियापद कउनो काम, घटना चाहे स्थिती के विषय मे होवे के इया न होवे के जानकारी दैत हे ।

प्रश्न व्यक्त करेओला वाक्य के क्रियापद भी सामान्य भाव के होइत हे । एह वाक्य से खास बात के जानकारी खोजल गेला से एकरा सामान्य भाव में राखल गेल हे । जइसे:

१) हमनी कहिया स्कूल जाएब ?

२) ऊ केना खसलई ?

३) तों कखनी अयले ?

४) रीता केना विमारी भेलइ

५) ई सब कहाँ के आदमी हे ?

समान्य भाव के क्रियापद सब पुरुष, सब काल आऊ पक्ष में प्रयोग हो सकइत हे ।

(२) आज्ञा भाव

वक्ता के मनोभाव कउनो काम खातिर केकरो आज्ञा/आदेस वा अनुरोध के रुप मे प्रकट भेला पर क्रियापद आज्ञा भाव में रहइत हे । आज्ञा भाव के क्रियापद द्वितीय पुरुष में ही रहैत हे आऊ काल के भेद भी न होइत हे । जइसे:

अ) तुँ लिख ।

आ) तों पढ ।

इ) सुषमा १ नीमन से याद कर ।

ई) राम १ सबके पढा ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(३) इच्छा भाव

कामना, अनुमति, आशीर्वाद, उपदेस, विनती, प्रार्थना, निवेदन आदि भाव व्यक्त करेओला क्रियापद इच्छा भाव में रहइत हे। एह में आज्ञा भाव से हलुका रुप के आदेस रहइत हे । इच्छा भाव के काम तत्काल करेके अवस्था न होइत हे । एकर प्रयोग तीनो पुरुष में होइत हे । लेकिन काल के भेद न होइत हे । जइसे:

तोहर मनोरथ पुरा होतउ ।

भगवान सबके कल्याण करथी ।

(४) सम्भावना भाव

सम्भावना, अनुमान, आदि अनिश्चय के भाव बुझावे ला प्रयोग कयल गेल क्रियापद के रुप सम्भावना भाव कहबइत हे । एह में काम होवे के इया न होवे के कउनो ठेकान न रहइत हे । जइसे:

१) दुसरा साल हम जाँच देवइ ।

२) ओतनी बेर तो सुतल रहवे ।

३) अगिला हप्ता ऊ चिठी पढतइ ।

उपर के वाक्य भविष्य में होवेओला काम के सम्भावना व्यक्त कर इत हे । बाँकि भूतकाल आउ वर्तमान काल के क्रियापद भी सम्भावना भाव में राखल जा सकइत हे । एकरा लेल क्रियापद में उहे अनुसार के परिवर्तन करेके परइत हे ।

क) ऊ खयले होतइ ।

ख) राम पढइत होतइ ।

ग) छोटकी सुत रहल होतइ ।

घ) ओतनी बेर ऊ गेल रहतइ ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(५) संकेत भाव

काम आउ कारण संगे आवेओला भाव प्रकट होवेओला क्रियापद संकेत भाव में रहइत हे । एह में दूगो क्रियापद रहइत हे, एगो काम आउ दुसरा से कारण देखावल जाइत हे । जइसे:

ऊ अतइ तो नाच होतइ ।

कल़म टुटतंउ तो दुसर खरिदिहे ।

घडी रहतइ तो समय बुझा जतइ ।

अभ्यास

१. क्रिया के भाव इया़ अर्थ कहला से की बुझाइत हे ?

२. क्रिया क़े भाव कउन आधार से फरक होइत हे ?

३. क्रिया के विभिन्न भाव के उदाहरण सहित परिचय बताव ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कारक

वाक्य में क्रियापद से सम्बन्ध राखेओला नामिक सब्द (नाम, सर्वनाम, विसेषण) के रुप कारक (Case) कहवइत हे। नाम, सर्वनाम आउ विसेषण के रुप क्रिया से सम्बन्धित होके कर्ता, कर्म, करण आदि के भूमिका निर्वाह कके वाक्य के अर्थयुक्त वनबइत हे।

जइसे: मोहन सोहन के पथर से मारलकइ।

एह वाक्य में मारलकइ क्रियापद से तीन गो नामिक सब्द 'मोहन', 'सोहन' के 'पथर से' सम्बन्धित होके वाक्य में अपन अपन भूमिका निर्वाह कयले हे।

भूमिका करेवला सब्द	**क्रियापद**	**काम के भूमिका**
मोहन	मारलकइ	काम करेवाला – कर्ता
सोहन के	मारलकइ	असर परेओला – कर्म
पथर से	मारलकइ	काम के साधन – करण

उपर के वाक्य में क्रियापद से विभिन्न रुप में सम्वन्ध राखेवला 'मोहन' 'सोहन' पथर कारक हे। अइसेही एह सब्दन के साथ रहके क्रियापद से सम्बन्ध राखे में सहयोग करेओला सब्दन के साथ के चिन्ह विभक्ति कहल जाइत हे।

विभक्ति के अपन अर्थ न रहैत हे आउ न ई स्वन्त्र रुपसे अकेले प्रयोग होइत हे।

कारक आठ प्रकार के होइत हे।

(१) कर्ता (२) कर्म (३) करण (४) सम्प्रदान

(५) अपादान (६) सम्बन्ध (७) अधिकरण (८) सम्वोधन।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(१) कर्ता कारक (Nominative Case)

वाक्य में काम करेवला नामिक सब्दके कर्ताकारक कहल जाइत हे । जइसे: रमेश बैठल हे । एह वाक्य में काम करेओला 'रमेश' हे उहे से 'रमेश' कर्ता हे । कर्ताकारक में कउनो विभक्ति न लगैत हे । अर्थात कर्ताकारक

विभक्तिहीन होइत हे । कुछ आउ उदाहरण:-

<u>मोहन</u> घर न गेलइ ।

<u>सीता</u> एगो संखा पैलकइ ।

(२) कर्मकारक (Accusative Case)

जेकरा पर क्रिया के फल परइत हे ओकरा कर्मकारक कहल जाइत हे । कर्मकारक में विभक्ति के चिन्ह 'के' लगइत हे, ई द्वितीया विभक्ति कहबइत हे बाँकी कर्मकारक सब्द निर्जीव रहला पर विभक्ति न भी लगइत हे । जइसे:

<u>हम</u> श्याम के मिठाइ देबइ ।

हरि <u>किताब</u> पढतइ ।

(३) करणकारक (Instrumental Case)

जउन कारक से क्रिया के सम्पादन में प्रयोग होवेवला साधन, कारण इया हेतु स्पष्ट होइत हे ऊ करणकारक कहबइत हे । करण कारक में तृतीया विभक्ति एँ, 'से' द्वारा लगइत हे । जइसे:

मनीष <u>कलम से</u> चिठी लिखलन ।

'एँ' प्रयोग कयला पर आकारान्त के 'आ' लोप हो जाइत हे, ई आउ ऊ ह्रस्व हो जाइत हे । जइसे: घोरा–घोरें । एकर बहुवचन न होइत हे ।

(४) सम्प्रदान कारक (Dative Case)

वाक्य में क्रिया के सम्पादन के लक्ष्य वा काम के प्रयोजन बन के आवेओला नामिक सब्द सम्प्रदान कारक कहबइत हे । सम्प्रंदान कारक

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

में चतुर्थी विभक्ति 'के लागि' 'के लेल' 'ला', (के) खातिर लगइत हे। जइसे:

सीता पुजा के लेल फूल अनतइ।

(५) अपादानकारक (Ablative Case)

जउन कारक से सम्वन्ध टुटेके वोध होइत हे, ऊ अपादान कारक कहवइत हे। काम सुरु होवे के समय, अलग होवे के स्थान, वा वस्तु के स्रोत के रुप में एह कारक के प्रयोग होइत हे। एहमे पंचमी विभक्ति 'से' 'सें' 'सतीं' लगइत हे। जइसे:

गाछ से फल खसल।

(६) सम्बन्धकारक

जउन कारक से कारकीय सम्वन्ध के ज्ञान होइत हे से सम्बन्ध कारक कहबइत हे। एह कारक में षष्ठी विभक्ति क्, के, केर, केरा, केरी (स्त्री) लगइत हे। जइसे: दशरथ राम के पिता हलन।

'क्' के प्रयोग कयला पर 'क्' से पहिले के स्वर ह्रस्व हो जाइत हे। जइसे: घोरा – घोरक्। व्यंजनान्त संज्ञापदऩ के साथ 'क्' अयला पर एह में 'अ' संयुक्त हो के 'क' के हलन्त हट जाइत हे। जइसे: फल–फलक।

(७) अधिकरण कारक

जउन कारक क्रिया के आधार होइत हे ऊ अधिकरण कारक कहबइत हे। एह कारक मे सप्तमी विभक्ति एँ, ए, मे, में, मों, पर लगइत हे। जइसे:

सोहन स्कुल में पढइत हे।

करण कारक जइसेही एह कारक मे भी 'ए' के प्रयोग से आकारान्त सब्द के 'आ' लोप हो जाइत हे। ईकारान्त के ई आउ ऊकारान्त के ऊ ह्रस्व हो जाइत हे। जइसे: घोरा – घोरे, माली– मालिए। एकरो बहुवचन न होइत हे।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(८) सम्बोधन कारकः

जउन कारक के क्रिया सम्पादन के लेल सम्वोधित कयल जाइत हे से सम्बोधन कारक कहबइत हे। एह कारक में रे, हे, ओ, हो, गे आदि सम्वोधन सूचक के प्रयोग नाम से पहिले होइत हे आउ नाम के बाद विस मयादिबोधक चिन्ह के प्रयोग होइत हे। जइसे:

हे भगवान ! सबके सुखी बनाव।

विभक्ति तालिका

कारक	विभक्ति	विभक्ति के नाम
कर्ता		
कर्म	के	द्वितीया
करण	एँ, ए, से, सें, सतीं, द्वारा	तृतीया
सम्प्रदान	ला, लेल, खातिर, लागी	चतुर्थी
अपादान	से, सें, सतीं	पंचमी
सम्वन्ध	के, केर, केरा, केरी (स्त्री)	षष्ठी
अधिकरण	एँ, ए,मे, में, मो, मों, पर	सप्तमी
सम्वोधन	रे, हे, ओ, हो, गे आदि (नाम से पहिले)*	

* नाम से पहिले सम्वोधन के चिन्ह प्रयोग भेला से एकर विभक्ति में गणना न होइत हे।

विभक्ति के प्रयोग सब्द के साथ

आकारान्त सब्द घोड़ा (पुलिंग)

	एकवचन	बहुवचन
कर्ता	घोड़ा	घोड़न
कर्म	घोड़ा के	घोड़न के
करण	घोड़ा से, सें	घोड़न से, सें
सम्प्रदान	घोड़ा के, लेल	घोड़न के, लेल

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अपादान	घोड़ा से, सें	घोड़न से, सें
सम्बन्ध	घोड़क्, घोडा केर, केरा, के	घोड़नक्, घोड़न केर, केरा, के
अधिकरण	घोड़ा मे,में,मो,मों, पर	घोड़न मे,में,मो,मों पर
सम्बोधन	घोड़ा*	

* घोडा सब्द पशुबोधक होवे के कारण सम्बोधन चिन्ह न लगल हे ।

अभ्यास

१. कारक के परिभाषा उदाहरण सहित लिख ।

२. कारक केतना तरह के होइत हे ? उदाहरण सहित लिख ।

३. से, के, के लेल, में, विभिक्ति के प्रयोग कके पाँच पाँच गो वाक्य बनाब ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रेरणार्थक क्रिया

केकरो से प्ररित हो के काम भेल बुझावे ला वाक्य, क्रियापद वा अन्य सब्द में होवेओला परिवर्तन प्रेरणार्थक कहल जाइत हे । प्रेरणार्थक क्रिया में काम कर्ता से न हो के कर्ताद्वारा दुसराके काम करेला प्रेरित कयल गेल स्पष्ट होइत हे ।

(क) राम पढइत हे

(ख) राम भाई के पढबइत हे ।

उपर के (क) वाक्य में राम अपने पढइत हे अर्थात पढेके काम कर्ता द्वारा होइत हे । वाक्य (ख) में राम अपने न पढइत हे । पढे खातिर दुसरा के प्रेरित करइत हे । उहे से वाक्य (क) के क्रिया 'पढइत' वाक्य (ख) में प्रेरणार्थक हो के 'पढबइत' बनल हे ।

प्रेरणार्थक क्रियापद में परिवर्तन के तरीका

प्रेरणार्थक क्रिया के दू स्वरुप होइत हे । पंहिलका स्वरुप में क्रियापद के धातु में 'आव' प्रत्यय लगावल जाइत हे आउ दुसरका स्वरुप में 'वाब' प्रत्यय लगावल जाइत हे । कउनो जगह पर धातु के रुप में हेरफेर भी हो सकइत हे ।

धातु	प्रेरणार्थक - १	प्रेरणार्थक - २
लिख	लिखाव	लिखबाव
फार	फराव	फरवाब
चल	चलाव	चलबाव

अभ्यास

१. प्रेरणार्थक क्रिया केकरा कहल जाइत हे ?

२. नीचे के धातु से प्रेरणार्थक क्रिया बनाव ।

देख्, लिख्, पढ्, चल्, बोल्, सुन् ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

करण आउ अकरण

सकारात्मक वाक्य के करण कहल जाइत हे आऊ नकारात्मक वाक्य के अकरण कहल जाइत हे। क्रियापद के अकरण से पुरा वाक्य निषेधात्मक बन जाइत हे। वाक्य मे करण आउ अकरण मुख्य रुप में ओकर समापक क्रियापद से बोध होइत हे।

करण वाक्यके अकरण मे आउ अकरण वाक्य के करण मे परिवर्तन करेके प्रक्रिया करण-अकरण वाक्यान्तरण कहल जाइत हे। करण से अकरण बनावे के कुछ प्रंक्रिया अइसन हे।

(१) वाक्य के करण से अकरण बनावे ला क्रिया पद से पहिले निषेधवाचक 'न' जोड्ल जाइत हे।

(२) मिश्र वाक्य में दूगो समापक क्रिया रहइत हे। एह वाक्य के अकरण बनावे ला दुनो क्रियापद से पहिले 'न' जोड़ल जाइत हे। वइसेही संकेतार्थ वाक्य में कार्य आउ कारण के सम्बन्ध रहे के कारण से ओकर असमापक आउ समापक दुनो क्रिया से पहिले न जोड के अकरण बनावल जाइत हे।

(३) संयुक्त वाक्य में जेतना समापक क्रियापद रहइत हे, सबके पहिले 'न' जोड्के अकरण बनावल जाइत हे।

(४) ध्रुव सत्य इया व्यवहारिक सत्य बात बतावेओला वाक्य के अकरण बनावेला दू बेर 'न' प्रयोग कके एगो बात के निषेध करेके प्रक्रिया कयल जाइत हे। अइसन दुगो अकरण प्रयोग से सामान्यतया सकारात्मक अर्थ भी निकलइत हे।

(५) वाक्य में प्रयोग भेल कुछ सब्द के कारण से समापक क्रिया से पहिले 'न' जोडे पर भी अपूर्ण अकरण होवे के स्थिति रहला पर ओइसन सब्द के परिवर्तन करे परइत हे। जइसे:

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तोरा हमेसा भूख लगइत हे ।

तोरा हमेसा भूख नलगइत हे । (अपुर्ण अकरण)

तोरा कभी भूख नलगइत हे । (पुर्ण अकरण)

अभ्यास

१. करण आंउ अकरण से तात्पर्य का हे ?

२. करण से अकरण कइसे बनावल जाइत हे ?

३. अपूर्ण अकरण से तात्पर्य का हे ?

४. निचाके वाक्य के अकरण बनाब ।

क) हम तोरा लड्का देबउ ।

ख) ओकरा बाद फिर आगे चललक ।

ग) हमर पिठवा पर बैठ जा ।

घ) ऊँट बैठ गेलई ।

ङ) मकई बडी फरल हलक ।

च) रस्ता में एगो नदी मिललइ ।

छ) उँटवा बडी मार खैलक ।

ज) हमर माय के दे दीहऽ ।

झ) ओकर दिन फिरल ।

ञ) सीतां हार गेलइ ।

ट) हमरा लोभावइत हे ।

ठ) बुढिया फूल ले गेलक ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वाच्य

वाक्य में कर्ता, कर्म आउ भाव के आधार से क्रियापद के रुप परिवर्तन करेके तरीका वाच्य (Voice) कहवइत हे । कर्ता, कर्म आउ भाव संगे क्रियापद के सम्वन्ध वदलला से वाक्य के अर्थ में कउनो परिवर्तन न होइत हे । वाच्य के अभिव्यक्ति क्रियापद से होइत हे । जइसे:

(१) राम किताव पढइत हे ।

(२) मोहन से चिठी लिखाइत हे ।

(३) आइ जवइ ।

पहिला वाक्य में कर्ता के सम्वन्ध क्रियापद से हे दुसर मे कर्म के सम्वन्ध क्रियापद से हे आउ तेसर में कर्ता आउ कर्म न हे वाकि क्रियापद के धातु के भाव उद्देश्य वनल हे । एह प्रकार से वाक्य में कभी कर्ता के प्रधानता रहइत हे, कभी कर्म के आउ कभी क्रियापद के भाव के । इहे विभिन्न वाक्यतत्व के प्रधानता के आधार से वाक्य के वाच्य तीन प्रकार के होइत हे ।

(क) कर्तृवाच्य (ख) कर्मवाच्य (ग) भाववाच्य ।

क) कर्तृवाच्य (Active Voice)

वाक्य में कर्ता के प्रधानता हो के कर्ता के लिङ्ग, वचन, पुरुष, तथा आदर अनुसार क्रियापद के रुप कर्तृवाच्य कहवइत हे । कर्तृवाच्य के क्रियापद सकर्मक वा अकर्मक दुनो हो सकइत हे ।

श्याम किताव पढइत हल ।

सीता भात खयली ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ख) कर्मवाच्य (Passive Voice)

वाक्य में कर्म के प्रधानता हो के कर्म के ही लिङ्ग, वचन, पुरुष आउ आदर अनुसार रहल क्रियापद के रुप कर्मवाच्य कहबइत हे। कर्मवाच्य हमेशा सकर्मक रहइत हे।

राम से चिठी लिखावल गेल।

ग) भाववाच्य (Impersonal Voice)

धातु के भाव इया सम्पन्न होवेओला काम के प्रधानता हो के वनल क्रियापद के रुप भाववाच्य कहबइत हे। भाववाच्य में धातु के अर्थ ही उद्देश्य होइत हे। भाववाच्य के क्रियापद अकर्मक होइत हे आउ तृतीय पुरुष,

एकवचन, पुलिंग तथा अनादर में रहइत हे। भाववाच्य के कर्ता में 'से' 'द्वारा' विभक्ति जुटैत हे आउ ऊ गौण हो जाइत हे, कभी लोप भी हो जाइत हे।

राम से हँसल न भेलइ।

वांच्य परिवर्तन

वाच्य में हेरफेर वा वाच्य के आधार से वाक्यरुपान्तरण करेके तरीका वाच्यपरिवर्तन कहबइत हे। सकर्मक क्रियापद रहेओला कर्तृवाच्य कर्मवाच्य में आउ अकर्मक क्रियापद रहेओला कर्तृवाच्य भाववाच्य में परिवर्तन होइत हे। कर्मवाच्य आउ भाववाच्य के कर्तृवाच्य में परिवर्तन होइत हे। वाच्य में परिवर्तन करेके वखत क्रिया के काल, पक्ष आउ भाव परिवर्तन करेके न होइत हे।

क) कर्तृवाच्य से कर्मवाच्य में परिवर्तन के तरीका

१. कर्ता में 'से' 'द्वारा' विभक्ति जोड़ के ओकरा करण कारक बनावल जाइत हे। कर्ता लोप भी हो सकइत हे।

२. क्रियापद के धातु में 'आ' जोडे के वाद अन्य प्रत्यय जोड़ल जाइत हे।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

३. कर्म के उद्देश्य वनावल जाइत हे अर्थात कर्म के लिंग, वचन पुरुष आउ आदर अनुसार ही क्रियापद रुपान्तरित होइत हे ।

४. क्रियापद के काल, भाव, पक्षमें परिवर्तन न होइत हे ।

५. कर्म मे रहल विभक्ति हटावल जाइत हे ।

६. आज्ञार्थ आ इच्छार्थ क्रियापद रहल धातु मे 'अल' जेड़ल जाइत हे ।

कर्तृवाच्य	**कर्मवाच्य**
हमनी गंगा नदीके पुल नयाँ प्रविधि के मानैत ही ।	गंगा नदी के पुल नयाँ प्रविधि के मानल जाइत हे ।
कामेश्वर माछ पालत ।	कामेश्वर द्वारा माछ पालल जायत ।
नटुवा नीमन नीमन गीत गएलक ।	नटुवा से नीमन नीमन गीत गावल गेल ।
हरि गुरु से व्याकरण सिखैत हे ।	हरि द्वारा गुरु से व्याकरण सिखल जाइत हे ।
विद्यार्थी गृहकार्य कयलक ।	विद्यार्थीद्वारा गृहकार्य कयल गेल ।
व्यास वेद लिखलन ।	व्यास द्वारा वेद लिखल गेल ।

ख) कर्तृवाच्य से भाववाच्य में परिवर्तन के तरीका

१. भाववाच्य में कर्ता राखे के आवश्यकता भेला पर 'से' अथवा 'द्वारा' जोड़ल जाइत हे । 'हम' के 'अपने' मे परिवर्तन कयल जाइत हे ।

२. क्रियापद के धातु में आ जोड्ल जाइत हे ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

३. क्रियापद के पुलिंग, एकवचन, तृतीय पुरुष आउ अनादर मे राखल जाइत हे

४. क्रियापद के काल पक्ष आउ भाव परिवर्तन न होइत हे ।

५. आज्ञार्थ आउ इच्छार्थ क्रियापद रहल धातु में 'अल' प्रत्यय जोड़के भाववाचक बनावल जाइत हे ।

कर्तृवाच्य	**भाववाच्य**
ऊ कखनी थकतइ ।	कखनी थकाइ लगतइ ।
हमनी मजा से सुतनी ।	मजा से सुतायल ।
हम तो सवेरे उठैत ही ।	अपना तो सवेरे उठाइत हे ।
अपने लहान बजार घुमली ।	लहान बजार घुमल गेल ।

ग) कर्मवाच्य से कर्तृवाच्य में परिवर्तन के तरीका

१. कर्ता में रहल 'से' 'द्वारा' विभक्ति हटा के ओकरा उद्देश्य बनावल जाइत हे ।

२. कर्ता लोप रहला पर इच्छानुसार जोडल जाइत हे ।

३. उद्देश्य बनल कर्म के कर्म कारक में राखल जाइत हे ।

४. क्रियापद के धातु से 'अल' हटावल जाइत हे ।

५. कर्ता के लिंग, वचन, पुरुष आउ आदर अनुसार क्रियापद राखल जाइत हे ।

कर्मवाच्य	**कर्तृवाच्य**
सीता द्वारा फूल रोपाइत हे ।	सीता फूल रोपइत हे ।
राम द्वारा गाँव के श्रद्धा कयल जाइत हे ।	राम गाँव के श्रद्धा करइत हे ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हमरा से लेख लिखाइत हल ।	हम लेख लिखैत हली ।
सोहन द्वारा राम पिटाइल रहे ।	सोहन राम के पिटले रहे ।

घ) भाववाच्य से कर्तृवाच्य में परिवर्तन के तरीका

१. कर्ता में लगल तृतीया विभक्ति हटावल जाइत हे । कर्ता न रहला पर राखल जाइत हे ।

२. कर्ता के उद्देश्य बनाओल जाइत हे ।

३. क्रियापद में लगल रहल 'अल' हटावल जाइत हे ।

४. कर्ता के लिंग, वचन, पुरुष आउ आदर अनुसार क्रियापद रखल जाइत हे ।

भाववाच्य	**कर्तृवाच्य**
मजा से सुतायल ।	आज मजा से सुतली ।
सवेरे उठायल ।	आज सवेरे उठली ।
बजार घुमल गेल ।	आज बजार घुमली ।
थकाइ लग गेल ।	आज थक गेली ।

वाच्य परिवर्तन न होवे के स्थिति

क) हे, है, हल आदि सहायक क्रिया मुख्य क्रिया के रुप में रहल हे तो वाच्य परिवर्तन न होइत हे । जइसे:

हरि सज्जन हल ।	पानी ठंडा हे ।
हमनी दुखी ही ।	तुँ डाक्टर ह ।
गंगा एगो नदी हे ।	हमनी मानव ही ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ख) गुण बोधक विसेषण के साथ रहल क्रिया के वांच्य परिवर्तन न होइत हे । जइसे: ऊँट बडकीगो हे । वनभोज मे नीमन लगल ।

विद्यार्थी नटखट हे । घर मे ठंढा हे ।

चाहं मिठगर हे । दवाइ तीत हे ।

ग) निम्नलिखित वाक्यन के भी वाच्य परिवर्तन न होइत हे

भुकम्प गेल । हमर पेट दुखाएल ।

देह से पसिना छुटल । गर्मी बढल आउ पानी परल ।

गाछ सुखल । हमरा मिठाइ नीमन लगल ।

अभ्यास

१. वाच्य की हे ?

२. वाच्य के केतना भेद हे, उदाहरण सहित बतावऽ ।

३. कर्मवाच्य आउ भाववाच्य में फरक बतावऽ ।

४. पाँच गो कर्तृवाच्य के वाक्य वना के ओकरा कर्मवाच्य आउ भाववाच्य बनावऽ ।

५. पाँच पाँच को कर्मवाच्य आउ भाव वाच्य के वाक्य बना के ओकरा कर्तृवाच्य में परिव्रर्तन कके देखावऽ ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पदसंगति

वाक्य में प्रयोग भेल पदन (सव्दन) के बीच के आपसी मेल पदसंगति (Concord) कहवइत हे । वाक्य के संज्ञा, सर्वनाम, विसेषण, आउ क्रियापद में लिंग, वचन, पुरुष तथा आदर के संगति न भेला से व्याकरण के अशुद्धि होइत हे । अइसन वाक्य से स्पष्ट अर्थ न निकलइत हे । जइसे:

सीता देखलक ।	(लिंग के संगति न रहल)
सीता देखली ।	(पदसंगति रहल)
हम लिखलक ।	(पुरुष के संगति नरहल)
हम लिखलुँ ।	(पदसंगति रहल)
बाबु हँसलक ।	(आदर के संगति न रहल)
वाबु हँसलन ।	(पदसंगति रहल)

उपर देखावल गेल पदसंगति न मिलल वाक्य व्याकरण के हिसाव से गलत हे। ओकर सुद्ध रुप ऊ वाक्य सबके साथे देल गेल हे ।

पद संगति मिलावे ला चार गो बात जरुरी हे ।

क) उद्देश्य आउ विधेय के संगति

वाक्य में रहल कर्ता आउ क्रियापद में लिंग, वचन, पुरुष आउ आदर के समानता रहब अनिवार्य होइत हे । एकरा लेल –

अ) वाक्य के कर्ता जउन लिंग, वचन, पुरुष आउ आदर मे रहइत हे, क्रियापद भी उहे लिंग, पुरुष, वचन आउ आदर मे रहेके चाही ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आ) एगो से बेसी कर्ता एके पुरुष के रहला से उहे पुरुष के बहुवचन के क्रियापद के प्रयोग करेके चाही ।

इ) एगो से बेसी कर्ता अलग अलग वचन लिंग आउ पुरुष के रहला पर प्रथम पुरुष के कर्ता हे तो ओकरे वहुवचन में क्रियापद रहइत हे ।

ई) कि,न, वा, इया जइसन विकल्प देखावेओला संयोजक से जुटल एगो से बेसी कर्ता हे तो क्रियापद के नजदीक रहल कर्ता के लिंग, वचन, पुरुष आउ आदर अनुसार ही क्रियापद के संगति मिलावे के चाही ।

उ) कर्मवाच्य में रहल वाक्य में कर्म के लिंग, वचन, पुरुष आउ आदर के आधार से ही क्रियापद रहइत हे ।

ख) संज्ञा आउ सर्वनाम के संगति

वाक्य में प्रयोग भेल संज्ञा जउन वचन आउ आदर मे हे, ओकर बदला में आवेवाला सर्वनाम भी उहे वचन आउ आदर में रहे के चाही ।

ग) विसेषण आउ विसेष्य के संगति

विसेषण में लिंग अनुसार परिवर्तन न होइत हे बाँकि वाक्य में प्रयोग भेल विसेष्य (संज्ञा) के जउन वचन आउ आदर हे विसेषण के वचन आउ आदर भी उहे रहेके चाही ।

घ) भेदक आउ भेद्य के संगति

षष्ठी विभक्ति लगल सब्द विसेषण होइत हे । एकरा भेदक भी कहल जाइत हे । भेदक से विसेषता देखावल गेल संज्ञा के भेद्य भी कहल जाइत हे । भेद्य जउन लिंग, वचन, आउ आदर में रहइत हे भेदक भी उहे लिंग, वचन, आउ आदर में रहेके चाही ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अभ्यास

१. पदसंगति से की तात्पर्य हे ? उदाहरण सहित वतावऽ ।

२. पदसंगति खातिर कौन कौन वात जरुरी होइत हे ?

३. नीचा के वाक्य के पदसंगति मिलावऽ:

क) एगो राजा हली ।

ख) वाघ बहुत जोर से गरजे हलथी ।

ग) हमनी मिजास सुध में न रहल ।

घ) हमर हाथ में तलवार हलन ।

ङ) डर के मारे हम कठुआ गेलइ ।

च) उपर से गिरइत हलखिन मथरी के बन्हइत हलै ।

छ) बाघ के विना देखले बघचेंडी लग गेलथी ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वाक्य

उद्देश्य आउ विधेय मिलके रचना भेल स्वतंत्र भाषिक एकाई के वाक्य (Sentence) कहल जाइत हे। वाक्य में जेकरा विषय में कुछ बात होइत हे, ऊ सब्द वा सब्दन के समूह उद्देश्य आऊ जे बात होइत हे ऊ सब्द वा सब्दन के समूह विधेय कहवैत है।

वाक्य में कम से कम एगो पूर्ण क्रिया अनिवार्य रुप में रहइत हे। जेकरा विधेय कहल जाइत हे। क्रियापद के काम करेवाला कर्ता ही सामान्यतया उद्देश्य के रुप में अवैत है। जइसे:

क) सुमन देखलक।

ख) तों देखले।

उपर के वाक्य मे 'देखलक' आ 'देखले' समापक क्रिया हे उहे से विधेय हे आ 'सुमन' आउ 'तों' क्रियापद से अभिव्यक्त भेल काम करेओला कर्ता भेला से उद्देश्य हे।

उद्देश्य के अगाडि विसेषण जोडके उद्देश्य के विस्तार आऊ विधेय के अगाडि क्रिया विंसेषण आदि जोड के विधेय के भी विस्तार कयल जा सकइत हे।

संरचना के आधार से वाक्य चार प्रकार के होइत हे।

१) सरल वाक्य २) संयुक्त वाक्य ३) मिश्र वाक्य ४) मिश्रित वाक्य।

१) सरल वाक्य (Simple Sentence)

एगो उद्देश्य आ एगो विधेय रहल वाक्य के सरल वाक्य कहल जाइत हे। सरल वाक्य में एकेगो कर्ता आउ एकेगो क्रियापद (समापक क्रिया) रहैत हे वाँकि एक से वेसी असमापक क्रिया रह सकइत हे। जइसे:

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

राम किताब पढइत हे ।

सीता स्कूल गेली है ।

सरल वाक्यमें उद्देश्य आउ विधेय के विस्तार होइत हे बाँकि संयोजक के प्रयोग न होइत हे ।

२) संयुक्त वाक्य (Compound Sentence)

जउन वाक्यमें दूगो वा दूगो से वेसी समान खण्डवाक्य के निरपेक्ष संयोजक से जोड़ल रहैत हे, ऊ संयुक्त वाक्य कहवइत हे । अइसन वाक्य में जोड़ल गेल खण्ड वाक्य सव स्वतंत्र वाक्य होइत हे ।

आग गरम होइत हे	लेकिन	बरफ ठंढा होइत हे ।
मुख्य उपवाक्य	संयोजक	मुख्य उपवाक्य

अइसन वाक्य आ, आउ, बाँकि, लेकिन आदि संयोजक से जुटल रहइत हे

३) मिश्र वाक्य (Complex Sentence)

जउन वाक्य में एगो मुख्य वाक्य आउ एगो चाहे एगो से वेसी आश्रित उपवाक्य रहइत हे से मिश्र वाक्य कहवइत हे । एह वाक्य में रहल आश्रित उपवाक्य सव सापेक्ष संयोजक से जोड़ल रहइत हे । जइसे:

१) जउन खेत में पानी न लगइत हे तउन मे उव्जनी नीमन न होइत हे

२) जे परिश्रम न करइत हे उ कहियो प्रगति न कर सकइत हे ।

अइसन वाक्य जे, से, जउन, तउन, जहाँ, तहाँ, जइसन, तइसन, आदि संयोजक से जुटल रहइत हे ।

४) मिश्रित वाक्य (Mixed Sentence)

जउन वाक्य में एगो से वेसी मुख्य उप वाक्य आऊ एगो वा एगो से वेसी आश्रित उपवाक्य रहइत हे, से मिश्रित वाक्य कहवइत हे । जइसे:

राम हमरा से भेंट कइलक आउ कहलक जे उ घर न गेल ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दूगो मुख्य उपवाक्य (१) राम हमरा से भेंट कइलक (२) राम हमरा से कहलक आऊ एगो आश्रित वाक्य ऊ घर न गेल से ई वाक्य वनल हे ।

अर्थके हिसाव से वाक्य आठ प्रकार के होइत हे ।

(१) विधिवाचक इया स्वीकारात्मक (२) निषेधवाचक

(३) आज्ञावाचक (४) प्रश्नवाचक

(५) विस्मयवाचक (६) सन्देहवाचक

(७) इच्छावाचक (८ संकेतवाचक

(१) विधिवाचक वाक्यः

जउन वाक्य से कउनो वात होवे के चाहे स्वीकार करेके अर्थ लगइत हे, ऊ विधिवाचक कहवइत हे । जइसे: हम घर जाइत ही ।

(२) निषेधवाचक वाक्यः

जउन वाक्य से कउनो बात न होवे के चाहे इन्कार के बोध होइत हे, ऊ निषेधवाचक वाक्य कहवइत हे । जइसे: ऊ भात न खएलकइ ।

(३) आज्ञावाचक वाक्यः

जउन वाक्य से कउनो प्रकार के आज्ञा चाहे अनुरोध के ज्ञान होइत हे, ऊ आज्ञावाचक वाक्य कहल जाइत हे । जइसे:

ई किताव पढ के देख ।

एह सबाल के जवाव बताव ऽ ।

(४) प्रश्नवाचक वाक्यः

जउन वाक्य से कउनो प्रकार के प्रश्न कयल गेल वोध होइत हे, ऊ प्रश्नवाचक वाक्य कहवइत हे । जइसे:

ई रस्ता कहाँ जाएत ?

ऊ कखनी से पढइत हे ?

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(५) विस्मयवाचक वाक्यः

जउन वाक्य से आश्चर्य, दुःख चाहे सुख के वोध होइत हे, ऊ विस्मयवाचक वाक्य कहवइत हे। जइसेः

वाह १ केतना सुन्दर फूल हे।

(६) सदेहवाचक वाक्यः

जउन वाक्य से कउनो वात के संदेह प्रकट होइत हे, ऊ संदेहवाचक वाक्य कहवइत हे। जइसेः

राम घर पहुँच गेल होतइ।

(७) इच्छावाचक वाक्यः

जउन वाक्य से कउनो तरह के कामना, आसीष चाहे अभिसाप के वोध होइत हे, ऊ इच्छावाचक वाक्य कहवइत हे। जइसेः

तोहर मनोरथ पुरा होंउक।

(८) संकेतवाचक वाक्यः

जउन वाक्य में आश्रित उपवाक्य मुख्य उपवाक्य पर निर्भर करइत हे, से संकेतवाचक वाक्य कहवइत हे। जइसेः

राम खूब खायत तो वलवान वन जाएत।

बरखा न होतइ तो धान सुख जतइ।

वाक्य संश्लेषण

दूगो वा दूगो से बेसी स्वतंत्र रुप में प्रयोग भेल सरल वाक्य के जोड के एकेगो वाक्य वनावे के प्रकिंया वाक्य संश्लेषण कहल जाइत हे।

वाक्य संश्लेषण करत बेर सामान्य अर्थ में अन्तर करेके न होइत हे वाँकि सव्दन के घटी वढी हो सकइत हे।

हरि सज्जन हे।
हरि पढे में तेज हे। } हरि सज्जन आउ पढे में तेज हे।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सरल वाक्य के संश्लेषण कक के संयुक्त, मिश्र आउ मिश्रित कउनो भी तरह के वाक्य बनावल जा सकइत हे ।

वाक्य विश्लेषण

सरल वाक्यन के जोड़ के बनल सरल, संयुक्त, मिश्र तथा मिश्रित वाक्य के ओकर अंग अंग अलगिया के स्वतंत्र सरल वाक्यन में अलगियावे के प्रक्रिया वाक्य विश्लेषण कहबइत हे । वाक्य विश्लेषण वाक्य संश्लेषण के विपरीत प्रक्रिया हे ।

वाक्य विश्लेषण के समय में अर्थ में परिवर्तन न होइत हे आउ काल भी उहे रखल जाइत हे । जइसे:

सुनीता मिठाई खा के अयली ।

वाक्य विश्लेषण

(क) सुनीता मिठाई खयली ।

(ख) सुनीता अयली ।

अइसेही, संयुक्त, मिश्र, आउ मिश्रित वाक्यन के भी विश्लेषण कयल जाइत हे ।

अभ्यास

१. वाक्य के परिभाषा बतावऽ ।
२. उद्देश्य आउ विधेय के परिचय बतावऽ ।
३. बनावट के हिसाब से वाक्य केतना प्रकार के होइत हे? उदाहरण सहित लिखऽ ।
४. अर्थ के हिसाब से वाक्य के केतना भेद हे ? बतावऽ ।
५. वाक्य संश्लेषण केकरा कहल जाइत हे ? उदाहरण सहित लिखऽ ।
६. वाक्य विश्लेषण में कौन कौन बातपर ध्यान देव आवश्यक होइत हे ?

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कथन

कउनो व्यक्ति अपन मन के वात वोल के चाहे लिख के व्यक्त कर इत हे,ओकरा कथन इया उक्ति (Narration) कहल जाइत हे । केकरो कथन प्रकट करेके दूगो तरीका होइत हे (१) केकरो कथन के ओकरे भाषा में जइसने के तइसने रुप मे राखे के (२) केकरो कथन के अर्थ न विगडे के हिसाव से अपना तर्फ से प्रस्तुत करेके । इहे आधार से कथन प्रत्यक्ष आउ अप्रत्यक्ष दू भाग में बाँटल जा सकइत हे ।

क) प्रत्यक्ष कथन:

केकरो उक्ति ओकरे भाषा में जइसने के तइसने प्रस्तुत करव प्रत्यक्ष कथन हे । जइसे: सीता कहलकइ, 'हम न पढवइ' ।

उपर के उदाहरण प्रत्यक्ष कथन में हे । एह मे दू भाग हे । 'सीता कहलकइ' आउ 'हम न पढवई' । पहिले के भाग में के कहलकइ तेकर परिचय हे एकरा कथयिता अंस कहल जाइत हे । आऊ दोसर अंस में कथयिता के बात उद्धरण चिन्ह के भितर उद्धृत कयल गेल हे । एकरा कथन अंस कहल जाइत हे ।

ख) अप्रत्यक्ष कथन:

केकरो उक्ति ओकरे सव्द प्रयोग कऽ के वा अन्य सव्द जोड़के ओकर अर्थ न बिगडे के हिसाव से प्रस्तुत करव अप्रत्यक्ष कथन हे । जइसे:

सीता कहलकइ कि उ न पढ़तइ ।

अप्रत्यक्ष कथन में कथयिता आउ कथन दुनो अंस के संयोजन कयल गेल हे । एकरा भावानुवाद भी कहल जाइत हे । काहे कि कहल गेल वात अर्थ परिवर्तन न करके वहुत तरीका से प्रस्तुत हो सकइत हे । जइसे:

प्रत्यक्ष कथन: रीता कहलकइ, 'राम स्कूल गेलइ' ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अप्रत्यक्ष कथन: (क) रीता कहलकइ जे राम स्कूल गेलइ ।

(ख) राम स्कूल गेलइ से रीता कहलकइ ।

प्रत्यक्ष कथन के अप्रत्यक्ष कथन आउ अप्रत्यक्ष कथन के प्रत्यक्ष कथन में बदले के काम कथन परिवर्तन कहल जाइत हे ।

क) प्रत्यक्ष कथन से अप्रत्यक्ष कथन में बदले के तरिका

१. कथयिता अंस के पछाडी के अल्पविराम आऊ कथन अंस के उद्धरण चिन्ह हटावे पडैत हे ।

२. कथयिता आऊ कथन अंस के संयोजक से जोड़ल जाइत हे ।

३. कथयिता अंस के क्रियापद आवश्यकतानुसार बदलल जा सकइत हे ।

४. कथयिता के लिंग, वचन, पुरुष आउ आदर अनुसार क्रियापद राखे पडैत हे ।

कथन परिवर्तन के कुछ उदाहरण

अनिता कहलकइ, “बाप रे १ केतना वड्का गो साँप” । (प्रत्यक्ष)

अनिता कत्तेटा साँप कहि के चिचिअलइ । (अप्रत्यक्ष)

प्रमोद कहलकइ, “तुलसी दास महान कवि है” । (प्रत्यक्ष)

प्रमोद कहइत हलै जे तुलसी दास महान कवि है । (अप्रत्यक्ष)

“हम सिनेमा देखवइ ” सुमन कहैत हलै । (प्रत्यक्ष)

सुमन सिनेमा देखवइ कहैत हलै । -अप्रत्यक्ष)

ख) अप्रत्यक्ष कथन से प्रत्यक्ष कथन में बदले के तरीका

अप्रत्यक्ष कथन से प्रत्यक्ष कथन मे वदले के लेल प्रत्यक्ष कथन से अप्रत्यक्ष मे वदले के उपर कहल गेल तरीका के ठीक उल्टा प्रक्रिया अपनिआवल जाइत हे । जइसे:

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(अप्रत्यक्ष) महात्माजी देह आ आत्मा अलग अलग है कहैत हलै ।

(प्रत्यक्ष) महात्माजी कहलकइ, "देह आ आत्मा अलग अलग वस्तु है"।

अप्रत्यक्ष – प्रमोद हरि के मूर्ख कह के डटलकई ।

प्रत्यक्ष – प्रमोद हरि के कहलकई "मूर्ख । "

अप्रत्यक्ष – हरि विराटनगर जतइ ।

प्रत्यक्ष– हरि कहलकइ, "हम विराटनगर जवइ ।"

अभ्यास

१. कथन इया उक्ति केकरा कहल जाइत हे ?

२. कथन केतना प्रकार के होइत हे ?

३. प्रत्यक्ष कथन के अप्रत्यक्ष कथन में बदले के तरीका उदाहरण सहित लिखऽ

४. पाँच गों अप्रत्यक्ष कथन के प्रत्यक्ष कथन मे बदल के देखावऽ ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विसेष सब्द

भाषा में विसिष्ट अर्थ रहल आउ विसिष्ट स्थान में प्रयोग होवेओला सब्द के विसेष सब्द कहल जाइत हे । अइसन सब्द से भाषिक प्रयोग के क्षेत्र आउ स्तर के साथे बोली के गम्भिरता में भी बृद्धि होइत हे । अइसन सब्द में पारिभाषिक, एकल, अनुकरणात्मक, संक्षिप्त, प्रतीकात्मक आउ लघुतावाची सब्द पड़ैत हे ।

क) पारिभाषिक सब्द

कउनो निश्चित विषय वा क्षेत्र में प्रयोग होवेओला विसेष सब्द पारिभाषिक सब्द हे । विषय क्षेत्र के भिन्नता से सब्द के अर्थ में भिन्नता अवइत हे । अइसन सब्द के प्राविधिक सब्द भी कहल जाइत हे ।

एकेगो सब्द के क्षेत्र अनुसार के भिन्नता के उदाहरण

१.	ध्वनी (विज्ञान में)	–	आवाज
	(साहित्य में)	–	व्यंग्य
२.	गण (प्रशासन में)	–	सैनिक के दल
	(साहित्य में)	–	छन्द में तीन वर्ण के समूह ।

कुछ पारिभाषिक सब्द वाक्य में प्रयोग सहित:

अंक (नाटक के खण्ड) – एह नाटक में चार अंक हे ।

अक्षांस (भूमध्य रेखा से समानान्तर रहल रेखा) – नेपाल २६° – ३०° उत्तरी अक्षांस में परइत हे ।

अध्यादेस (संसद अधिवेशन न रहल समय में जारी कयल गेल कानून) – कृषक के हित खातिर अध्यादेस जारी भेल हे ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अवमुल्यन (रुपैया के मुल्य घटेके) – अमेरिका के डलर के तुलना में नेपाली रुपैया के अवमुल्यन भेल हे ।

अन्तरिम (अस्थायी) – चुनाव खातिर अन्तरिम सरकार गठन भेल हे ।

असंलग्न (केकरो गुट में न रहेके) – भारत आउ चीन के युद्ध में नेपाल के नीति असंलग्न रहे ।

उपसंहार (लेख के निष्कर्ष) – समूचा पाठ के निष्कर्ष उपसंहार में रहइत हे ।

कुपोषण (पोषक तत्व के कभी) – वाल-वालिका कुपोषण से बिमार होइत हे ।

दिवास्वप्न (असम्भव कल्पना) – प्रमोद हाथीपर चढेके दिवास्वप्न देखइत हे ।

परमादेस (अदालत के आदेस) – एह विषय में सर्वोच्च अदालत से परमादेस जारी भेल हे ।

परिपत्र (जानकारी करावे खातिर पत्र) – शिक्षा मंत्रालय से सब स्कुल में एह सम्वन्धी परिपत्र कयल गेल हे ।

प्रत्यारोपण (अंग बदलेके काम) – अब नेपाल में भी हृदय प्रत्यारोपण सुरु भेल हे ।

भुपरिवेष्ठित (चारो तरफ से जमीनसे घेरल) – नेपाल भुपरिवेष्ठित होवेके कारण से विकास के गति प्रभावित भेल हे ।

भूक्षय (माटी बहेके काम) –जंगल कटान भेला से भूक्षय बढ़ल हे ।

मौलिक हक (कानून से मिलल मूलभूत अधिकार) – ई बात जनता के मौलिक अधिकार में परइत हे ।

विधेयक (संसद में प्रस्तुत भेल कानुन के प्रारुप) – महिला के अंस देवे सम्वन्धी विधेयक पारित न हो सकलइ ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शिलालेख (पथर पर लिखल गेल लेख) – अशोक के शिलालेख में बौद्ध धर्म सम्वन्धी चर्चा हे ।

संविधान (देस के मूल कानून) – वेलायत में लिखित संविधान न हे ।

संवदेना (मन के तीव्र अनुभूति) – रमेश संवेदना देवे ला अदित के घर गेल हलै ।

सहवरण (सव मिल के कयल गेल) –कक्षा १० में रमेश के मोनिटर के रुप में सहवरण कयल गेलइ ।

(ख) अनेक के एक सब्द

दूगो वा दूगो से बेसी सब्द से स्पष्ट होवेओला अर्थ एकेगो सारपुर्ण सब्द से भी स्पष्ट हो सकइत हे । अइसन सारपुर्ण सब्द के अनेक के एक सब्द कहल जाइत हे । अइसन सब्द के प्रयोग से अभिव्यक्ति प्रभावकारी होइत हे ।

अनेक सब्द	**एक सब्द**
देस के खातिर जान देवेओला	सहिद
बढा चढा के कहल गेल	अत्युक्ति
लोभ करेओला	लोभी
पुजा के योग्य	पूज्य
बेटी के बेटा	नाती
सार के पत्नी	सरहोजि
पति के जेठ भाई	भैंसुर
दिआदनी के बटी	जयधी
लाज न मानेओला	निर्लज्ज
वहुत बेलेओला	बजक्कड़
न जोतल गेल जमीन	परती
परम्परा से आ रहल	सनातन

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सौतिन के बेटी	सतधी
जीवन भर	आजीवन
इश्वर में विश्वास न करेओला	नास्तिक
आशा मे रहल	आसावादी
न काट सकेओला	अकाट्य
अल्प भोजन करेओला	अल्पाहारी
अपने से अपन हत्या करेओला	आत्मघाती
अभिनय करेओला	अभिनेता
आँख के सोझा	प्रत्यक्ष
आत्मा से सम्बन्धित	आध्यात्मिक
अपना उपर आधारित	स्वावलम्बी
इतिहास जानेओला	इतिहासज्ञ
इश्वर पर विश्वास करेओला	आस्तिक
दुसरा के उपकार करेओला	उपकारी
कठोर वचन बोलेओला	कटुभाषी
मीठ वचन बोलेओला	मृदुभाषी
क्रम अनुसार	क्रमसः
कर्म पर विश्वास करेओला	कर्मयोगी
कल्पना से बाहर	कल्पनानीत
सब घर से एक जना	घरजना
उपकार मानेवाला	कृतज्ञ
उपकार न मानेवाला	कृतघ्न
आकास आउ पृथ्वी मिले के जगह	क्षितिज
जाय के लक्ष्य रहल स्थान	गन्तव्य
जेकर शत्रु न जन्मल हे	अजातशत्रु
कुस के नोक समान तेज बुद्धिओला	कुसाग्रबुद्धि

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दुर ले देखेओला	दुरदर्शी
घरजम कके रहेओला	गृहस्थ
मुर्दा जलावे खातिर तैयार कयल गेल जगह	चिता
तेज खतम हो गेल	निस्तेज
नदी के मेल भेल स्थान	संगम
तुरुन्त कविता लेख सकेओला	आसुकवि
जेकरा कोइ न जित सके	अजेय
न देखल जा सकेओला	अदृश्य
उपमा न रहल बस्तु	अनुपम
देख न सकेओला	अन्धा
पार न पावल जा सकेओला	अपार
कभी न मरेओला	अमर
एह लोक मे ना मिलेओला	अलौकिक
मौका अनुसार बदलेओला	अवसरवादी
नास न होवेओला	अविनासी
सुरु से अन्त तक	आद्योपान्त
केकरो पक्ष न लेंवेओला	तटस्थ
दस वर्ष के समय	दसक
मिले में कठिन	दुर्लभ
संदेस ले जायओला	दूत
जाने के इच्छा राखेओला	जिज्ञासु
ठक्कर खा के घुमल आवाज	प्रतिध्वनि
कान न सुनेवला	बहिरा
विना मजुरी के काम	वेगार
आजीवन विआह न करेओला	ब्रम्हचारी
मांस खायओला	मांसाहारी

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कम बोलेओला	मितभाषी
पति के मृत्यु भेल महिला	विधवा
पत्नी के मृत्यु भेल पुरुष	विधुर
एके समय के	समकालीन
सब कुछ जानेओला	सर्वज्ञ
अन्न आउ सागपात मात्र खायेओला	साकाहारी
बहुत खायओला	पेटू

(ग) अनुकरणात्मक सब्द

कउनो आवाज, दृश्य वा क्रिया के अनुकरण अथवा नकल दर्शावेओला सब्द अनुकरणात्मक सब्द कहल जाइत हे।

कुछ अनुकरणात्मक सब्द आउ वाक्य मे ओकर प्रयोग

टर्रटर्र	–	बहुत बोलब – केतना टर्रटर्र करइत हे।
कोकड़ियायव	–	सिकुड़ जायब – ठंढी से लत्ती कोकडिया गेलइ।
कपकप	–	फटाफट खायब – रमेश कपकप कऽ के सब खा गेलइ।
कलकल	–	पानी के आवाज – नदीके कलकल कइसन मनेरम लगइत हे।
कीर्रकीर्र	–	घण्टी के आवाज – उ, कीर्रकीर्र घंटी बजवते रहलई।
क्रामक्रुम	–	चिवाबे के आवाज – हरि क्रामक्रुम कऽ के खीरा खा गेलइ।
खचाखच	–	पुरा भरेके – रंगभूमि खचाखच भरल हलइ।
गदगद	–	खुसी – बात सुन के मोहन गदगद हो गेलइ।
घुटघुट	–	पियब – लड़िका घुटघुट कऽ के दुध पिलकई।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ठकठक	–	ठोके के आवाज – केतना ठकठक करइत ह।
टपटप	–	पानी चुवे के – घैला तो टपटप चुवैत हई।
पिच्च	–	थुक फेकेके – पिच्च पिच्च जहीं तही न थुक।
फटाफट	–	जल्दी जल्दी – फटाफट स्टेसन चल गेलइ।
लहलह	–	फसल हिले के – ओकर धान लहलह करइत हइ
लगलग	–	काँपे के – ओकर टांग लगलग कंपैत हलै।
सर्र	–	बिना रोकटोक – ओकर गाडी सर्र से पुल पार हो गेलइ
लुरुखुरु	–	कुछ कुछ करत रहब – ओकनी लुरुखुरु करते रहइत हे।
फर्र	–	चिइइ उड्के – मैना फर्र से उड़ गेलइ।

(घ) प्रतीकात्मक सब्द

समाज में प्रचलित इतिहास, पुराण, धर्मग्रन्थ तथा सामाजिक जीवन से लेल गेल विसेष अर्थ राखेओला सव्द प्रतीकात्मक कहल जाइत हे। सांकेतिक रुप से प्रयोग होवेओला अइसन सव्द लोकप्रिय होवे के कारण से सहज वोधगम्य होइत हे।

कुछ प्रतीकात्मक सब्द अर्थ सहित

गदहा	–	मूर्ख
नारद	–	एने के बात ओने करेओला
कुम्भकर्म	–	वहुत सुतेओला
कुवेर	–	धनी
गंगा	–	पवित्र
गौप्राणी	–	सज्जन

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जोंक	–	पकड लेला से न छोडेओला
देउता	–	सज्जन
महाभारत	–	भारी झगडा
राक्षस	–	दुष्ट
रामराज्य	–	असल शासन
लक्ष्मण रेखा	–	अनुशासन के सीमा
सकुनी	–	षडयन्त्रकारी
सावित्री	–	पतिव्रता
सुग्गर	–	गन्दा
सुदामा	–	गरीव
सागर	–	उदार
बानर	–	लुचलुच करेओला
कोइली	–	निमन आवाज रहल
कल्पवृक्ष	–	वहुत लाभदायक

(ङ) संक्षिप्त सब्द

एगो वा एगो से अधिक सब्दन के शुरु के अक्षर से बनल सब्द संक्षिप्त शब्द कहल जाइत हे। अइसन सब्द के प्रत्येक अक्षर के वाद संक्षेप चिन्ह (.) प्रयोग करे के प्रचलन हे। लेकिन कउनो कउनो वहुत प्रचलित सब्द संक्षेप चिन्ह विना भी लिखल जाइत हे।

डा.	–	डाक्टर
प्रा.	–	प्राध्यापक
भू.पू.	–	भूतपूर्व
आ.वा.	–	आकासवाणी
ई.स.	–	ईस्वी सम्वत्
का.वा.	–	कार्यवाहक
गै.स.स.	–	गैरसरकारी संस्था
त्रि.वि.वि.	–	त्रिभुवन विश्व विद्यालय

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नि.मा.वि.	–	निम्न माध्यमिक विद्यालय
पं.	–	पंडित
प्र.म.	–	प्रधान मंत्री
प.अ.	–	प्रधान अध्यापक
प्रा.वि.	–	प्राथमिक विद्यालय
मा.वि.	–	माध्यमिक विद्यालय
वि.सं.	–	विक्रम सम्वत्
सं.	–	सम्वत्
स्व.	–	स्वर्गीय

(च) लघुतावाची सब्द

कउनो वस्तु के छोट रुप, आकार वा भाव बतावे ला प्रयोग होवेओला सब्द लघुतावाची कहल जाइत हे । जइसे:

किरा	–	किरी
खाट	–	खटिया
घण्टा	–	घण्टी
तसला	–	तसली
छिपा	–	छिपली
नाटक	–	नाटिका
पत्र	–	पत्रिका
पुस्तक	–	पुस्तिका
हाट	–	हटिया

अन्य स्वतन्त्र सब्द भी लघुतावाची अर्थ में प्रयोग होइत हे ।

सुपारी	–	टुक
पानी	–	बुंद
मांस	–	चोक्टा
निन	–	झपकी
वरखा	–	झर

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(छ) सहचर सब्द

जउन दुगो सब्द के प्रयोग संग संगे होइत हे, ऊ सहचार सब्द कहवइत हे। जइसे: नीचा – उपर, आकार – प्रकार।

अइसन सब्द सामान्य तया द्वन्द्व समास से बनइत हे आऊ तीन प्रकार के होइत हे। (१) विपरीतार्थ बोधक (२) एकार्थबोधक (३) सजातीय।

(१) विपरीतार्थबोधक

जहाँ दूनो सब्द के अर्थ एक दुसर के विपरीत रहइत हे। ऊ विपरीतार्थबोधक सहचर कहवइत हे। जइसे: धनी-गरीब, दिन-रात, सुख–दुख।

(२) एकार्थबोधक:

जहाँ दूनो सब्द के अर्थ समान रहइत हे, उ एकार्थबोधक सहचर कहवइत हे। जइसे: क्रिया-कर्म, भाइ-बन्धु, मान-प्रतिष्ठा।

(३) सजातीय:

जहाँ दुनो सब्द एके जाति के रहइत हे, ऊ सजातीय सहचर सब्द कहवइत हे। जइसे: माय–बाप, साज–बाज, दुल्हा–दुल्ही।

अभ्यास

१. पारिभाषिक सब्द के विसेषता बतावऽ।
२. अनेक सब्द के एक सब्द बतावऽ:
भाई के बेटा, पत्नी के माय, पति के बाप, न जोतल जमीन, ईश्वर में विश्वास करेओला, आसा में रहल।
३. पाँच गो अनुकरणात्मक सब्द के वाक्य मे प्रयोग कर।
४. पाँच जो प्रतिकात्मक सब्द के प्रयोग कऽ के वाक्य बनावऽ।
५. संक्षिप्त सब्द के पूर्ण सब्द बनावऽ।
भू.पू. प्रा., नि.मा.वि., गै.स.स., का.वा., वि.सं.
६. लघुतावाची सब्द के उदाहरण सहित परिचय बतावऽ।
७. सहचर सब्द केतना तरह के होइत हे? उदाहरण सहित बतावऽ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विविध अर्थयुक्त सब्द

भाषा के प्रयोग भाव अभिव्यक्ति के लेल होइत हे । एकरा लेल सब्द लघुतम इकाई के काम करइत हे । विभिन्न प्रकार के अर्थ के आधार से सब्द के वर्गीकरण हो सकइत हे । विविध अर्थयुक्त सब्दन में पर्यायवाची, विपरीतार्थक, श्रुतिसम्म भिन्नार्थक आउ अनेकार्थक सब्द परइत हे ।

(क) पर्यायवाची सब्द

समान अर्थ प्रकट करेओला सब्द पर्यायवाची सब्द (Synonym) कहवइत हे । एगो पर्यायवाची सब्द के जगह पर दुसर पर्यायवाची सब्द के प्रयोग हो सकइत हे बाँकि कउनो कउनो जगह पर कउनो खास पर्यायवाची के प्रयोग भाव अभिव्यक्ति में उपयुक्त न होवे के आशंका भी रहइत हे । नीचा कुछ पर्यायवाची सब्द उदाहरण खातिर प्रस्तुत हे ।

अक्कल – बुद्धि, खुबी, समझ, चतुराइ

आकास – गगन, नभ

आँख – नयन, नेत्र, लोचन, चक्षु

आग – अनल, अग्नि

आनन्द – खुसी, मजा, सुख, हर्ष, प्रसन्नता

इच्छा – आकांक्षा, कामना,

ईश्वर – भगवान, ईश, सुर, देव, देवता

ईख – रिस, इवी, डाह

उपहार – सौगात, कोसेली, भेटी

उषा – विहान, प्रभात, प्रात:

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उक्ति	–	कथन, कहब, बात
उग्र	–	भयानक, भयंकर, कडा
उचित	–	उपयुक्त, योग्य, अनुकुल
उन्नत	–	उत्तम, समृद्ध, श्रेष्ठ, उच्च
एकान्त	–	सुनसान, निर्जन
ऐस	–	आराम, चैन, विलास, मोज
ओहदा	–	दर्जा, पद, स्तर
औसत	–	सरदर, मोटमोटी
कमल	–	पंकज, सरोज, सरसिज, अरविन्द
किताब	–	ग्रन्थ, पुस्तक
करुणा	–	दया, माया
कष्ट	–	दुख, आपत, विपत
कोरसिस	–	प्रयास, चेष्टा, प्रयत्न
क्रोध	–	आवेश, रिस, आवेग
गणेश	–	विनायक, गणपति
गहना	–	अलंकार, आभुषण
गरीब	–	निर्धन, दीन, कंगाल
घर	–	गृह, भवन, वास, सदन, निकेतन
घमण्ड	–	अभिमान, अहंकार, अहं
चतुर	–	चलाक, धुर्त, चंख
चन्द्रमा	–	चन्द्र, चान, चनरमा, शशि, मयंक
चिरई	–	पक्षी, विहंग, खग, नभचर
जगत	–	विश्व, संसार, लोक

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जमीन	–	पृथ्वी, ज़गह, धरती
डर	–	भय, त्रास
तलाउ	–	पोखरी, दह, सर
त्रुटि	–	भूल, गल्ती, कमी
दक्ष	–	योग्य, निपुण
दण्ड	–	सजाय, जइरवाना
दोष	–	कलंक, खोट
दास	–	नोकर, सेवक
दैत्य	–	असुर, दानव, राक्षस
नगिच	–	निकट, लग, समीप
नदी	–	धार, सरिता
नयाँ	–	नवीन, नव, नुतन
नरेश	–	राजा, भूपति, नृपति
पथर	–	प्रस्तर, पाषाण, पाहन
पहाड़	–	पर्वत, गिरी, शैल
पवित्र	–	शुद्ध, स्वच्छ, निर्मल
फूल	–	पुष्प, कुसुम, सुमन, प्रसुन
वल	–	शक्ति, ताकत, क्षमता
वगैचा	–	वाटिका, फुलवारी, उद्यान
वादल	–	मेघ, घटा, वारिद
बाप	–	पिता, वाबु, वाउ
वेटा	–	पुत्र, पुत, सुत, तनय
वेटी	–	धी, धीया, पुत्री, तनया

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

महेश	–	महादेव, शिव, शंकर
मानव	–	मनुक्ख, आदमी, नर
युद्ध	–	लडांई, संग्राम, जंग
राइत	–	रजनी, निसा, रात्रि
रोग	–	व्यथा, विमारी
विद्यालय	–	स्कूल, पाठशाला, विद्यागृह
सर्प	–	सांप, विषधर, भुजंग, व्याल
साथी	–	संगी, मित्र, सहयोगी
साहस	–	आँट, हिम्मत
सोना	–	कनक, कंचन, सुवर्ण, हिरण्य
सूर्य	–	सुरुज, दिनकर, भानु, भाष्कर रवि, दिवाकर
स्त्री	–	नारी, जनी, मौगी

(ख) विपरीतार्थक सब्द

दूगो सब्दन के बीच परस्पर उल्टा अर्थ रहेओला सब्द विपरीतार्थक सब्द (Anonym) कहवइत हे। अइसन सब्द के प्रंयोग से वाक्य के अकरण में परिवर्तन न हो सकइत हे।

अर्थ	–	अनर्थ	देवता	–	दानव
अर्पण	–	ग्रहण	दूर	–	नजदीक
आकर्षण	–	विकर्षण	सज्जन	–	दुर्जन
आगे	–	पिछे	ठीक	–	बेठीक
आय	–	व्यय	प्रश्न	–	उत्तर
आस्तिक	–	नास्तिक	सुन्दर	–	कुरुप
उपकार	–	अपकार	हर्ष	–	विस्माद

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

खण्ड	–	अखण्ड	सकली	–	नकली
कारी	–	गोर	पुण्य	–	पाप
खरीद	–	बिक्री	सुख	–	दुख
आवत	–	जावत	हार	–	जीत
आकास	–	पताल	ज्ञान	–	अज्ञान
असल	–	खराव	सपना	–	विपना
अनुकूल	–	प्रतिकूल	आदर	–	अनादार
आसा	–	निरासा	नाफा	–	नोक्सान
उत्थान	–	पतन	सम्पन्न	–	विपन्न
एक	–	अनेक	शिक्षित	–	अशिक्षित
उदय	–	अस्त	सक्रिय	–	निस्क्रिय
आदि	–	अन्त	संयोग	–	वियोग
उन्नति	–	अवनति	साक्षर	–	निरक्षर
आरम्भ	–	अन्त	स्वर्ग	–	नरक
इज्जत	–	बेइज्जत	आग	–	पानी
जन्म	–	मृत्यु	झगडा	–	मेल
हिंसा	–	अहिंसा	विश्लेषण	–	संश्लेषण
गुण	–	अवगुण	साहसी	–	डरपोक
अतिवृष्टि	–	अनावृष्टि	जीवन	–	मरन
प्रत्यक्ष	–	अप्रत्यक्ष	पक्ष	–	विपक्ष
युद्ध	–	शान्ति	मुर्ख	–	विद्धान
सत्मार्ग	–	कुमार्ग	रोगी	–	निरोगी

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ठंढा	–	गरम	सिर	–	तरवा
मित्र	–	शत्रु	सुपुत्र	–	कुपुत्र
लाभ	–	हानी	आगत	–	विगत
भीतर	–	वाहर	बन्द	–	खुजल
सफा	–	मैल			

(ग) श्रुतिसमभिन्नार्थक सब्द

बोले में वा लिखे में ओइसने लागे पर भी अर्थ में भिन्नता रहेओला सब्द श्रुति समभिन्नार्थक सब्द (Homonym) कहवइत हे। अइसन सब्द के समरुपी भी कहल जाइत हे। बाकि लिखाइ में ई भिन्न रहइत हे।

१.	अन्न	–	अनाज	२.	अलि	–	भमरा
	अन्य	–	दुसर		अली	–	सखी
३.	आँट	–	साहस	४.	अक्ष	–	धुरी
	आँत	–	भित्री अंग		यक्ष	–	देवयोनि
५.	आदि	–	सुरु	६.	आवास	–	घर
	आदी	–	मसाला		आभास	–	अनुमान
७.	अपेक्षा	–	इच्छा	८.	उपयुक्त	–	ठीक
	उपेक्षा	–	बेवास्ता		उपर्युक्त	–	उपर कहल गेल
९.	कर्म	–	काम	१०.	कृति	–	रचना
	क्रम	–	सिलसिला		कीर्ति	–	ख्याति
११.	कोष	–	खजाना	१२.	किला	–	गढ़
	कोश	–	संग्रह		कीला	–	छोट खम्हा
	कोस	–	दूरी				

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

१३. खाक – छाउर	१४. गुड – ऊख के रसके वनल मिठ बस्तु
खाग – गैंडा के सिंह	गुढ – गम्भिर
१५. गण – समूह	१६. चिर – पुरान
गण्य – गने योग्य	चीर – बस्त्र
१७. जूवा – जीत हार के खेल	१८. जलद – मेघ
जुवा – बैलगाडी के जुवा	जलज – कमल
१९. डीठ – दृष्टि	२०. दिन – दिवस
ढीठ – निडर	दीन – गरीब
२१. तरणि – सुर्य	२२. देस – राष्ट्र
तरणी – नाव	द्वेष – ईर्ष्या
२३. नारी – स्त्री	२४. प्रसाद – पूजा के परसाद
नाडी – नब्ज	प्रासाद – महल
२५. प्रदान – देबे के	२६. पथ – मार्ग
प्रधान – मुख्य	पथ्य – रोगी के भोजन
२७. पास – लग	२८. भंगि – लहर
पाश – वन्धन	भंगी – मेहतर
२९. बाँस – एक तरह के गाछ	३०. रत – लीन
वास – गन्ध	रति – कामदेव के पत्नी
वास – निवास	
३१. मद – घमण्ड	३२. दीप – बत्ती
मद्य – मदिरा	द्वीप – टापु

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

३३. दूत	–	संदेशवाहक	३४. शाला	–	घर
दूध	–	पियेओला बस्तु	साला	–	पत्नी के भाई
३५. विद्या	–	शिक्षा	३६. सब	–	सम्पुर्ण
विधा	–	साहित्य के अंग	शव	–	लास
३७. दर	–	मुल्य			
डर	–	त्रास			

(घ) अनेकार्थक शब्द

दूगो वा दुगो से बेसी अर्थ होवेओला सब्द अनेकार्थक सब्द कहवइत हे। अइसन सब्द विषय वा प्रसंग अनुसार अलग अलग अर्थ प्रदान करइत हे।

अर्थ	–	धन	उत्तर	–	जवाब
अर्थ	–	मतलब	उत्तर	–	दिशा के नाम
कलम	–	लिखे के साधन	काल	–	समय
कलम	–	कलमी कयल गाछ	काल	–	मृत्यु
गोल	–	आकार मे गोल	ताल	–	पोखरी
गोल	–	फुटबल के गोल	ताल	–	संगीत के ताल
पक्ष	–	पन्द्रह दिन के पख	पुतली	–	उड़ेओला कीरा
पक्ष	–	विवाद के पक्ष	पुतली	–	खेलौना
पक्ष	–	चिरई के पंख			
फल	–	गाछ के फल	रस	–	साहित्य के रस
फल	–	परिणाम	रस	–	कउनो खाद्य वस्तु के रस

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वर – वरदान		हाथ – शरीर के अंग	
वर – दुल्हा		हाथ – सहमति	
हार – पराजय		साल – एक तरह के गाछ	
हार – माला		साल – वर्ष	
आम – एक तरहके फल			
आम – सर्वसाधाराण			

अभ्यास

१. पर्यायवाची सब्द केकरा कहल जाइत हे ? उदाहरण सहित लिखऽ ।

२. विपरीतार्थक सब्द से की मतलब हे?

३. श्रुतिसमभिन्नार्थक आउ अनेकार्थक सब्दके भिन्नता बतावऽ ।

४. सहचर सब्द के प्रयोग कऽ के १० गो वाक्य बनावऽ ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

छन्द

अक्षर इया मात्रा के संख्या, क्रम, गति, यति, लय, आउ 'तुक के नियमानुसार लिखल गेल काव्यात्मक रचना छन्द इया पद्य कहबइत हे। छन्द में अक्षर इया मात्रा के गणना के आधार लेल जाइत हे। एह आधार से छन्द दू तरह होइत हे। (१) वार्णिक छन्द (२) मात्रिक छन्द।

(१) वार्णिक छन्दः

वर्ण अर्थात अक्षर के गणना के आधार से रचल गेल पद्य वार्णिक छन्द कहल जाइत हे। वसन्ततिलका, द्रुतविम्वित मालिनी, मन्दाक्रान्ता, शिखरिणी, सार्दुलविक्रीडित, भुजंगप्रयात आदि मुख्य वार्णिक छन्द हे।

वर्ण तीन अक्षर के समूह गण पर आधारित रहइत हें। गण आठ प्रकार के होइत हें।

यगण, मगण, तगण, रगण, जगण, भगण, नगण, सगण। एह गण सबके निर्माण निश्चित नियम अनुसार रहल हे। कउनो गण के तीनो अक्षर ह्स्व होइत हे। कउनो के तीनो दीर्घ। अइसेही ह्स्व आउ दीर्घ के मिश्रण भी निश्चित हे।

गण	ह्स्व (!) दीर्घ (ऽ) सूत्र
यगण	। s s -यमाता)
मगण	s s s -मातारा)
तगण	s s । -ताराज)
रगण	s । s (राजभा)
जगण	। क। (जभान)
भगण	क । । भानस)
नगण	। । । -नसल)
सगण	॥ s (सलगा)

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

छन्द शास्त्र में एकरा निम्न सुत्र से समझल जाइत हे –

यमाताराजभानसलगा

ह्स्व अक्षर एक मात्रा के होइत हे। एकरा लघु वर्ण भी कहल जाइत हे। जइसे। अ, इ, उ। अइसन मात्रा लगल रहल क, कि कु, ख, खी, खु आदि भी एक मात्रिक ह्रस्व वर्ण हे।

दीर्घ अक्षर दू मात्रा के होइत हे। एकरा गुरु वर्ण भी कहल जाइत हे। जइसे: आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ, अं, अः अइसन मात्रा लगल रहल का, की, कू आदि अक्षर भी दीर्घ मानल जाइत हे। अइसेही हलन्त लगल अक्षर आउ संयुक्त अक्षर के पहिले अक्षर भी दीर्घ मानल जाइत हे।

(२) मात्रिक छन्दः

अक्षर के मात्रा के गणना के आधार से रचल गेल पद्य मात्रिक छन्द कहल जाइत हे। एह छन्द में चार मात्रा के एक गण होइत हे। ह्रस्व के एक, दीर्घ के दू आउ हलन्त के आधा मात्रा गनल जाइत हे। आया, गीति, उपगीति, दोहा, सोरठी, चौपाइ, सवैया आदि मुख्य मात्रिक छन्द हे।

छन्द इया कविता पढइत बखत नियमित विश्राम के यति कहल जाइत हे। एह नियम के पालन न भेला पर यति-भंग के दोष मानल जाइत हे।

अभ्यास

१. छन्द कइसन रचना हे ?

२. छन्द केतना तरह के होइत हे ? परिभाषा सहित बताबऽ।

३. वार्णिक छन्द आउ मात्रिक छन्द में का अन्तर हे ?

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मुहावरा

एगो से वेसी निश्चित सब्द एके साथ प्रयोग हो के वनल सब्द के समूह जव अपन साव्दिक अर्थ गमाके विसष्ट आउ रुढ अर्थ ग्रहण करइत हे तव मुहावरा (Idiom) कहवइत हे। एकरा वाक्यपद्धति, वाक्यांस, वाग्धारा आदि भी कहल जाइत हे। मुहावरा के प्रयोग से भाषा में रोचकता, सुन्दरता, प्रौढता आउ सजीवता अवइत हे।

कुछ मुहावरा आउ ओकर अर्थ

१. अगरासन काढव – पर्व त्योहार में देवतांस निकालव।

२. अतहतह करव – अति करव।

३. अरदसिया लगायव – प्रार्थना करव।

४. अरमेरा करव – फुर्सद में कउनो काम कके मन बहलायव।

५. उक्खी विक्खी होव – व्याकुल होव।

६. उतान होके चलव – घमण्ड से चलव।

७. उलट के धारा वान्हव – बात पलट जायव।

८. उसकुन काढव – चिढायव।

९. एक से दू करव – दाल बनाएव

१०. ओरखन देव – उलहन दव।

११. औरी बौरी करव – काम विगाड़ देव।

१२. कट्टीस करव – मित्रता तोड लेव।

१३. कठ दलेली करव – वल वतकट्टी करव।

१४. करहा घुरायव – करहा में पानी चलायव।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

१५. करेजा खिखोरब	–	हृदय कचोटब ।
१६. करेजा पर कोदो दर्रब	–	हृदय व्यथित करब ।
१७. करेजा पर दाल दर्रब	–	हृदय व्यथित करब ।
१८. करेजा फक फक करब	–	कमजोरी अनुभव करब ।
१९. करेजा मसकब	–	कष्ट होब ।
२०. करेजा हकर हकर करब	–	कमजोरी अनुभव करब ।
२१. कान न देब	–	ध्यान न देब ।
२२. कुत्ता काटव	–	मुर्खाइ के काम में पडव ।
२३ कोठी में मुडी छिपायव	–	मुँहचोर बनब ।
२४. कौआ काँठी करब	–	तंग करव ।
२५. खटवास पटवास लेव	–	रीस से निष्क्रिय होके वैठव ।
२६ खिस्सा झरव	–	समाप्त होव ।
२७ खोपसन देव	–	उलहन देब ।
२८. गंगन होव	–	दुर्लभ होब ।
२९. गंजोटा होव	–	जमकब ।
३०. गाल से देवाल जीतव	–	बात बना के सफलता चाहब ।
३१. गाहे विगावे आयव	–	कभी कभी आयब ।
३२. गीता उठायव	–	गीत सुरु करव ।
३३. गोड धो के पियव	–	बहुत आदर करब ।
३४. घमलौर लगायब	–	भीड में धक्का मारब ।
३५. घोघना फुलायब	–	रुठ जायब ।
३६. चन्दर लागब	–	झाँइ आयब ।
३७. चौका चनन करव	–	नीप पोत के साफ करब ।
३८. चौका पुरव	–	लडिकन के पैखाना करब (व्यंग्य)
३९. चौरहा देब	–	खेत अनाज पर देब ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

४०. छः पाँच में पड़ब	–	दुविधा मे परब ।
४१. छान पगहा तोडब	–	वंधन तोडे खातिर छटपटाएव
४२. जमात के करामत होव	–	संगठन मे शक्ति होव ।
४३. जट्टा काटव	–	वश में करव ।
४४. झपसी लागव	–	निरन्तर वर्षा होव ।
४५. झिक्का तोरी करव	–	हाथा हाथी करव (झगडा करव)
४६. टर्री होब	–	जिद्द करव ।
४७. झींका देब	–	चक्की में पिसेला अनाज देव
४८. टाट बैठब	–	बेरादरी के पंचायत बैठायव ।
४९. टाटी लगायब	–	रोकब ।
५०. टुकुर टुकुर ताकब	–	मुँहतकी करव ।
५१. टुभुर टुभुर वोलव	–	वोलते रहव ।
५२. ठनगन करव	–	काम में अनठायव ।
५३. ठौर लागब	–	चौका लगायव ।
५४. ढीढा फुलब	–	गर्भ रहव ।
५५. तरिझार करव	–	पूरा समाप्त करव ।
५६. तिक्खिड विक्खिड होब	–	छिन्न भिन्न होव ।
५७. थेथर दलेली करब	–	हठपुर्वक बहस करव ।
५८. दाँत निपोरब	–	खुसामद करव ।
५९. दीदा काढब	–	आँख काढब ।
६०. दीदा के पानी ढरकब	–	शील हरायव ।
६१. नजर तुलायब	–	नजर टिकायव ।
६२. न्योती चरब	–	पहिलका चीज उपभोग करव ।
६३. निमक के सरियत करव	–	कृतज्ञ बनब ।
६४. नुखुस निकालव	–	ऐंब निकालब ।
६५. नुन तेल लगायब	–	बढा चढा के कहब ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

६६. नाडी छोडब	–	मृत्यु होब।
६७. नानी मरब	–	काम से भागब।
६८. पंढार करब	–	अर्घ्य चढायव।
६९. पेट डेंगायब	–	मुख सहब।
७०. फटफुट होब	–	बँटबारा हो।
७१. फीफीहा होव	–	परेशान होब, छटपट करब।
७२. फूल झरब	–	खुब प्रशन्न होब।
७३. फूल के बारा बनब	–	दंग परब।
७४. बंस में लेढा लगायब	–	बंस के बदनाम करब।
७५. बनर घुडकी देखायव	–	डेरायब
७६. बह भर देव	–	तृप्त कऽ देव।
७७. वाले बाल उठा लेब	–	एखुनगो उठा लेब।
७८. विक्ख होब	–	बढिया चीज से हानिकारक होब।
७९. विद्दत होब	–	अपमान होब।
८०. बुत्ता देव	–	ठकब, धोखा करब।
८१. बोकनारी के काम करब	–	नीच कर्म करब।
८२ बोहनी बट्टा होब	–	बिक्री सुरु होव।
८३. भाग्य चरचरायव	–	अकस्मात भाग्य खुलव।
८४. मटकी मारब	–	आँख से संकेत करब।
८५. मध झरब	–	नीमन बात करब।
८६. माथा पर पगडी बान्हब	–	मालिक वनब।
८७. मिठा माहुर होब	–	छद्मवेसी बनव।
८८. मुँह ताकव	–	आस करब।
८९. मुँह मे लेवा लगायव	–	भुखे रहब, चुप्पे रहब।
९०. मोती झरब	–	नीमन बात करब।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

९१. रँडघौंच करब	–	नीचता करब ।
९२. रट के सट जायब	–	बहुत खुसामद करब ।
९३. रस्सी छुअब	–	साँप काटब ।
९४. राडी बेटवारी करब	–	पति पुत्र के लगा के गारी देब ।
९५. रुसल कोहागल होब	–	क्षुब्ध होब ।
९६. रेका–तोकी करब	–	रे - तु करब ।
९७. लंगट छाव लगायब	–	नीचता देखायबख ।
९८. लंगट बौकारी करब	–	वदमासी देखायब ।
९९. लहालोट होब	–	मुग्ध होब ।
१००. लाग - फांस होब	–	असमाजिक प्रेम करब ।
१०१. लार पोआर होब	–	असक्त होब ।
१०२ लाल बनल रहब	–	श्रेष्ठ बनल रहब ।
१०३. लावा फरही होब	–	परेशान होब, छटपटायब ।
१०४. लावा धक्का न राखब	–	सम्वन्ध न राखव ।
१०५. लास फुस न रखब	–	सम्वन्ध न राखब ।
१०६. लुसफुसायल चलब	–	ललचायल रहब ।
१०७. लू लू, छू छू होब	-	अतृप्त होब ।
१०८. संझौता देखायब	–	सांझ के दीप लेसब ।
१०९. संस बरक्कत न मिलब	–	तरक्की न होब ।
११०. समांग मे घुन लागब	–	निकम्मा वनब
१११. सांझ विहान करब	–	बादा टारब ।
११२. हाड में हल्दी लागब	–	सगाई होब ।
११३. हाथ सकडिआयब	–	रुपैया पैसा के कमी होब ।
११४. हीक भरब	–	मन भरब ।
११५. हुक्का पानी बन्द करब	–	आवत जावत बन्द करब ।
११६. हेठार में पडब	–	निर्जन जगह में पडब ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कहउतिया

परम्परा से आयल वाक्य के स्तर में प्रयोग होवेओला सूत्रात्मक कथन के कहउतिया कहल जाइत हे। कहउतिया के सम्बन्ध कउनो घटना, कथा चाहे मानवीय अनुभव से जुटल रहला से एकर अर्थ सांकेतिक रुप में प्रकट होइत हे। भाषिक अभिव्यक्ति प्रभावकारी बनावे खातिर लोक अनेक तरीका अपनबइत हे। कहउतिया अइसने सारपूर्ण, सूत्रात्मक आउ अभिव्यंजनात्मक रचना हे। एकरा लोकोक्ति भी कहल जाइत हे।

वाक्य स्तर मे प्रयोग होवेवला कहउतिया कउनो पूर्ण वाक्य आउ कउनो अपूर्ण वाक्य के रुप में रहइत हे।

कुछ मगही कहउतिया आउ ओकर अर्थ

१. अंधरा के आगे रोवे, अप्पन दीदा खोवे।

नासमझ के सामने अपन दुख कहे से कउनो लाभ न हे।

२. अहार ला अदमी पहाड़ चढे हे।

जीविका ला आदमी कठिनाई सहइत हे।

३. असकताहा गिरलन कुइयाँ में, कहलन हिएँ भल हे।

असकताहा विपरीत परिस्थिति के सुधारे के भी चेष्ठा न करइत हे।

४. अदरा गेल तीन गेलन, सन, साठी कपास।

अदरा में बरखा न भेल तो तीन गो फसल (सन, साठीधान, कपास) नष्ट हो जाइत हे।

५. आप रुप भोजन, पराये रुप सिंगार।

भोजन अपना रुचि से आउ सिंगार दुसरा के रुचि से करेके चाही।

६. आगे चलऽ, तो राह बतावऽ।

आगे चलेवाला के राह भी देखावे परइत हे।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

७. आभ्के बनिया, क़लहे सेठ।

बिना परिश्रम सफलता पावे के इच्छा व्यर्थ हे।

८. उ बड़ी गरल गरइ हे।

ऊ भितरका धनिक हे।

९. उँच वडेरी, खोखर वाँस।

भीतर खाली आऊ बाहिरी आडम्वर हे।

१०. एक बनिया से कहुँ वजार बसे हे।

एक व्यक्ति से संगठन न होइत हे।

११. एगो हेरें समुचे गाँव खोखी।

सामान कम आउ चाहेओला वेसी हे।

१२. कदुवा पर सितुआ चोखा।

दुर्वल पर सवके बल चलइत हे।

१३. कान आँख में काजर।

कुरुप के सिंगार भी शोभा न देइत हे।

१४. कैल के रुपैया गेल है, साँवर के रुपैया धैल है।

सफेद पशु के रुपैया डुव सकत हे, पर सांवर (साउर) के न डुव सकइत हे

१५. कौडी कौडी साव बटोरे, राम बटोरे कुप्पा।

वनिया एक एक कर के जम्मा करइत हे, भाग्य से एक्के बेर ढेर लग सकइत हे।

१६. खाये ला कुछ न अउ नेहाय के तड़के।

आगे के बात के ध्यान न रख के कदम उठायव।

१७. खेत खाय गदहा मार खाय जोलहा।

अपराध कोइ करइत हे, सजाय कोइ दुसर पबइत हे।

१८. गोदी में लइका, नगर में ढिढोरा।

सामने के चीज पर नजर न पडला से हैरानी।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

१९. घर के मुरगी दाल बरोबर ।
अपना चीज के महत्व कम होइत हे ।

२०. घर घोडा न, खास मोल ।
अकारण मोल तोल करव ।

२१. चले न जाने, अँगनमें टेढ
अपन गलती पर ध्यान न देके दुसरे के गलती बनायव ।

२२. चट मरबा, पट विआह ।
झटपट काम करेके ।

२३. चोरी आ उपर सीना जोरी
गल्ती कक के भी रोव जमाबे के ।

२४. छुछुन्दर के सिर में चमेली के तेल ।
कुपात्र के हाथ में नीमन चीज सोभा न दइत हे ।

२५. जादे नींबु मल्ले से तीता हो जाहे ।
सीमा नाघके काम न करके चाही ।

२६. जादे जोगी, मठ उजार ।
जरुरत से वेसी अदमी काम बिगाडइत हे ।

२७. जेने सुरुज उगे हे, तेन्ही आदमी गोड लगे हे ।
बडका के सब श्रद्धा करइत हे ।

२८. जोडे राइ रत्ती, तव होवे सम्पत्ति ।
तिल तिल जम्मा कयला से ही सम्पत्ति जुटैत हे ।

२९. तीन कोस पर पानी बदले, सात कोस पर बानी ।
पानी आऊ बोली के रुप एक जगह से दुसर जगह बदलइत रहइत हे

३०. थकल पैराकू फेन चाहे हे ।
हारल अदमी छोटा चीज के सहारा चाहइत हे ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

३१. दरवे में सरवे बसल ।
धन से सबकुछ हो सकइत हे ।

३२. दुधारु गाय के दू लातो भल ।
सहयोगी के वचन भी लोग सहजें सहइत हे ।

३३. धान दुद्धा, रव्वी वुड्ढा ।
धान के फसल कुछ कच्चे काटे के चाही आउ रव्वी नीमन से पाकेपर

३४. नाधा तो आधा ।
काम सुरु भेल तो आधा हो गेल बुझेके चाही ।

३५. नौ के लकडी, नव्वे खरच ।
महत्वहीन चीज खातिर बहुत खर्च ।

३६. पेट करे कुहुर कुहुर जुडा करे महमह ।
भीतर खाली बाहर देखावा ।

३७. वनमा में बाघ छिपे हे ।
जइसन चीज वइसन आवरण चाहइत हे ।

३८. बिना रोले लडको के न दुध मिले ।
चुप रहेओला के कुछ न मिलइत हे ।

३९. बिना न्योता बीज्जे ।
बिना कहे कउनो काम में लग जाय के ।

४०. बैठल से बेगारी भल ।
चुप बैठेसे कुछ करत रहेके चाही ।

४१. मुर लौटे बनिया नाचे ।
मुलधन हाथ आ गेला पर बनिया खुशी होइत हे ।

४२. रटन्त विद्या लपटन्त जोर ।
विद्या आउ जोर अभ्यास से वढइत हे ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

४३. रहे बाँस न बाजे बँसुरी ।
झंझट के जड़ी ही समाप्त ।

४४. रट के खाये बैलवा, बैठ के खाये तुरंगवा ।
सज्जन कमा के खाइत हे, चलाक बैठले खाइत हे ।

४५. सदा देवाली सन्त घर, जो गुर गेहुम होय ।
समृद्धि रहे से सदा उत्सब रहइत हे ।

४६. सहर सिखावे कोतवाली ।
अनुभव से लोग ज्ञान सिखइत हे ।

४७. साठा तब पाठा ।
पुरुष साठ बरस में पुष्ट होइत हे ।

४८. सुआ न सुतारी ठेंगा के व्यापारी ।
विना माल के व्यापारी के ढोंग ।

४९. हाथ अछत मोछ टेढ ।
असकताहा के काम बिगडइत हे ।

५०. होंती के धोती न तो फेंटा में लंगोटी ।
समृद्धि में ठाट बाट, न तो गरीवी में गुजारा ।

***

दर्ता नं 22036
काठमाण्डौ, नेपाल

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

डा. चन्देश्वर शाह

जन्म : २८ जनवरी १९५२ ई. (२००८ माघ १४ गते)

शिक्षा : विद्यावारिधि (Ph.D.), मैथिली, त्रिभुवन विश्वविद्यालय कीर्तिपुर, काठमाडौं ।

प्रकाशित रचना : (क) मल्लकालिन मैथिली नाटक

(ख) कारीख महाराज

(ग) तेली जाति का अतीत और वर्तमान

(घ) मगही भाषा ब्याकरण

स्थायी पता : बटेश्वर गा.वि.स. वडा नं.- ६

जिल्ला धनुषा, नेपाल ।

वर्तमान पता : जनकपुर न.पा.- ८, दशरथनगर

जिल्ला धनुषा, नेपाल ।

फोन : ०४१-५२३१६८

मो. : ९८४१-४८६३५२

प्रकाशक :

मगही भाषा-साहित्य प्रतिष्ठान

कोटेश्वर, काठमाडौं, नेपाल

9 789937 209649